

प्रकाशक—

मानिक मुन्शी

बकाबास

धार (राजपुताना)

स्वामी-मोक्ष में पुस्तक मित्रों का पता—

श्री० कोटेश्वरजी शर्मा,

मु० मुन्शीबाग

जिला बीकानेर

मुद्रक

११ चामे नन्द-सामिन् प्रेम भद्रमेर १ १-६-१

१ चामे (मृमिशर्मा) दयमन्द ठु प्रेम भद्रमेर ।

प्राक्कथन

॥ १ ॥

हमारे कई एक जैन नामधारी भाइयों ने अपने उल्टे सिद्धान्तों द्वारा दया-दानादि जैन-धर्म के मूल-तत्वों का जिस निर्दयतापूर्वक विरोध किया है, उसे देखते हुए कहना पड़ता है, कि भगवान्-महावीर के पवित्र सिद्धान्तों को इन निर्दय-सिद्धान्तों से रक्षा करना प्रत्येक धर्म-प्राण जैनधर्मावलम्बी का कर्तव्य होगया है । मारवाड़-मेवाड़ की लगभग ६० हजार जनता आज तर्क-वितर्क और शास्त्रीय-ज्ञान से शून्य होकर, इस प्रकार के शास्त्रविरुद्ध-सिद्धान्तों

पूम्पका से मारबाड़ में न तो जन्म ही
 मरण किया है, न उनकी शिशा-बीका ही मार
 बाड़ में हुई है। जन्म से लगाकर शीषा तथा
 इसके परबात का भीमानजी का अधिकार
 समय मारबाड़ से बाहर ही पीता है। यही कारण
 है कि भीगी की भाषा मारबाड़ी नहीं है।
 फिर भी अपनी अलौकिक प्रतिभा के कारण,
 आपने बोल ही दिनों के भीतर मारबाड़ी भाषा
 में बहुत कुछ गति प्राप्त करली है। यदि, इस
 दलों का इस मारबाड़ी-भाषा में न बनाया जाता
 और लड़ी पाली में बनाया जाता तो जिस
 लाभ का दृष्टि में रखकर इनका निर्माण किया
 गया है उस लाभ से यदि सर्वथा नन्दी, या
 बहुत बरा में अन्तः का दीपित रहमा पड़ता।
 क्योंकि प्रत्यक्ष-प्राणी अपनी मातृभाषा में—
 फिर चाहे वह दूरी कनी या अशुद्ध हो क्या न

हो— जितना शीघ्र और अच्छी तरह समझ सकता है, उतना शीघ्र और अच्छी तरह दूसरी भाषा में नहीं समझ सकता । इसलिये पूज्यश्री ने इन ढालों को, उसी भाषा में, उसी तर्ज पर और वैसे ही उदाहरण देकर रचना उचित समझा, जैसी भाषा, तर्ज और जैसे उदाहरणादि उन ढालों में हैं, जिनका निर्माण अनुकम्पा और दान को पाप बताने के लिये हुआ है । इन ढालों में, पूज्यश्री ने भाषा और कविता पर उतना ध्यान नहीं दिया है, जितना ध्यान ऐसी जनता के हृदय-पट पर अङ्कित जीवरक्षा और दान के विरुद्ध बने हुए दुर्भाव मिटाने पर दिया है ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन द्वारा पूज्यश्री की कवित्व-शक्ति का परिचय देना हमारा अभि-
प्राय नहीं है, न पूज्यश्री ने इस उद्देश से इन

हाथों की रचना ही की है। अथिषु इस प्रश्न की रचना और प्रकाशन से यह अभीष्ट है, कि हमारे जिन मोले-माले भाइयों को, अज्ञान के भयङ्कर-धैरे में डाल रखा गया है, उन्हें ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हो और वे जैन-धर्म के गुण को समझकर, उस डालरूपी जाल के बन्धन से निकल सकें, जिसमें कि अबतक कैसे हुए हैं। अतः पाठक-महोदय इस पुस्तक को कविता की दृष्टि से न देखकर भाव की दृष्टि से देखने की कृपा करें और अनुकम्पा-राम को छाने के लिये हाथों द्वारा जा प्रयत्न किया गया था, उसके समुचित-लयन पर शान्ति और गम्भीरतापूर्वक विचार करके इस पुस्तक और पृथ्वी के परिणाम से लाभ उठावें।

पृथ्वी में अथिषु शान्ति-दृष्टि में ही इस हाथों की रचना की है अथिषु संपादक, पृथ्वी

संशोधक या अन्य किसी कार्यकर्ता की असा-
वधानी से यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो, तो
इसके लिये कार्यकर्ता जिम्मेदार हैं। यदि,
कोई सज्जन, इस पुस्तक में कोई ऐसा दोष
देखे, तो सूचित करने की कृपा करें, ताकि
अगले संस्करण में वह शुद्ध कर दिया जा सके।

एक बात और। कहीं-कहीं इन ढालों में
बड़े कड़े हेतु देने पड़े हैं। किन्तु विवशता थी।
वैसा किये बिना, काम चल ही नहीं सकता
था। क्योंकि जिन ढालों के उत्तर में इन ढालों
की रचना की गई है, उनमें वही हेतु, प्रायः
उसी स्थान पर उसी ढङ्ग से दिये गये हैं।
अतः यह प्रयत्न किया गया है, कि उनका कुतर्क
उन्हीं के भूते-सिद्धान्तों के लिये घातक सिद्ध हो।
अन्त में, हम यह कह देना भी उचित
मान्यमाने हैं, कि पूज्यश्री के अथवा हमारे हृदय

हासों की रचना ही की है। अपितु इस प्रत्यक्ष की रचना और प्रकारान स याद अभीष्ट है कि हमारे जिन मोझे-भाले भाइयों को, अज्ञान के भयानक धेंपेरे में डाल रखा गया है, उन्हें ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हो और वे जैन-धर्म के रहस्यों को समझकर, स्व हासरूपी ज्ञान के सम्पर्क में मिल सकें जिसमें कि अचटक कैसे हुए हैं। अतः पाठक-महोदय इस पुस्तक को कवित्व की दृष्टि से न देखकर मात्र की दृष्टि से देखने की कृपा करें और अनुकम्पा-दान को उठाने में लिये हासों द्वारा जो प्रयत्न किया गया था, उसके समुचित-समय पर शक्ति और सम्मी-रतापूर्वक विचार करके, इस पुस्तक और पूरक-की के परिणाम से लाभ उठावें।

पूज्यभी ने यद्यपि शास्त्रीय-दृष्टि से ही इन हासों की रचना की है, तथापि, संपादक, मूक-

अंग है, या पापपूर्ण कार्य और जैन-शास्त्र
 उसका समर्थन करते हैं, या विरोध । साथ ही,
 यह भी देखें, कि उन्हें कैसे गहरे-गहरे में डाल
 रखा गया है, जहाँ से उनका बिना तर्क-वितर्क
 किये कदापि छुटकारा नहीं है । हमारा विश्वास
 है, कि बुद्धिमान लोग तुलनात्मक-दृष्टि से ही
 इस ग्रन्थ का अध्ययन करेंगे । किमधिकम् ।

नया-वास,

व्यावर

श्रावण शुक्ला १५

वीर सं० २४५६

विक्रमी सं० १९८७

प्राणिमात्र का हितेच्छु

मानमल सुराणा

में, एस माइसों पर, उनके इस ज्ञान के कारण अ यन्त्र क्या है । इस प्रत्य में, इतनों की रचना द्वारा जो प्रयत्न किया गया है, वह केवल अनुकम्पा-पातक, धर्म-विरोधी विचारों के साथ हमारा अतिशय विरुद्ध है । परन्तु हम विचारों को रखनेवाली आत्माओं के साथ हमारा तनिक भी विरोध नहीं है, प्रत्युत उनकी आत्मा के साथ पूर्ण अनुमति और मित्रता है । जैसी आन्तरिक-दया की प्रेरणा से रागी को कटु-भौषधि देकर उसका रोग शांत करने के प्रयत्न के समान यह प्रत्य मिर्मण किया गया है । इसलिये हमारी सब बन्तुओं से सविनय प्रार्थना है कि द्वेष-दृष्टि को अलग रखकर, मैत्री भावना से इसे फेंकें और विश्रिष्टा देखें करें । उन्हें, मित्र-दृष्टि से यह विचारना चाहिए, कि जीवरक्षा, जैन-धर्म ही एक

विषय-सूची



पहली ढाल के दोहे

नाम विषय दोहे से दोहे तक

अनुकम्पा का स्वरूप और उसके
किये गये भेदों का उत्तर— १-१४

ढाल पहली

१—अधिकार मेघकुँवर का—	पेज	३
२—श्री नेमनाथजी का करुणा अधिकार—	"	६
३—धर्मरुचिजी का करुणा अधिकार—	"	१३
४—श्री महावीर स्वामी की गोशालक	"	१९

विषय-सूची



पहली ढाल के दोहे

नाम विषय	दोहे से दोहे तक
अनुकम्पा का स्वरूप और उसके किये गये भेदों का उत्तर—	१-१४

ढाल पहली

१—अधिकार मेघकुँवर का—	पेज	३
२—श्री नेमनाथजी का करुणा अधिकार—	„	६
३—वर्मरुचिजी का करुणा अधिकार—	„	१३
४—श्री महावीर स्वामी की गोशालक पर अनुकम्पा का अधिकार—	„	१७

	३३
५—जिनकरपि का अधिष्ठा—	३४
६—द्विरजगमेयी का अधिष्ठा—	३५
७—अधिष्ठा इति के सी सुवि का—	३६
८—चातमी की गर्भ विषयक अनुकम्पा का अधिष्ठा—	३
९—अधिष्ठा कुलमी की सुद विषयक अनुकम्पा—	३७
१०—अधिष्ठा रूप में वदे सुद बीबी के सम्बन्ध में—	३९
११—अभयकुमार की अनुकम्पा का अधिष्ठा—	४२
१२—अधिष्ठा वल्लु बीबी के लोहमे का—	४३
१३—अधिष्ठा ल्वाभि मिश्रान्न विषयक—	४६
१४—अधिष्ठा रात्रि की कर्मि से रात्रि की मान्य रक्षा का—	४९

५—अधिकार मार्ग मूले हुए को साधु पेज
 किस कारण रास्ता नहीं बतावे— ६४

दूसरी ढाल के दोहे

दोहे से दोहे तक

साधु, अनुकम्पा के लिए अपना
 कल्प नहीं तोड़ते जिस प्रकार वन्दन के
 ए नहीं तोड़ते हैं— १-८

सावज कारणों के सेवन से, वन्दन
 ही तरह अनुकम्पा भी सावज नहीं है,
 साधु अपने कल्प के अनुसार ही अनु- १-२
 कम्पा करते हैं—

ढाल दूसरी

१—अधिकार जीवाँरी दया खातर
 दयावान मुनि ने पाँधने-छोड़ने का—
 अधिकार लाय यचाने का—

- ३ — अधिकार अपराधी को विरपराधी
करने का — ४३
- ४ — अधिकार जीवनाभरण बाँटने का — ४४
- ५ — अधिकार धर्म तापार्ति बंधन
आसरी — ४५
- ६ — अधिकार नीति का पार्श्व बताने का — ५

तीसरी शक्ति के दोह

दोह से दोहे तक

धर्म के लिए जीवनाभरण बाँटनेवाले

गन्धर्व शरमा हैं —

१—५

चाल तीसरी

- १ — अधिकार मेचर
पर दबा करने का -
- २ अधिकार करजक
करना का —

३—अधिकार माता ब्रह्माने से चुलणी
पिया के घृतादि का भंग कहने
वालों को उत्तर—

१०६

शूरादेव का दाखला

११२

४—अधिकार 'नमीराज ऋषि ने अनु-
कम्पा नहीं की', ऐसा कहनेवालों
के लिए उत्तर—

११६

५—अधिकार 'नेमिनाथजी ने गजमुकु-
माल की अनुकम्पा नहीं की',
ऐसा कहनेवालों को उत्तर—

१२१

६—अधिकार वीर भगवान के उपसर्ग
दूर करने में पाप कहते हैं,
उसका उत्तर—

१२५

७—अधिकार 'द्वीप मनुष्यों की हिंसा
देवता क्यों नहीं मेटे ?' इसका

१२९

८—अबिघ्नर केविह-वेदा का समाप्त
मिथ्याने में पाप करते हैं इसका
उत्तर—

११८

९—अबिघ्नर समुद्रपान्थी ने और पर
अनुकम्पा नहीं करी करते हैं,
उसके विषय में —

११९

बोधी दास के दाँदे

विचित्र विंसा के समाप्त विचित्र दाँदा
के पाप बदमेवाकों के विषय में—

१-११

बोधी दास

गाथा से गाथा तक

फिर और कोचद्वर्ष लाल्यक की कुपुन्ति
कर तथा पाप करने में पाप करते हैं इसका
उत्तर—

१-१६

गाथा से गाथा तक

सहायता, सम्मान देकर मिथ्यात्वी
को समझिती बनाने में पाप कहते हैं,
इसका उत्तर—

२७-३३

पांचवीं—ढाल

चोर, हिंसक, लम्पट को केवल उनका
पाप छुड़ाने के लिये उपदेश देते हैं, ऐसा
कहनेवालों को उत्तर—

१-११

मरते हुए बकरे का कर्ज चुकता है,
ऐसा कहनेवालों को उत्तर—

१२-२२

बकरा और धन एक समान होने से
उनके लिए उपदेश नहीं देते हैं, ऐसा
कहनेवालों को उत्तर—

२३-२९

मरते जीव के लिये उपदेश देने से
उनकी निर्जंरा होती बन्द हो जाती है,
ऐसा कहनेवालों को उत्तर—

३०-४७

परछी-पापी को उपदेश देकर पाप
 सुझाने से बाली-बाली कुँए में गिरपड़ी
 इसी तरह हिंसक को उपदेश देने से बकरे
 बच गये, बकरा बचा और ली मरी से
 शोर्नी समान है बरि एक क्य बर्म बड़ी
 ती दूसरे क्य बाप भी मानो ऐसा कहने
 बाली को उत्तर—

४८-१

बीची के किये उपदेश नहीं होते
 एक हिंसक को समझाकर बने बीची के
 क्लेश नहीं मिटने ऐसा कहनेबाली को
 उत्तर—

४९-१४

का-काया के घर लालि नहीं होते
 ऐसा कहनेबाली को उत्तर गव कित
 आनक के दालने के -

५५-११६

छठी ढाल के दोहे—

दोहे से दोहे तक

१—जीव वचाना और सत्य बोलने का
स्वरूप—

१-६

२—सत्य सावद्य-निरवद्य होता है, परतु
अनुकम्पा निरवद्य ही होती है—

७-१३

ढाल—छठी

गाथा से गाथा तक

१—उकाया की रक्षा में पाप कहते हैं,

१-११

उसका उत्तर—

२—साधु की उपधि से मरते हुए जीव
वचाने का विचार—

१२-२३

३—श्रावक के पेट पर हाथ फेरने का कहते
हैं, उसका उत्तर—

२४-३२

४—बिल्ली से चूहे को नहीं छुड़ाना कहते
हैं, उसका उत्तर—

३३-४१

५—श्रावक को मरते से वचाने का निषेध
करते हैं, उसका उत्तर—

४२-५१

- ६—कद, मन्त्रावादि जीव पशुओं से मरते
छातु बचाने क्यों न जाय ? इसका
उत्तर— ११-११
- ७—गौसाया बचाने में मन्त्रावाचको बूझे,
तथा छातु को कर्मिणमात्र छोड़ने
में पाप बताते हैं असुख उत्तर— १२-११
- ८—गौसाया को बचाने से मिथ्यात्व
बढ़ना कहते हैं इसका उत्तर— १२-१२
- ९—दो छातु को मन्त्रावाच से नहीं बचाने
असुखे विकल्प में— १२-१३

छातुओं का ल के बोधे—

- १ मन्त्र से निर्बल को बचाने में पाप
कहते हैं इसका उत्तर— १३-११
- २—पुनः और धर्म निज बोधे हैं या नहीं
इसका १३-१२

ढाल—सातवीं

गाथा से गाथा तक

- १—सात दृष्टान्तों का खण्डन—गाजर
मूला आदि खिलाकर जीव बचाने
का कहते हैं, उसका उत्तर तथा
भूमिका, पानी का, हुक़्के का, मांस
खाने का, मुर्दा खिलाने का, मनुष्य
मारकर मनुष्य बचाने का दृष्टान्त
देकर दया उठाते हैं, उसका उत्तर— १-५३
- २—व्यभिचारादि दुष्कृत्यों-द्वारा जीव
छुड़ाना कहते हैं, उसका उत्तर— ५४-६५
- ३—कसार्ई को मारकर जीव बचाना
कहते हैं, उसका उत्तर— ६६-७२
- ४—श्रेणिक राजा ने पढ़हा पिटाकर
“अमारी” धर्म की घोषणा कराई,
इसमें पाप कहते हैं, उसका
----- ७३-११९

गाथा से गाथा तक

५—दो बेरघामों का दहान्त बेतै हैं

उसका उत्तर

१२८—१२९

६—दो बेरघामों के दूसरे दहान्त का

कृष्णान्त—

१३१—१३६

७—जीव मारे नहीं भरता है इसलिये

उसकी रक्षा में चर्म नहीं इसका

उत्तर तथा जसपावर की हिंसा

सुरीयिणी कहत हैं इसका उत्तर १३९—१४४

८—पमे से ममता उतारकर जीव बचाने

बाने को बाप कहते हैं उसका उत्तर १४५—१४९



भाटणी हाल के रोदे—

राटे से रोह तक

मरुवा भीर परुवा शानी साज

सुम्मत हैं—

ढाल आठवीं

गाथा से गाथा तक

लाय में बलते जीव को बचाने में पाप
कहते हैं, उसका उत्तर — १-१०

औपधि देने में पाप कहते हैं, उस-
का उत्तर — ११-२०

“उपदेश देकर ‘हिंसा’ छुड़ाते हैं”
ऐसा कहने वालों को उत्तर — २१-३७

“अकृत्य करते समय ‘पाप छुड़ाने’
को उपदेश देते हैं”, ऐसा कहने वालों
को उत्तर — ३८-४८

“श्रावक के पैर से जङ्गल में जीवों
की घात क्यों नहीं छुड़ाते”, ऐसा कहने-
वालों को उत्तर — ४९-६४

“गृहस्थ की उपधी से जीव मरते हैं,
उन्हें छुड़ाने क्यों नहीं जाते हो”, ऐसा
प्रश्न करने वालों को उत्तर — ६५-७३

‘समस्तसंसार में आते जाते मनुष्यों
से जीवों की बात होती थी और भ्रम
के बन्दे ने बँडके के रूप में आते हुए
बन्धन मजिद्वार की जीव रास्ता । इनकी
बन्धने महावीर स्वामी के साधु क्यों नहीं
देते ?’ ऐसा कहने वालों को उत्तर—

७४-६९

साधु कायक की एक मनुष्यता है
ऐसा करनेवालों को उत्तर—

७५-९१

कर्तमान्धक में मरते जीव को
कहाजा वाप है ऐसा करनेवालों को उत्तर

१७-१ ९

काय में बन्धने हुए जीव कर्मों की
मिर्जरा करते हैं ऐसा करनेवालों को उत्तर

१ ३-१ ८

अन्धकारमय गुण में नहीं है ऐसा करने-
वालों को उत्तर—

१ ९-१२१

काय तुलाने का अन्धकारमय यदि
गुण में है तो साधु इसलिये क्यों नहीं
आते ? ऐसा करने वालों को उत्तर—

१२-१३२

गाथा से गाथा तक

आग बुझाना और कसाई को मारना

एक सरीखा कहते हैं, उनको उत्तर— १३३-१४३

ढाल नवमी

दया के साठ नाम—

१-२५

त्रिविधि से जीव रक्षा करने में पाप
कहते हैं, उसका उत्तर—

२६-३५

रक्षा करने में जीव मरते हैं, अतः
रक्षा पाप है, ऐसा कहनेवालों को उत्तर

३६-५५

“साधु को जीव नहीं बचाने तथा
रक्षा को भली नहीं समझनी” ऐसा कहने-
वालों को उत्तर—

५६-६१

जीव का जीना नहीं चाहते, सिर्फ
घातक का पाप टालना चाहते हैं, ऐसा
कहनेवालों को उत्तर—

६२-६५

गाथा से गाथा तक

‘जिबिधे-जिबिधे जीव रक्षा न करनी’

का उत्तर—

७७-१५

माजी भूत जीव सुख की रक्षा में
पुष्पान्त-पाप कहते हैं उसका उत्तर—

७९-४१

धर्म के कार्य में आरम्भ करने से
समझित जाती है ऐसा कहनेवालों को
उत्तर—

८०-११

साधमी बन्सज्जा का पुष्पान्त-पाप
कहनेवालों को उत्तर —

९१-११

जीवों का दुष्प्र मिश्रणे में पुष्पान्त
पाप कहत है उसका उत्तर—

९४-१ ५

धर्मकाय में हिंसा करने से पाप का
बाह्य नष्ट होता है ऐसा कहनेवालों का
सराव के उदाहरण गद्यित उत्तर—

१ ९-१ ९

दत्तन को धर्म में भीर हिंसा को
बात से भ्रष्टा-भ्रष्टा मानते हैं” उत्तर—

तुलसी—

११०-११०

गाथा से गाथा तक

"यदि आरम्भ में उपकार होता है,

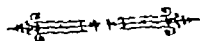
तो झूठ चोरी से भी होना चाहिए"

ऐसा कहने वालों को उत्तर—

११८—१२४

तथा का स्वरूप—

१२५—१२९ -



अनुकम्पा विचार

श्रीमज्जवाहिराचार्य
विरचितम्

ॐ नमः

अनुकम्पा-विचार



दोहा

करुणा वरुणालय प्रभो, मङ्गलमूल अनन्त ।
जय-जय जिनवर विबुधवर, सुखमय सुषमावन्त ॥ १ ॥
अनन्त जिन हुआ केवली, मनपर्यव मतिमन्त ।
अवधिघर मुनि निर्मला, दशपूर्व लागि सन्त ॥ २ ॥
आगम बलिया ये सह, भाषे आगम सार ।
वचन न श्रद्धे तेहना, ते रूलसे संसार ॥ ३ ॥
अनुकम्पा आछी कही, जिन-आगम रे माँय ।
अज्ञानी सावज कहे, खोटा चोज लगाय ॥ ४ ॥

अनुकम्पा-विचार

ढालों नहिं, जालों दुई, अनुकम्पा ही पल ।
 पंचमकाल प्रभाव भी हा ! हा ! त्रिभुवन ताल ॥ ५ ॥
 अनुकम्पा उगायदा, मोड़ी माया जल ।
 मूरज मद्धता क्यों पैस्या कल कमन्ता कल ॥ ६ ॥
 दुःखमि भार पंचम कुगुर बलायो पन्ध ।
 अनुकम्पा ल्वाटी कहे नाम पराये मन्त ॥ ७ ॥
 भाक-बोर मा दूध सम अनुकम्पा बलसाध ।
 मन सौ साबज नाम दे मोला न भगमाव ॥ ८ ॥
 सपाप साबज नाम है, हिंसादिक भी होय ।
 अनुकम्पा हिंसा नहीं साबज किंस विष होय ॥ ९ ॥
 अनुकम्पा रक्षा कही क्या कही मगदन्त ।
 पाप जते कोई तेहमे भिष्या जाणो लन्त ॥ १० ॥
 अमृत एक सो जाणम्यो अनुकम्पा पिण एक ।
 मेद प्रभू मदि भापियो सूतर मोड़ी बेख ॥ ११ ॥
 तो पिण कुगुर कबाम्मे, बदिषा बिस्वा बीस ।
 मन्त हूँ करे परपणा कही म्योरी रीस ॥ १२ ॥

निरवद ने सावद वलि, अनुकम्पा रा भेद ।
 अणहूँता कुगुरु करे, ते सुण उपजे खेद ॥ १३ ॥
 भरमजाल ताडन तणूँ, रचूँ प्रबन्ध रसाल ।
 धारो भवजीवौ । तुम्हें, वरते मङ्गलमाल ॥ १४ ॥

ढाल-पहली



१—अधिकार मेघकुँवर का

(तर्ज—धिग धिग छे उणी नागश्री ने)

घकुँवर हाथी रा भव में,

करुणा करी श्री जिनजी बतार्ह ।

पाणी, भूत, जीव, सत्व री,

अनुकम्पा की, समकित पाई ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ अनु० ॥ १

अनुकम्पा-विचार

मित्र वह री परवा नहीं रखी,

पर-अनुकम्पा रो हुबो रमियो ।

बीस पहर पाग डँचो रख्यो,

पर उपकार सूँ मन नहीं लसियो ॥ अनु० ॥ २ ॥

पकवसँसार किमो तिण मिरियो, —

लेखिक पर अपनो गुण पाव ।

आठ रमणी राज दीछा सीधी,

छाता अम्पयन गरुधर गार्ह ॥ अनु० ॥ ३ ॥

(चन्दे) 'बलदा जीव दावान्तल बेली

सुरख सूँ पकड़ के माय बचावा ।'

मूकमत्स्यों री या छाठी कल्पना,

बलदा जीव सूतर न बचावा ॥ अनु० ॥ ४ ॥

गरुडल सीधो बी पूरण भरियो

राम बैठन ने खान न मिलियो ।

जीव लाव किण जागा मेले

छाटो—पक्ष मिथ्यावी मसियो ॥ अनु० ॥ ५ ॥

सलो न मारथो अनुकम्पा बतावे,

(तो) एक जोजन मण्डल रे माँई ।

व घणा जामे आइने वसिया,

(त्यो) सगला ने हाथी तो मारथा नही ॥ अनु० ॥ ६ ॥

जो) सुसलो न माखा रो धर्म बतावो,

(तो) दूजा (ने) न माखो रो क्यों नहिं केवो ।

जो) सुसला रा प्राण वचाया धर्म है,

तो दूजा जीव वचाया रो (पिण) केवो ॥ अनु० ॥ ७ ॥

जोजन मण्डले जीव जो वचिया,

मन्दमती ताने पाप * बतावे ।

ॐ जैसा कि वे कहते हैं —

माँडलो एक जोजन नो कीधो,

घणा जीव वचिया तहाँ आई ।

तिण वचिया रो धर्म न चाल्यो,

समझि आया यिन समझ न कोई ।

आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥

(अनुकम्पा ढाल १ गाथा २)

अनुकम्पा-विचार

त्योंरे लेख, सुसलो बैधिया रो,

‘धर्म’ कहो जी किया बिध बने ॥ अनु० ॥८॥

कलदी मली सुँ ऊँधी तयो,

जीब बचाया में पाप बचाये ।

हाथी ला जीब बचाइ ने तिरियो,

कलम बन राहा नहिं भाये ॥ अनु० ॥९॥

२—नेमनाथजी का करुणा अभिकार

तीन ज्ञान धर नेम प्रभुजी,

आब न करुणा निरम्य जामे ।

बाक-बाकचारी बाबिसमों

होसी गिमबर जिनजी बलाये ॥ अनु० ॥१॥

जीब दया सब जग में बलाया,

मादगी बिखा मेदय - बजसे ।

पंचेन्द्र प्राणी रा प्राण बचाया

प्रत्यक्ष ब्याय प्रभुजी रो राम ॥ अनु० ॥१॥

आदि उपकार रे अर्थे,

आव करण री बात ज मानी ।

तान अर्थे पाणी बहु देख्यो,

जामें भी जीव जाणे बहु झानी ॥ अनु० ॥३॥

रण पशु-पक्षी री हिंसा मोटी,

रक्षा पिण ज्यारी मोटी जाणी ।

यो ही भेद सब जग ने बतावा,

स्नान कियो सूतर री या वाणी ॥ अनु० ॥४॥

मन्दमती कहे जीव सरीखा,

एकेन्द्री पचेन्द्री भेद न दाखे ।

श्रेढी, मोटी हिंसा रा भेद ने,

केई अज्ञानी 'सरीखा' भाखे ॥ अनु० ॥५॥

जो या श्रद्धा नेम री होती,

तो पाणी ने देखि स्नान न करता ।

वाडा रा जीवों थी असंख्यगुणा ये,

तत्क्षण देखि ने पीछा फिरता ॥ अनु० ॥६॥

अनुकम्पा-विषय

पल्लुपंखी री ब्या (रक्षा) रे मोहो,

लाम बख्ता प्रसु परगट ब्रिन्तो ।

अल्प हिंसा पाणी री जाय,

सिख धी पचेन्द्रिय में मन(ध्यान)रीमो। अनु०।

झाटी-मोटी हिंसा-रक्षा रा,

झामी तो मेह परगट साथे ।

मन्दमणी रक्षा मर्हि बाब

तेही त तो ऊँधी साथे ॥ अनु० ॥

स्नान करी परखीजण बास्पा

तोरख पर वस्त्रा बहु प्राणी ।

बाबा पिंजर में रुकिया दुस्निया

सूत (सारथि) स पूजे कल्या बाणी ॥ अनु० ॥

सुन्द अर्धी स जीव बिचार

क्याकर योन दुस्निया कीपा ।

तब ता नागधि इणबिध बाजे

लामी बचन सुनो हम सीपा ॥ अनु० ॥ १०।

सहु भद्रक प्राणी प्रभुजी,

व्याह कारण तुमरो मन आणी ।

आमिप (मांस) भक्षी रे भोजन सारू,

बाँध्या छे घात दिल ठाणी ॥ अनु० ॥११॥

सारथि वचने रु ज्ञान से जाणी,

दीनदयालु दया दिल आणी ।

जौ तणो हित बंछथो स्वामी,

आतम सम जाण्या ते प्राणी ॥ अनु० ॥१२॥

व्याह रे काज मरें बहु प्राणी,

हिंसा से ढरिया निर्मल ज्ञानी ।

सारथि प्रभुजी री मनस्या जाणी,

जीवौ ने छोड दिया अभयदानी ॥ अनु० ॥१३॥

जीव छुट्या सँ नेमजो हरप्या,

बक्षीसी दीनी सूत्र में गाई ।

कुण्डल युग्म अरू कण्ठोरो,

सर्व आभूषण दीया वधाई ॥ अनु० ॥१४॥

मनुस्मृत्यनुसारं

पीछे धरपीवान जा सीधो,

दान-बया दोनूँ कोसग्राया ।

सजम सहस्रान्न में सीधो,

केवल ले प्रभु मोक्ष सिधाय ॥ अनु० ॥ १८

(अर्थ) 'जीवों से दित नहीं मेमसी बंधधो',

वीथिकारिक ही साध बहावे ।

वीथिक में दितकारी (अर्थ) * माया,

बहुत अज्ञानी जाय बियावे ॥ अनु० ॥ १९

नहि मारण न दित बहावे

(ता) जीव बचाया अहित किम पाव ।

महि मारण निज दित पदिबाणो

मरता बचाया मत्-परहित पाव ॥ अनु० ॥ २०

* साधुद्वारा विनिर्दिष्ट

(उत्तराष्ट्रकव नृप अ २९ गा १४)

टीका—मायु शेषः मह अनुकूलैव भवति इति साधु

व्येता सदा बंधे दित जीव विरह दित्यु ।

जीव बचे जीने रक्षा कही प्रभु,
 देही (जीव) री रक्षा ने दया बताई ।
 म्वरद्वार में पाठ उघाडो,
 मन्दमती रे मन नहिं भाई ॥ अनु० ॥१८॥
 जीवों ने नेमजी नाँय छुड़ाया,"
 मन्दमती एवी बात उचारे ।
 'अवचूरी दीपिका टीका' अर्थ ने,
 मिथ्या उदय थी नाय विचारे ॥ अनु० ॥१९॥
 जीव छुट्या री बचीसी दीधी,
 "अवचूरी दीपिका टीका" देखो ।

†—“जइ मज्झ कारणा ए ए, हम्मति
 सुवहू जिया । न मे एय तु निस्सेस परलोगे
 भविस्सई ॥ सो कुण्डलाण जुयल, सुत्तग च महा-
 गम्मे... आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स

अथ कम्पाविचार

मूल पाठे षष्ठीसी भाषी,

मंदमती । जरा समझे लेखो ॥ अनु० ॥ १० ॥

पश्यामई ॥ (उक्त सूत्र अन्व ११ गाथा १९-२०)

टीपिछ—नदा नेमिकुमारः किं चिन्तयतीत्यत्र परि म

विधादादि कारणेन मने सुबद्धः मधुराजीवा इति ज्ञाने

मार्तपिज्जन्ते नदा य नद् द्विसाक्ष कर्म परस्मैके वरम

निन्द वस कम्पाज्जन्तरी न मविप्यति परस्मैके भीद्वन्

अन्वन्त अभ्यस्तनया एव अभिधाव अन्वया मन्त्रमन्त्रम

इत्यान् अभिधाव ज्ञानत्वाच्च कुत पूर्व विधा चिन्ता इति भाव

॥ १९ ॥ स नेमिकुमारो महायज्ञा नेमिनाभस्याधिमिमाच

सर्वेषु जीवेषु कल्पनेभ्यो मुनेषु सन्धु सर्वाणि कामरत्नाणि

सार्धं प्रजाम्भरति इदानीं तान्वाभरन्तानि कुण्डल्यतां पुनः

पुन मूचक इतिदगक चकारात् कामरत्न धर्मेन दारार्थिनि

सर्वाङ्गोपाद् यूपयानि सार्धं दे दधी ॥ १ ॥

टीपिछ—महायज्ञेषु परस्मैके भीद्वन्वाचकमन्त्रमन्त्र

वैद्यमभिधावमन्त्रा चरम सर्वाभ्यानिधाव ज्ञानिवाच

आज पिए या परतख दीखे छे,

मनमाने काम से स्वामी रीझे ।

जब राजी हो वच्चीसी देवे,

परिष्ठत न्याय विचारी लीजे ॥ अनु० ॥२१॥

जीव छुट्या प्रभु राजी न होता,

वच्चीस नेमजी काहे को देता ।

“निर्दय ऐसो न्याय न लेखे”

करुणाकर यों परगट केता ॥ अनु० ॥२२॥

३—धर्मरुचिजी का करुणा अधिकार

कटुक आहार जेहर सम जानी,

परठण री गुरु आम्ना दीनी ।

भगवत कुत पृवविधचिन्तावसर ? पूर्वच विदित भगवद्वा-
क्यतेन सारथिना मोचितेषु सत्त्वेषु परितोपितोऽसौ यत्कृतवां
स्तदाह—‘सो’ इत्यादि ‘सुत्तकचे’ तिक्तीसूत्रम्, अप्रप्यतीत
योग, किमेत देवेत्याह—आभरणानि च सर्वाणि शेषाणीति
गम्यते ।

अनुकम्पा-विचार

लाभण्य रो निपय ओ कीनो,

धर्मरुचीजी 'तहत्' कर सीनी ॥ अनु० ॥ १४ ॥

कटुक आहार सैं किड़ियों मरती,

अनुकम्पा मुनि मन मोंही आनी ।

ककम्पा तुम्बा रो भोजन कीया,

धर्मरुचीजी । धन गुणस्थानी ॥ अनु ॥ १५ ॥

गुरु आशा भिन आहार कियो मुनि,

किड़ियों री अनुकम्पा आणी ।

विद्युरमात्र मुनि रा अति आशा,

आराधिक हुआ गुणस्थानी ॥ अनु० ॥ १६ ॥

अन दुवर्धी "धर्मरुचीजी (तो)

किड़ियों बचावण मात्र न स्वात्वा ।

आपों सैं मरता जीव जाणी ने

पाप दटा मुनि कर्म स्वपापा ॥ अनु० ॥ १७ ॥

जीव बचावा में पाप बतावा,

इस विष भोग (वन) ने मरमा ॥

॥यवादी हानीजन पूछे,

(तो) मंदमती ने जाव न आवे ॥ अनु० ॥५॥

प्रचित मही मुनि विन्दू परठ्यो,

किड़ियाँ मारण रा नहिं कामी ।

॥न बिना किड़ियाँ खा मरती,

जाने वचावण कामी । स्वामी ॥ अनु० ॥६॥

प्रचित भू परठ्यो पाप जो लागे,

तो गुरु परठण री आज्ञा न देता ।

उच्चारदि नित मुनि परठे,

उपजे मरे जीव त्यों माहीं केता ॥ अनु० ॥७॥

तिण री हिंसा मुनि ने नहिं लागे,

सूतर माँहीं गरणधर भाषे ।

धर्मरुचीजी तो विध से परठ्यो,

जिनमें पाप कुतर्की दाखे ॥ अनु० ॥८॥

जो मुनि कड़वो तुम्बो न खाता,

तो परठ्यो दोष मुनी ने न कोई ।

कथं भविष्यति विचार

कुरुक्षेत्राचार्य प्रह्लादो रे। लाम्पि,

मित्र तुन ही परमात्मा सर्व ॥ २५ ॥

या अपिहर्षं जीवद्वा रौ,

सुपर में गुरुधरजी गार्ड !

“परायणस्य भो मायायुक्तस्य ॥”

जीपा ठाखा में पों, बरसात ॥ मनु० ॥

परजीवी स मासु वषावत,

अपना प्राण ही परमात्मा रख ।

॥— नगरी पुरिसबाबा वं० त०—॥

कम्प्य एवावसीगे नी परादुक्कम्प्य ॥

(इमर्गणस्य कालः ४ मिनट ४ सेकंड ३५ मिलीसेकंड)

~~संस्था-आयताद्वयव्यवस्था-आयताद्वयव्यवस्था-आयताद्वयव्यवस्था~~

शिवकल्पवृक्षे वा पराजयैको वा निर्हन्तः पराशक्त्यवस्थे विधि

पार्श्ववर्ती लक्षणों का अध्ययन करने का इच्छाशील वैज्ञानिक

इमं वाचनं प्रोक्तं राज्ञि राजर्षि वरुण उवाच ॥ १ ॥

जा तो विरूला दूण जग में,

धर्मरुची सा शास्तर साखे ॥ अनु० ॥११॥

४—श्री महावीरस्वामी की गोशालक पर अनुकम्पा का अधिकार

तेवलहानी वीर जिनेश्वर,

गौतमजी को भेद बतायो ।

दयाभाव (से) अनुकम्पा करने,

में पिण गोशाला ने बचायो ॥ अनु० ॥१॥

गोशाल बचाया में पाप होतो तो,

गौतमजी ने क्यों नहिं कीनो ।

“पाप कियो मैं, तुम मत करज्यो,”

यो उपदेश प्रभू क्यों न दीनो ॥ अनु० ॥२॥

फेवली तो अनुकम्पा केवे,

मन्दसनी तामे पाप बताये ।

अनुकूल-विचार

ज्ञानी बधन तत्र मूर्खों का मान,

व नर माह मिथ्यातम पावे ॥ अनु० ४३॥

असंजती रो नाम लई मे,

गोराहल बचावा रो पाप जो केवे ।

माछी-मूषक पात्र से काह

स्पष्ट तो जाब मरल नहि बवे ॥ अनु० ४४॥

जुँवाँ अमंयति न बे पावे

पाप जाये तो क्यों नहि केवे ।

जब कहे म्हारी दया छठ जावे

(ता) बीर से दोष कहे कुन्य लेख ॥ अनु० ४५॥

प्राणि आदि अनुकम्पा करन

बैसाधय्य जूँवाँ शिर बारे ।

सूत्र भगाती सतक पन्नाइवे

हस्त ज्ञानी कवन कबार ॥ अनु० ४६॥

प्राणी भूत जीव मन्वानुकम्पा

साखावेदनी रो कारण भाषा ।

प्रम शतक छठे उद्देशे,
 वीर प्रभू गौतम ने नाल्यो ॥ अनु० ॥७॥
 षकुँवर अधिकार पाठ यों,
 प्राणी भूतादि जीवदया रो । ।
 पाठों में असंजति आया,
 पाप नहीं अनुकम्पा किया रो ॥ अनु० ॥८॥
 अनुकम्पा उठावन कारण,
 वीर ने द्वेषी पाप बतावे ।
 सूत्र रो न्याय बतावे ज्ञानी,
 तो मंदमती ने जवाब न आवे ॥ अनु० ॥९॥
 (कहे) “दोय साधों ने क्यों न बचाया,
 गोशाला थी बलता जाणी ।”
 (उत्तर) आयुष आयो ज्ञानी जाण्यो,
 न्याय न सोचे खँचाताणी ॥ अनु० ॥१०॥
 विहार कराया तो थारे (पिण) लेखे,
 न्याय न सोचे खँचाताणी ।

अनुकम्पा-विचार

क्यों न बिहार कराओ स्वामी,
पात जाखता (या) दोनों ही सागे ॥ अनु० ॥

अब कहे "निष्कप ज्ञान में बंधो,
दोनों ही पात यहाँ इस आई ।

जस्तूँ बिहार कराओ माझी
भक्तिभ्यता टास्ती मझि आई" ॥ अनु० ॥

सरल भाव बों ही तुम सारथी

अनुकम्पा में (तो) पाप न आई ।

ज्ञानी ज्ञान बेसे क्यों करते

छिप्टी लैंच करते मत भाई ॥ अनु० ॥

अनुकम्पा साबज भाषण ने,

सूत्रपाठ रा अरज ने छेले ।

जे लेखा अज्ञान कीर रे

बोले मिथ्यास्ती पाप को छेले ॥ अनु० ॥

किस्तन, नीम कापोठ लेखा रा

भाव में साधुपणो मझि पावे ।

थम शतक दूजे उद्देशे,

(तो) वीर में पट्लेश्या किम थावे ॥ अनु० ॥ १५ ॥

‘कपाय कुशील’ रो नाम लेई ने,

अज्ञानी भोला (ने) भरमावे ।

मूल-उत्तर गुण दोष न सेवे,

भाव माठी लेश्या किम पावे ॥ अनु० ॥ १६ ॥

कपाय कुशील भाव लेश्या जो माठी,

होती (तो) अपढ़िसेवी क्यों कहता ।

इण लेखे द्रव्य लेश्या छ जाणो,

भाव लेश्या (रा) शुध भाव वदीता ॥ अनु० ॥ १७ ॥

‘कपायकुशील’ ‘सामायिक’ चारित्रे,

छे लेश्या रो नाम जो आयो ।

प्रथम शतक दूजे उद्देशे,

टीका में तिरण रो भेद ब्रतायो ॥ अनु० ॥ १८ ॥

अनुकम्पा-विचार

किसन मील कापोत द्रव्य लेरया (में),

साधुपणो छुट मावे जाणो ।

छ लेरया तिण लेले कदिये,

भावे तो तीनों ही छुट पिदाणो ॥अनु० ॥१५॥

तभी छे लेरया द्रव्य कदिये,

भावे तो तीनों ही छुट पिदाणो ।

कपायकुरील अरु संजम मईहीं

भाव स्वामी लेरया मत जाणो ॥अनु० ॥१६॥

ब्रह्मोत्थापन अरु सामायिक

संयम छे लेरया द्रव्य जाणो ।

या ही व्याप्य समपर्यवसान

भावे ता तीनों ही छुट पिदाणो ॥अनु० ॥१७॥

न्याय व्याप्य द्रव्य छ लेरया पावे

द्रव्यी व्याप्य जुगल म बतार ।

दृष्टा हाव विषय मूँ ताले

तोही ताण म गमयित जाव ॥अनु० ॥१८॥

क पडिसेवन कुशील ने,

मूल उत्तरगुण दोषी भाख्या ।

(पिण) तीनूँ भाव शुद्ध लेश्या में,

मूलपाठे सूतर में दाख्या ॥ अनु० ॥२३॥

मुक्तस पिण उत्तरगुण दोषी,

तीन भावलेश्या तिहाँ पावे ।

कथायकुशील तो दोष न सेवे,

खोटी लेश्याँ रा भाव क्यों आवे ॥ अनु० ॥२४॥

नृपातीत अरु आगम विहारी,

छद्मस्थपणे प्रभु पाप न कीनो ।

आचारंग नवमें अध्ययने,

केवलज्ञानी परकाश यूँ दीनो ॥ अनु० ॥२५॥

अनुकम्पा कर गोशालो वचायो,

मन्दमती रे मन नहीं भायो ।

अद्धती छे लेश्या प्रभु रे लगाई,

अनुकम्पा-द्वेषी आल चढ़ायो ॥ अनु० ॥२६॥

अनुकम्पा-विका

५—जिनअपि का अपिकार

(कह) “जिनअपि कह अनुकम्पा कीयी,

रेखावरी सत्तो तिख जोरो ।

रौतक बह हेछे आका,

देवी काय तिख लग्न में पोरो ।

आ अनुकम्पा सत्तज जाणौ ॥”

(अनु वाक १ मा १)

सूत्र विन्ध्य पों बात क्ठा कई,

अनुकम्पा सत्तज बतपाव ।

अनुकम्पा पाठ तिहों मर्दि बाकबा

अछानी मूठ रा गेला बलावे ॥अनु० ॥१॥

अनुकम्पासे गबडा जर बोली

जिनअपिपों रे अनुकरस आचों ।

अनुक पाठ सत्तामूठ में,

तो बिख मोला भरम कैवायों ॥अनु० ॥२॥

एस अनुयोग हुवारे,
 आठवों (रस) पाठ में वीर बतायो ।
 रो वियोग हुवा यो आवे,
 ऐसो श्री गणधरजी गायो ॥ अनु० ॥३॥
 ज रम जिणच्छवियों रे आयो,
 रेणादेवी रा वियोग थी पायो ।
 नूँ सूतर रो पाठ सरीखो,
 लक्षण से भी तुल्य दिखायो ॥ अनु० ॥४॥
 मोह कलुण्णरस में अनुकम्पा,
 भेषधार्यों ए मूठी गाई ।
 शङ्का होवे तो सूतर देखो,
 मत पड़ज्यो मूठा फँद मौँई ॥ अनु० ॥५॥
 गणान्न दशमें ठाण रे मौँई,
 अनुकम्पा-दान प्रथम बतायो ।
 कालुणी दान रो पाठ छे न्यारो,
 अर्थ दोन्यों रो न्यारो दिखायो ॥ अनु० ॥६॥

अनुकम्पा-विचार

‘कलुष’ (रस) ‘अनुकम्पा’ एक नहीं है,

“आत्मासूत्र” से भेद बताया ।

अनुकम्पा क्या, रक्षा, करिय,

कलुष (रस) दुःख विबोग में गया ॥ अनु० प्रभा

रक्त-विवस क्या दोनों ही व्याप,

ता पिण्ड में भाला भरमाये ।

कलुषरस ना मोह मलिन है,

अज्ञानी अनुकम्पा में लाये ॥ अनु० ॥८॥

आभयद्वार तीजा रे माँही

हीन आगत रे कलुष बताया ।

दृज अंग प्रथम भुक्तगंधे

पण्डा अप्ययम में बादीज आया ॥ अनु० ॥९॥

राक आगत भाव कलुषरस है

सुतर साम्य लखो गुम धारी ।

कलुषरस अनुकम्पा, कलुषा,

। क मरीची न सूख बजारी ॥ अनु० ॥१०॥

६—हिरण्यगर्भेष्टी का अधिकार

रण्यगर्भेष्टी (देव) अनुकम्पा करने,

देवकि-बालक सुलसा ने दीधा ।

मेशरीरी छठ जीव बचिया,

संजम पालि ने होगया सिद्धा ॥ अनु० ॥१॥

मन्दमर्त्याँ रे मन नहिं भाया,

(तासूँ) हिरण्यगर्भेष्टी ने पाप बताने ।

जावण आवण रो नाम लेई ने,

अनुकम्पा ने सावज गावे ॥ अनु० ॥२॥

जावण आवण री तो किरिया न्यारी,

अनुकम्पा (तो) परिणामों में आई ।

जिन वन्दन देव आवे ने जावे,

(तो) वन्दना सावज जिन ना बताने ॥ अनु० ॥३॥

आवण जावण (से) अनुकम्पा जो सावज,

(तो) वन्दना ने पिण सावज कहणी ।

अनुकम्पा-विचार

(जो) आबण जावण वैदमा नहिं सज्ज,^१

(तो) अनुकम्पा पिण निरबद बरसी ॥ अनु० ॥ ५४ ॥

मंदमती ऊँधी सरपा सूँ,

अनुकम्पा सादर बठलावे ।

बन्दा ने तो निरबद के वे,

जाये म्हायी पूजा उठजाव ॥ अनु० ॥ ५५ ॥

बब करी सुलसा री कम्पा,

त भी बेहूँ बाल बचाया ।

कंस ग भय भी निरभय कीधा

अमयदान फल बक्ता पाया ॥ अनु० ॥ ५६ ॥

७—अधिकार हरिकेशी मुनि का

हरिकेशी मुनि गावरी आवा

जोरी निम्न बाधुपु बीमी ।

जगद्गुरु अनुकम्पक मुनि ग

राध्यामुक्त समस्त बटु बीमी ॥ अनु० ॥ ५७ ॥

म्पा थी धर्म बतायो,
मूलपाठ रा वचन है सीधा ।

कहे "अनुकम्पा रे कारण,
रुधिर वमन्ता ब्राह्मण ॐ कीधा" ॥ अनु० ॥२॥

अकम्पा रा द्वेषी वेष्टी,
मिथ्या बोलतौ मूल न लाजे ।

नी सूत्रपाठ दिखावे,
अज्ञानी जब दूरा भाजे ॥ अनु० ॥३॥

। हेतू जन्त सुणाया,
(जद) ब्राह्मण बालक मारण आया ।

कुमारी भद्रा वारया,
तो पिण मूढ नहीं शरमाया ॥ अनु० ॥४॥

। —जैसे कि वे कहते हैं —

त रे पाडे हरिकेशी आया, अशनादिक न्याने नहीं दीधा ।
स देवता अनुकम्पा कीधी, रुधिर वमन्ता ब्राह्मण कीधा ॥
(अनु० बाल १ गाथा १३)

अनुभवविचार

महदेव न कोप हो आयो,

कष्ट वेई प्राप्पण समझया ।

कूटनहार न जचे कूटया,

शास्त्र मोहि प्रगट बताया ॥ अनु० ॥

अनुकम्पा भी तो बचन बचाराया,

पिया न दया भी प्राप्पण मारया ।

मधजीर्ण ! तुमें सोची शरभो,

अग्रामी छोडा बचन उचाराया ॥ अनु० ॥

—अधिकार पारणी की गर्भ विषय
अनुकम्पा ।

गर्भ री अनुकम्पा करी रखी

पारणी अजन्म साहु टारी ।

मदणा सँ बैठे न मदणा सँ छे

आटामीठा माज्जम तज्ज भायी ॥ अनु० ॥

आपन रसना माज्जम जोकया

गर्भ हितकारी भोजन करती ।
 न्ता, भय, अरु, शोक, मोहादी,
 दुखदाई जाणी परहरती ॥ अनु० ॥२॥
 धो अर्थ करी कहे मूरख,

“धारणीजी अनुकम्पा आणी ।
 अपने गमता भोजन खाया ॥”
 मूठी वात कुगुरु मुख आणी ॥ अनु० ॥३॥

नुकम्पा कर भय, मोह त्याग्यो,
 या तो पन्थी दीनी छुपाई ।
 भोजन पण मनमान्या न खाया,
 मनमान्या खावारी मूठी उठाई ॥ अनु० ॥४॥

॥ जैसा कि वे कहते हैं —
 घेघकुम्भर गर्भ माँहीं हूँ ता, सुख रे तद्धं किया अनेक उपायो ।
 धारणी राणी अनुकम्पा आणी, मनगमता अशनादिक स्थायो ॥
 आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥
 (अनु० दा० १ गा० १४)

अनुकम्पा-विचार

मोह त्याग्यो अनुकम्पा रे प्रभे,

विशुद्ध मोह अनुकम्पा बसावे ।

मत्त अघा होय मूठ्ठा बोलो,

अघा री खार अघा जावे ॥ अनु० ॥१॥

माजक र पडला मत्त मोह,

पञ्चम अतिचारे प्रभु केवे ।

अरान समय भातपाणी न देवे,

(वा) अतिचार साग व्रत नहि देवे ॥ अनु० ॥२॥

भातपाणी दावाया दिमा

(तो) गर्भ भूत मारया किम धर्मी ।

अद्यानी श्वनो मदि सोचे,

गर्भ री श्वा उठार्ह अधर्मी ॥ अनु० ॥३॥

आ बाजक म नाच भुंगजे

(ता) पेखी व्रत माविडा रो जावे ।

(जा) गर्भ ने बाई भूतों मार

ता तप-व्रत विष्ट र किम धावे ॥ अनु० ॥४॥

गर्भवती ने तपस्या करावे,
 उपवासादि रो उपदेश देवे ।
 गर्भ मरे तिण री दया नाँहीं,
 प्रगट अधर्म ने धर्म वे केवे ॥९॥
 गर्भ आहार माता रे आहारे,
 'भगवती' माँहीं वीरजी भाषे ।
 आहार छोड़ावे ते भूखा मारे,
 वेषधारी दया दिल नहि राखे ॥१०॥
 गर्भ अनुकम्पा वारणी कीनी,
 सूतर माँहीं गणधर गाई ।
 दया रहित रे (तो) दाय न आई,
 ज्ञानी अनुकम्पा आछी वताई ॥११॥
 गर्भ ने दुख न देणो कदापि,
 समदृष्टी अनुकम्पा राखे ।
 दोपद चौपद भूखा न मारे,
 पहले व्रत में जिनवर भाखे ॥१२॥

अनुकम्पा-विचार

६—अधिकार कृष्णजी की एवं
विषयक अनुकम्पा ।

भीकू न नेम न बन्धन चम्पा,

बुद्धा न अति ही दुःखियो आसी ।

जीर्ण जरा थी बर-बर कम्पे

गति न मन अनुकम्पा चासी ॥

अनुकम्पा सावज मत जम्पा ॥१॥

इसरी ईद भीकृष्ण छटार्

बूढ़ा रं पर मित्र हाथ पुगार् ।

दुर्गुण नाराज मरगुण भासक

अनुकम्पा री रीति दिखार् ॥२॥

साह अनुकम्पा इष्टने बतावे

अज्ञानी ऊँचा हेतु लगाने ।

स्वार्थ रहित अनुकम्पा परम न

सावज कष्टि कष्टि अम्म लगाने ॥३॥

हर तावगा जिन आधा न गये

तिन मूँ अनुकम्पा सावज केवे ।
 ऊँधी श्रद्धा थी ऊँधो सूफे,
 तिणथी कुइतू बहुला देवे ॥ ४ ॥
 अनुकम्पा परिणाम मे आई,
 ईट तोरण फिरिया छे न्यारी ।
 (जो) नेमवन्दन री मनमा जागी,
 (तव) चतुरंगी सेना सिणगारी ॥५॥
 सेन्या री जिन आजा नहि देवे,
 वन्दनभाव तो निर्मल जाणे ।
 (तिम) ईट तोरण री आजा न देवे
 (पिण) अनुकम्पा जिन आछी बर्याणे ॥६॥
 वन्दनकाजे सेना चटाई,
 अनुकम्पा काजे ईट उटाई ।
 सेना चले वन्दन नहि सावज,
 अनुकम्पा ईट थी नावज नौई ॥७॥
 नच गात्र वन्दन फल भारयो,

अमुकम्पा-विचार

वत्सराभ्ययनः गुह्यतोऽसौ र मोदी ।

अमुकम्पा कल सातखेदनी,

भगवत्सिद्धेः शिन पुत्रमार्ग ॥८॥

दामो करज भाव्या जाणो,

ममदृष्टी रे भाव्या मोई ।

अवसरन (संसार पद) सक्रम निर्जरा,

आतादिक मूलर में आव ॥९॥

पुण्य बैये अजानीजन र

अक्रम निर्जरा व पिणु पाव ।

आता बढ़ती ममदृष्टि पाव

अर का शिन आता में आव ॥१०॥

तुमिमा नीन इरिजी प्राणी

पंचेन्द्रिय जीवा न माग्य पाव ।

माम अर्था भूत दूज र पीकना

(वा) अजानी जीवा न आव्य अभाव ॥११॥

अजानी (बाव) अजानी अजानी

अचित वस्तु देई कारज सार-था ।

पंचेन्द्र जीव रा प्राण वचाया,

हिंसक हिंसादि पाप ज टार-था ॥१२॥

मूरख इणमें पाप बतावे,

जानी पूछे जव जाव न आवे ।

जो हिंसा उपदेशे छुड़ावे,

वाहिज साज देई ने छुड़ावे ॥१३॥

हिंसा छुटी दोनों हि ठामे,

जिण में फर्क न दीसे काँई ।

साज सूँ हिंसा छुटी तिण माँही,

एकान्तपाप री कुमति ठेराई ॥१४॥

साज सूँ हिंसा छुट्या माँही पापो,

तो घोडा दोडावणॐ जुक्ति थी लाया ।

ॐ जैसा कि वे कहने हैं —

भाप राजा ने हम कहै, सौंमलज्यो महारायजी
घोड़ा वेदा कमोद ना, में ताजा किया घरायजी

अनुकम्पा-विचार

चित्त भावक परव्रती राज्य न,

केसी समस्त जन्म धर्म बतायो ॥१५॥

पोदा कोईरै राजा न स्वाधो,

इस में तो घगलाली बताव ।

(तो) साज बेई न हिंसा मुकामे,

(जामे) पाप बतावतों लाज न भाव ॥१६॥

सुमुखि प्रधान की अतिरात्रु राजा

पाखी परिचय की समजाणा ।

या पण धर्म बलाली जाना

आरंभ कृषो त अलग पिछागुन ॥१७॥

धर्म बलाही चित्त कर ॥१८॥

विजयिष बलाह राज न सौमिकजो बरनारीजी ।

चित्त मरीज्या उपगारिषा विरज्य हज ससारोजी धर्म ॥१९॥

भाव मोने न प्या हूँ ता ने देख कर्मो र्थ देखी ।

अवसर करते नृपको जोदा कितदाक बीदेजी धर्म ॥२०॥

(परदेसी राजा की सप राज-१)

गाजर मूला रो नाम लेई ने,
 कुमती भोलों ने भरमावे ।
 अचित, देई मूलादि छुडावे,
 जारी तो चर्चा मूल न लावे ॥१८॥
 अचित साहाय अनुकम्पा जो होवे,
 (तो) सचित समदृष्टि क्याँने खवावे ।
 ऊँधा हेतु अणहूँता लगावे,
 जानी रे सामे जवाब न आवे ॥१९॥

**१०—अधिकार धूप में पड़े हुए जीवों
 के सम्यन्ध में ।**

तडके तडफत जीवों ने देखी,
 दया लाय कोई छाया* में मेले ।

❀ जैसा कि वे कहते हैं—

ऊपाडी जो मेले छाया, असजती री बियायच्च लागे ।
 या अनुकम्पा साधु करे तो, त्वारा पाँचो हि महाव्रत भागे ।
 आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥१८॥

अनुकम्पा-विचार

अज्ञानो तिष्ठ मैं पाप बताने

त्वोगा शौच कुगुरु यों लेले ।

अनुकम्पा सावज मग माणो ॥१॥

मग्नति फन्दरइर्ब शतक में

धीर प्रभू गीतम ने भाव ।

तप तप बैसावण तपसी,

बले-बल पारणो रुख ॥२॥

सूर्य आताप ना लतों औंनों

ताप लाग्या सूर नीच पड़ता ।

प्राणी, मूठ जीव इया भाव बी

त्योने उठाइ मस्तक धरता ॥३॥

बल तपस्वी इया औंनों पर,

तपस्वी सूर सेकर मस्तक मले ।

जैन रो भय सं पाप बताने,

इया उठावण माया लले ।

तप हो तिष्ठण निर-~~व्यथ~~ ।

अनुकम्पा सावज कहि ठेले ।

अनुकम्पा प्रभु निरवद्य भाखी,

जानी न्याय सूतर से मेले ॥५॥

कीडा-मकोडा ने छाया मे मेले,

असंजती री व्यावच केवे ।

भेषधारी कहे “साधु मेले तो,

त्याँरा पाँचो ही (महा) व्रत नहिं रेवे” ॥६॥

चतुर पूछे कोई भेषधारी ने,

जूँवा असजति ने र्थे पोखो ।

नीचे पड़ी ने पाछी उठावो,

महाव्रत रो थारे गह्यो न लेखो ॥७॥

दशवैकालिक चौथे अध्ययने,

असजीवोँ अनुकम्पा काजे ।

साधु ने प्रभुजी विधी बतावे,

मूलपाठ में इगविध राजे ॥८॥

उपासग बलि उपधी माँई,

अमजीव देग दया दिल लावे ।

अनुकम्पा-विचार

रक्षा र ठाम त्यों न मस्त

बुल र ठाम नहीं दरगाह ॥९॥

जीव बचाया जा महाप्रव भागो,

(तो) शास्त्र में आका प्रभु किम हब ।

'भारीकमा लाग्यो मं भीष्ट करख न'

क्या में पाप मिथ्याती केबे ॥१॥

११—अधिकार अभयकुमार की

अनुकम्पा का

अभयकुंवर तप तेला करन

ब्रह्मचर्य महित पीसो कर कठो ।

पुरुष संगति ब्रह्म न समरूपो

मन एकमिह राख्यो बंधा ।

अनुकम्पा सात्वज मत आणो ॥१॥

वीज दिन रे कष्ट प्रभावे

आसण बलवर्ती देवता बन्ध ।

तला री अनुकम्पा आर्य,

गुणरात्री हुवा तप रे तन्त्र ॥२॥

“अनुकम्पा कर वरसायो पानी,”

मिथ्यामती ण्वी भूठी भाखे ।

अनुकम्पा तो तप री आई,

इणरो तो नाम छिपाई ने राखे ॥३॥

जल वरसावण करज न्यारो,

तिहाँ अनुकम्पा रो नाम न आयो ।

भूठा नाम सूतर रा लई ने,

अनुकम्पा रो धर्म उठायो ॥४॥

(तप) सयमीरी अनुकम्पा करे कोड,

समण माहाण पर प्रेम ज लावे ।

उत्तर वैक्रिय कर गुणरागी,

दर्श उमग धरी देव आवे ॥५॥

दर्शण अनुकम्पा गुण राग तो,

निर्मल श्रीमुख जिन फुरमावे ।

वैक्रिय वरण आवण जावण री,

छिपातो तिण श्री न्यागी बतावे ॥६॥

अनुकम्पा-विचार

किया याग गुण-राम न सावज,

निम अनुकम्पा सावज नौहों ।

सौबो म्पाय सुषि मूढ़ मझके,

छोदा पद री ताख मचार्य ॥७॥

१२—अधिकार पशु बाँधने-बोझने का

(छंद) 'साधु बी अनर वसजीबों न

अनुकम्पा भी बांध ने छाड़े ॥

धौमात्मी करइ साधु न साध

गृहस्थ रे (पिया) साध रो बन्ध बौढ़" ॥१॥

४ इसका कि वे कहते हैं —

साधु बिना धनेरा सर्व जीवों ही

अनुकम्पा जाने साधु बाँधे कैपारी ।

निज ने बिझीय है बाइबे उदेरी

साधु ने बीमात्मी सावधिल आये ।

आ अनुकम्पा सावज उज्जो ॥

(अ. भा. १. भा. ११)

अनुकम्पा सावज इण लेखे,

अन्नानी यो बात उचारे ।

‘निशिथ’ पाठ रो अर्थ ऊँ वो कर,

भोला डुवाया मिथ्या मन्त्रधारे ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥२॥

न्याय सुणो हिबे निशिथ पाठ रो,

“कोलुणवडिया” त्रस जो प्राणी ।

ढाभपुज चरमाडि रे फौंसे,

बाँधे न छोड़े सूतर री बाणी ॥३॥

डाभ चाम लकड़ रा फौंसा,

माधु रे पास में रेवे नाहीं ।

(तो) माधु इण फौंसे किम बाधे,

पण्डित न्याय तोलो मनमाहीं ॥४॥

चूरणी भाग्य में न्याय वंतायो,

मेजातर ग गर री या वानो ।

जिणगी जागा मे साधु उतरिया,

तहाँ ये जोग मिले साजानो ॥५॥

अमुकम्पा-विचार

साधु आचार से आखर न आये,

अब वा साधु ने घर सँभलाने ।

स्वैत मला र काम जातों,

बांधल ओढ़ल पट्टु रा बतावे ॥१॥

साधु कठ इम बौधों न धावों,

गृहस्थ रा पर ही बिन्ता न लावें ।

तब ता मुनि ने प्रायश्चित नही

बांध ओढ़े तो अमुकम्पा आवे ॥२॥

विशिष्ट भोगावाहस्त गवारिक

ब्रमजीवों से अर्थ पिछाणो ।

बरणी भाव्य में अथ वा बीसो

तना कई टक्का में जाता ॥३॥

ईन्द्रियारिक जीव तरस रा

अमुक टक्का में अर्थ बटावा ।

ना अथ मिक्का नहि बीस

तिरग म्याय मुगा यिन पावा ॥ ४ ॥

लेट, कौड़ी न माखी, माछर,

द्वीन्द्रियादिक जीव पिछाणो ।

(जाने) चाम वेंत फासे बाँधण रो, •

अर्थ करे ते मन्दमति जाणो ॥१०॥

अशुद्ध दब्बा रो ताण करीने,

• नार्ही हज्य सँ न्याय विचारे ।

“टीका में नहीं तो दब्बा में क्यों थी”

पोते पण एहवी वाणी उच्चारे ॥११॥

यो ही न्याय यहाँ पण जाणो,

टीका विरुद्ध दब्बो मत ताणो ।

भाष्य चूरणी थी मिले ते तो साँचो,

विपरीत तो विपरीत बख्खाणो ॥१२॥

‘कोलुण वडिया’ सूत्र पाठ रो,

चूरणी भाष्य थी अर्थ विचारो ।

बाँध्या छोड़्या अनुकम्पा न रेवे,

यारो ॥१३॥

कुन्ध कुन्ध बाप पौष्य में लाग,
माय, पूरणी टर्रा में देखा ।

आपणी पर री पात ज दाने,
तिणरो बताया इय विध लग्यो ॥१४॥

बोध्या धी पगु पीदा पाव,
आँटी राय रय भरजाय ।

अन्तगय बोध्या धी लाग
तककता अति ही दुःख पाव ॥१५॥

पर री विरापना या बरजाइ
माधु पाल री दिव मुया जाना ।

किण कारण मुनि छोड़े नोही,

तिणरो विवरों भाग्य में देखो ।

झड़या वह परजीवों ने मारे,

कूबा खाड में पडवा रा लेखो ॥१८॥

बोर हरे अटवी में जावे,

सिंहादिक छूटा ने मारे ।

इत्यादि हिंसा रा दोष बताया,

साधु तो चोखे चित्त धारे ॥१९॥

छूटा सूँ प्राणी दुखिया होसी,

तो दयावान छोड़न नहीं चावे ।

साधु तो अनुकम्पा रा सागर,

वे छोड़ण मन में किम लावे ॥२०॥

(जो) बाँधे छोड़े अनुकम्पा न रेवे,

तिग थी चौमासी प्राद्वित आवे ।

करुणा, दया, शान्ति ऋषि चावे,

तिण रो दरड मुनी नहि पावे ॥२१॥

बहुकम्पा-विचार

कुन्ध कुन्ध दोष बाँधख में लाग,

माभ्य, चूरखी दम्भा में बखो ।

आपणी पर री पात क होवे,

विणरो ब्रह्मो इय विष सेखो ॥१४॥

बाँध्वा भी पणु पीड़ा पावे,

आँटी लाग रत्न मरजावे ।

अन्तराय बाँध्वा भी लाग,

तइफइतो अति ही दुःख पाव ॥१५॥

पर री विरुधमा पा बललाई,

सायु पात री दिवे सुमा बालो ।

सींग भी मार म मुर भी चाँप,

कोष बह्या करे मुनि री पाला ॥१६॥

साक्यों में पिब लघुता लागे

साधू हाकर डाँडा बाँध ।

इय करम बीमारी प्रादित

(विष) अज्ञानी ना ऊँची साँध ॥१७॥

अनुकम्पा-विचार

अनुकम्पा लामों से प्राप्तित कैसे,

मूठा नाम सुतर से लंब ।

भाष्य, सुतर, पूरुषि टरुषा में,

कठिं न चास्मो तो पिण कसे ॥१८॥

अनुकम्पा से द्वेषी वेपी

मूठा नाम लेता मर्हि साज ।

अज्ञान औधेरे स्पष्ट उषों कूके

ज्ञान प्रकारा हरकर भाज ॥१९॥

लाइ में पड़तों न अग्नि में जलतों

मिह धी माला माधू जाय ।

लाय क्या बाँधे लाइ से

प्राज्ञिन नार्हि अथ प्रमाण ॥२०॥

प्राचीन भाष्य अरु पूरुषि में

कम्पणानुकम्पा करणी बताई ।

मर्गों जाण बाध अरु छाई,

इगुविधि में कहु प्राज्ञिन नाई ॥२१॥

त्रम अर्थ वेन्ट्रियादिक करने,

दया थी बाँध्या दोष बतावे ।

(पोते) पागी में माखी ठर मुरझाई,

कपडा में बाँध ने मूर्छा मिटावे ॥२६॥

मूर्छा मिट्याँ मूँ छोड़ उड़ावे,

तिण मे तो ते पिण धर्म बतावे ।

(तो) अनुकम्पा थी बाँध्या छोड़्या में,

पाप परूप के भेष लजावे ॥२७॥

साधू पण त्रसजीव कहीजे,

कारण करुणा थी बाँधे ने छोड़े ।

भेष-बाख्यौं रे अर्थ प्रमाणे,

पाप हूँमी बाँरी शरधा रे जोड़े ॥२८॥

“साधू ने करुणा थी बाँध्या छोड़्या मे,

धर्म हुवे” यूँ ते पिण बोले ।

अर्थ कहो यह क्यों थी लाया ?

मूतग पाट में तो नहिं ग्योले ॥२९॥

सब तो कहे मूँ जुगली म फेरों

पण्डित क्योंने उत्तर देष ।

“भाष्य चरणि” “तन्त्रा” री युक्ति,

क्यों नहिं माना ? सुगुरु यों केवे ॥३०॥

मन र मत मठड़ीया बोल

गुरु-परम्परा सूत्र न ठेले ।

माखी न तो बौध बरु छोड़

रूजा भीषों री कुयुक्ति क्यों मल ? ॥३१॥

मूत्र निरीब उदरा द्वारा,

इतर नाम री दून्ध मखाया ।

निगु कारण या मैं किया मुलासो

मूत्र ग र्मका अध बताया ॥३२॥

जिगु पण्ड्या अनुकम्पा म रेब,

निगु ग प्रापधित निग्रय जाया ।

या या ब्राह्मणों जीव बच ता

नरुह नहीं तत्रा र्मदानासो ॥३३॥

१३-अधिकार व्याधिमिटावण विषयक

व्याधि बहुत कोटादिक गुण ने,

वैग अनुकम्पा तिणरी लावे ।

पासुक औपध दु ख मिटावे

निर्लोभी ने पिण पाप ब्रतावे ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥

दु ख न देखो तो पुन मे बोले,

दु ख मिटावा में पाप ब्रतावे ।

दु ख मिटायो तिण दु ख न दोधो,

मन्दमती क्यों पाप लगावे ॥२॥

जैन रा देखो अह उपाहो,

वेद पुराण कुरान में देखो ।

दु ख न देखो अरु दु ख मिटाणो,

दोनों रो शुद्ध ब्रतायो लेखो ॥३॥

दु ख मिटावा में पाप घणेरों-

मन्दमती विन दूजो न बोले ।

अनुकम्पा पितार

पोर चँपारो हिरया में दायो,
भासों ने नाम दिया मृकमोक्ष ॥४॥

दुःख दई काई दुःख मिटावे,
विय रा नाम तो मुख पर खाय ।

दुःख दिया बिना दुःख मिटाव,
इज हो ता नाम मन्त्र दियाव ॥ ॥

साधू श्री कृष्ण ने साखा जो देखे
पाप लग अझामी केव ।

नारिभाग दृष्टान्त दई ने
दुःखि केई मिथ्यामत सबे ॥५॥

नारिभोग पंचैत्रिय हिंसा
मोक्ष करणा दोनों रे दोवे ।

यो दृष्टान्त दया (अनुकम्पा) रे जोवे,
जो देखे वो भव-भव रावे ॥६॥

राग सुहावण विरिया सबख,
जनो न कोई सरीला केव ।

त्यों दुर्गुण रो भेद न जाग्यो.

मोटा हेतु कुपन्धी देखे ॥ ८ ॥

रोग तो वैशर्माकर्म उदय में

नारिभोग मोहवर्म में जाणो ।

गग मिटाया दुःख मिट जावे,

नारिभोग मोह बध्या रो जाणो ॥ ९ ॥

रोग मिटाया में पाप घणैरो,

नारीभोग समान बनावे ।

माता रो भोग अरु रोग मिटावण,

तिगरी श्रद्धा में मरीणो थावे ॥ १० ॥

कोई माता वन रो रोग मिटावे,

कोई तिण थो भोग कुकर्मा चावे ।

दोनो पापकर्म रा कर्त्ता,

तुल्य कहं ते धर्म लजावे ॥ ११ ॥

लब्धिधारी री लब्धि प्रभावे,

रोग मिटे सतर में घनायो ।

मो मनुष्य मरण श्री ब्रचिया,
मिथ्याती इणने दुर्गुण केने ॥१६॥

। री मेन्या देश ने मारे

स्वचक्री नृप रो भय थावे ।

गुणतीम अतीम प्रभावे,

भीति (भय) मिटे जन शान्ति पावे ॥१७॥

र' राजा री मेना आर्द्ध,

देश ल्हटे वो दुख अति देवे ।

सु परतापे भय मिट जावे,

तीम अतिशय सत्तर केवे ॥१८॥

अति वर्षा बहु जन दुख पावे,

नदी री बाढे जन घबरावे ।

जेण देशे श्री जिनजी विराजे,

तिण देशे अतिवृष्टि न थावे ॥१९॥

बिन वृष्टी दुख जग में मोटो,

दुकाले होवे धर्म रो टोटो ।

अतिराय अतिरा में प्रमुक्रे,

मुमिजे शान्ती सुख मानो ॥२०॥

अनरथमृषक रक्त री वृष्टि

बहु उपान दुषा जिण्य वरा ।

बिम्बानुर दुमिया अतिभारी,

रक्षा द्विष शान्ती होव कैस ? ॥२१॥

निग काल भी जिनजी पभास्या

विम नुगु निण्यदशों रा दलिया ।

परन्तु (प्रसन्न) गुण जिनजी र जागे,

जय-जप बोल जन महु मिमिया ॥२२॥

व्याग म्वांस भर कोइ भगन्दर,

विबिध-व्याधि जिम नेरा व्याइ ।

प्र जु पग धरतां व्याधि न रवे

कण्ठ शान्ती दरा में छाई ॥ २॥

ममचार्यग श्रीतोम में दम्या

या कृतान्त तो पाठ में गावो ।

सौ-मौ कोमा उपद्रव टलतो,
 केवलजानी आप बतायो ॥२४॥
 दलियो उपद्रव दुर्गुण जाणां,
 तो प्रभुजी रा जोग मूँ दुर्गुण मानां ।
 प्रभु जोगे दुर्गुण नहि होंवे,
 तो मिटियो उपद्रव गुण मे वखानां ॥२५॥
 आन रुद्र जीवों रा टले अरु,
 प्रभु ऊपर शुद्ध भाव ज आवे ।
 परतस लाभ यो दु ग्व मिथ्या मूँ,
 प्रभु अतिशय गणवर करमावे ॥२६॥
 “रायपसेणी” सूतर में देगो,
 चित्त “केशीमुनिजी” ने धोले ।
 परदेशी ने धर्म सुणाया,
 किण ने गुग होसी बिवरो खोले ॥२७॥
 दोपद चौपद जीवों ने बहुगुण,
 समण साहाण भिखारी रे जाणो ।

अनुकम्पा विचार

वश न प्रसुली बहु गुण होसी,

तिण कारख प्रमु घम बलाजा ॥२८॥

जीव दूरा अरु समख मिखारी (रु),

राजा धी योरो दुःख मिट जासी ।

आगत मिटसी गुण में भाभ्यो,

कास्यो जीव पण सुख पासी ॥२९॥

निम राग आगत मिटिया पिण गुण में,

भव जीवो । राहा मत आयो ।

बिन स्वार्थ धी बैध मिटावे

ता तिण न गुण (पिण) मिअय आयो ॥३०॥

शेग स्वार्थ बुद्धि आरम्भ न,

गुण रा मुमिअन नोव बसाण ।

पर उपकारी दुःख मिटावे,

तिण में णकत पाप न जाणे ॥३१॥

आरम्भ कर कोई (मुनि) बन्दन आवे,

अवका स्वार्थ बुद्धि आण ।

आरम्भ स्वारथ गुण में नौही,

वन्दन भाव तो गुण में जाये ॥३२॥

शुद्ध भाव अरु बिन आरम्भ थी,

मुनि वन्धा अधिको फल पावे ।

तिम कोई रोगी रो रोग मिटावे,

(तो) वैद्यादिक गुण रो फल पावे । ३३॥

**१४--अधिकार साधु की लब्धि से
साधु की प्राण रक्षा का**

लब्धिधारी रा 'खेलादिक' सूँ,

सोले रोग शरीर सूँ जावे ।

साधू ने रोग सूँ मरता वचावे,

(तो) ज्यो पुरुषों ने भी पाप* वटावे ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥

❀ जैसा कि वे कहते हैं —

लब्धिधारी रा खेलादिक सूँ,

पाप अतारइ प्रभुजी मासपा,

अनुकम्पा पाप कठहि न चास्यो ।

घटा धर्म न भ्रष्ट करण न,

तो पिण घोचो कुगुरो चास्यो ॥८॥

लघिधारी रा खेल रे फरमे,

साधु रा रोग मिथ्यों कुण पापा ।

माधु बधिया रा पाप बतावो

तां लाणा-वीसा में धर्म क्यों बापा ॥९॥

लघिधारी रा शरीर र फरस

राग सू मरयो साधु बधिया ।

लघिधारी न पाप बतावो,

कुगुर खानो पात्रण्ड रुधियो ॥१०॥

सोख्य ही रंग करि सँ जावो ॥

बल जाने इन रोगों हूँ साधु मरसो,

अनुकम्पा अपनी महीं रोग गँवावो ।

जा अनुकम्पा साधन जानो ॥

(अनु रा १ गा २५)

गुरु रा चरण शिष्य नित फरसे,

आवश्यक अध्ययन तीजा देखो ।

देह फरसिया धर्म बतायो,

आनंद चरण फरसियाँ रो लेखो ॥५॥

लब्धिधारी री काया फरसे,

धर्म तो प्रभुजी प्रगट बतायो ।

फरसणवालों ने धर्म हुवो तो,

लब्धिधारी ने पाप क्यों आयो ॥६॥

उत्तराध्ययन ग्यारवें मॉई,

रोगी ने शिक्षा अजोग बतायो ।

लब्धिधारी रा चरण फरस ने,

रोग मिश्या शिक्षा गुण पायो ॥७॥

रोग मिश्याँ गुण चरणफरस गुण,

किणविध अवगुण कुगुरु बतावे ।

गुण में अवगुण री थाप करी ने,

मिथ्यात्ती पोल में दोल बजावे ॥८॥

अनुकम्पा-विचार

१५—अधिकार मार्ग मूखे हुए को माधु
किस कारण रास्ता नहीं बताये

अन्धी र मोहि गृहस्थी भूस्मों,

माधु ने मारग पूछ्य सारा ।

किय कस्य मुनि मार्हि बताये,

अर्थ माय्य' में दम्बो सारा ।

अनुकम्पा साबज मत आणो ॥१॥

मुनि र बताय मार्ग जातों

चार कदाचि न उणन तट ।

मित्रादिक आपद दुःख दब

नित उफमर्ग ही प्राण भी छुट ॥२॥

वा निण रत्न गृहस्थी जातों

सग आदिक जीवों न मार ।

नित कारण दयायन्त मुनीश्वर,

मार्ग बतावा ग परिषय दारे ॥३॥

१५—अधिकार मार्ग मूखे हुए को साधु
किस कारण रास्ता नहीं बतावे

घटकी रे मोंदि गृहस्थी मूखों,

साधु ने मारग पूछख साग ।

किण कारण मुनि नाहिं पठावे,

‘अर्थ भाष्य’ में देला साग ।

अनुकम्पा सावज मत आणो ॥१॥

मुनि र बताय मारग जाखों,

चार कशाचिन् उण्ण ल्हू ।

मिहायिक आप्प दुत्त दूष

तिण उपसर्ग बी माख भी छूट ॥२॥

वा दिख रत्त गृहस्थी जाखों,

मुग आदिक् जीर्ण ने मारे ।

दिख कारख दवाबन्ध मुनीअर,

मार्ग बताया रो परिषय टारे ॥३॥

द्विचकारी मुनि सब जीवों रा,
 अनुकम्पा से प्राक्षित नौहीं ।
 समष्टी से सूखर माने,
 गुरु की बात देवे बिच्छाही ॥ ॥६॥

प्रथम वाक्य सङ्गर्भम्



अनुकम्पा कारण काइ (गृहस्थ)

सावज कर जा (अइ) काम ।

(ति) कारण अनुकम्पा नहीं,

करुणा (अनुकम्पा) निरवध नाम ॥९॥

सावज कारण सेवती बन्दन सावज नौय ।

अनुकम्पा निमज्जनम्यो, निरमल ध्यान लग्नय ॥१०॥

भाषा सुमती धी कर बन्दन ना उपवरा ।

विम अनुकम्पा ना करे, मुनि रेखा न होय ॥११॥

गङ्गी पिछ समझू हुय, विवक मन में लाय ।

बन्दन अनुकम्पा कर बैसा ही फल पाय ॥१२॥

कुगुरु कूकी लेंच सूँ अनुकम्पा कथाप ।

बन्दन रा ना लासुपी जोर सूँ मौढे थाप ॥१३॥

कारण कारण भइ त कुगुरु खोल नाय ।

५. कारण न भाग करि, करुणा नीचि उठाय ॥१४॥

बन्दन कारण प्रगट म, बहुविध आरंभ पाय ।

अनुकम्पा कारण काइ (गृहस्थ)

सावज कर जो (काइ) काम ।

(८) कारण अनुकम्पा नहीं,

करुणा (अनुकम्पा) निगद्य नाम ॥९॥

सावज कारण सेवर्थ बन्धन सावज न्यैय ।

अनुकम्पा विमजानम्यो, भिरमस्त प्यान लगाया ॥१०॥

भाया सुमसी थी कर, बन्धन ना उपवरा ।

विम अनुकम्पा ना कर, मुनि रे राग न द्वेप ॥११॥

गह्री पिण समम् हुय विवेक मन में लाय ।

बन्धन अनुकम्पा कर, बैसा ही फल पाय ॥१२॥

कुगुर कूड़ी न्येच सँ अनुकम्पा ज्ञाप ।

बन्धन ग ना लालुपी आर मूँ मोड पाय ॥१३॥

कारण कारण भद त कुगुर जाल नाय ।

कारण न आता करि, करुणा रीति ज्ञाय ॥१४॥

बन्धन कारण प्रगद म, बहुविध आरैम पाय ।

दूसरी-ढाल

१—अधिकार जीवों रो दया स्वातर
दयावान मुनि ने बांधने छोड़ने का ।

(वज्र—हीने सामलम्यो नरनार)

हाम मूजादिक र फाँने

गाय भेसादि बैष्वा विमास ।

जो छोड़ रख दुख पास

घटवी में बोड़ी न जाम ॥ १ ॥

रम सिद्धादिक यान खावे,

म्हारी अमुकम्पा छठ आवे ।

अमुकम्पा घणी घट मोही

तथी मुनिवर छोड़े नोही ॥ २ ॥

साइया अमुकम्पा छठ जाव,

मुनिजी न प्रायदित आवे ।

इम बाँध्या सूँ तडफे प्राणी,
रखे मरजावे इसडी जाणी ॥ ३ ॥

इण कारण बाँवे नाई,
अनुकम्पा घणी घट माँई ।
मरता जाणे तो बाँधे ने खोले,
दोष नाहीं अर्थ यूँ बोले ॥४॥

साधुजन रा पातरा माँहीं,
चिडियो उन्दिर पडियो आई ।
भेपधारी पिण काढणो केवे,
बिन काढ्याँ दया नहिं रेवे ॥५॥

(तो) अनुकम्पा थी छोड्याँ पापो,
एहवी खोटी करो किम थापो ।

अनुकम्पा निरवद्य जाणो
तिणरा साधु रे नहिं पचखाणो ॥६॥

साधू पातरा सूँ जीव काढे,
तामे धर्म कहे चोडे-धाडे ।

दूसरी-ढाल

१—अधिकार जीवों रो दया स्वात्तर
दयावान मुनि ने बाधने छोड़ने का ।

(तज—हीबे धामलम्पो नरनार)

डाम मूजादिक रे फौम,

गाय मेमादि बैम्बा विमाम ।

जा बाई रर दुख पास,

अटवी मे रोई न जास ॥ १ ॥

रर मिहादिक यान राब

गहमी अनुकम्पा उठ जाब ।

अनुकम्पा पली पट मोही,

मधी मुनिङ्ग बाइ नोही ॥ २ ॥

बाइया अनुकम्पा उ जाब

मुनिजी न प्रायदित आब ।

डम बाँध्या सूँ तडफे प्राणी,
रखे मरजावे इसड़ी जाणी ॥ ३ ॥

इण कारण बाँवे नाई,
अनुकम्पा घणी घट माई ।
मरता जाणे तो बाँधे ने खोले,
दोष नाहीं अर्थ यूँ बोले ॥४॥

साधुजन रा पातरा माहीं,
चिडियो उन्दिर पडियो आर्ड ।
भेपधारी पिण काढणो केवे,
विन काढ्याँ दया नहिं रेवे ॥५॥

(तो) अनुकम्पा थी छोड़्याँ पापो,
एहवी खोटी करो किम थापो ।

अनुकम्पा निरवद्य जाणो
तिणरा साधु रे नहिं पचखाणो ॥६॥

साधू पातरा सूँ जीव काढे,
तामे धर्म कहे चोढ़े-धाड़े ।

अनुबन्ध-विचार

मस्ती यदि जीव दुकावे,
पाप लागे रो इस्लो उकावे ॥७॥

मस्ती रे भूँज रा पासा,
पशु वैभ्या पावे आसा ।

तो अण्णमे बो नार्हि सोल,
पाप लागे सुत्तर यों बोले ॥८॥

ओ लागे तो पाप खुँ बणियो,
हुबो अनुकम्पा रो रमियो ।

अपभारी छलटी सिक्कावे
मस्ती (रे) छोड यों पाप बढावे ॥९॥

तब उत्तम नर नार्ह माणी
अपभार यों न बोस्यो वाणी ।

धर पातराधिक रे मोंही,
जीव तदक त्या दुख पाड ॥१०॥

मिगन जीवना फाड़ा के मोंही,
ए माया दवा अर्मजनि माणी ।

कहे जीवतो काढाँ में प्राणी,
 नहिं काढ-थाँ पाप लेवो जाणी ॥११॥
 साधु नहिं काढे तो पापी,
 या तो ठीक तुमे पिण थापी ।
 (जो) जीव छोड़-थाँ में पाप न लागे,
 दयाधर्म रो काम है सागे ॥१२॥
 तो ग्रस्ती ने पाप म केवो,
 छाँड मिथ्यामत तुम देवो ।
 साधू उपधी सूँ जीव मरजावे,
 तिणरो पाप साधू ने थावे ॥१३॥
 गेही उपधी सूँ जीव मरजावे,
 तिण रो पाप गृहस्थ पिण पावे ।
 साधु छोडे तो साधु ने धर्मो,
 गेही ने किम कहो पापकर्मो ॥१४॥
 उपकरण (पिण) दोनाँ रा सागे,
 नहिं छोड़-थाँ पिण पाप लागे ।

साधु न हा बतावे धर्म,
 घस्ती ने कहे पापकर्म ॥ १५ ॥
 अनुकम्पा एक बतावे*,
 साधु भावक ही एक सिखाय ।
 अमृत ही उपमा दबे,
 दोनों सेक्या सम मुक्त केवे ॥ १६ ॥
 जा बात खरी छं धारी,
 ता यहाँ सेव करो क्यों भारी ।
 साधु न धर्म बतावो
 घस्ती ने क्या पाप लगाया ॥ १७ ॥

*—जैसा कि वे कहत हैं—

जा अनुकम्पा साधु करें तो नवान बन्धे कर्म ।
 निच मौइल्ल भावक करे तो निचने पिण होसी धर्म ॥ १॥
 साधु भावक बीजा लगी एक अनुकम्पा जात्र ।
 अमृत रादुने मारनों निजरी म बरा तात्र ॥ २॥

(अनु शास १)

निज बोली रो बन्धन काँड,
 मोह मिथ्या री छाक रे माँही ।
 ज्ञान केरो अंजन आँजो,
 अब मिथ्या बोलताँ लाजो ॥ १८ ॥

२--अधिकार लाय बचाने का ।

(कहे) “अस्ती रे लागी लायो,
 घर वारे निसरयो न जायो ।
 बलताँ जीव ‘विलबिल’ बोले,
 (कोई) साधू जाय किवाँड न खोले” ॥१॥
 उत्तर--(कोई) खोले तिण ने पाप बतावे,
 (बली) धर्म शरध्या मिथ्यात लगावे ।
 नर बचिया पाप कहे मोटो,
 जाँरो हिरदो हुवो घणो खोटो ॥२॥
 थीवग्वल्पी मुनि पिण खोले,
 ठाणायंग चोभंगी रे ओले ।

અનુકમ્પા-વિષય

હાર સ્વોજ યાદર નિકલ્યા,
ધીરકમ્પી રા કલ્પ રો નિરખો ॥૧॥

પર રી અનુકમ્પા લાભે,
હાર સ્વોમ્યા પ્રાદિત નહીં આવે ।

અગતી મંગદા ન મુનિ ટારે,
મનુજો ને તો માધુ ઉતારે ॥૪॥

પાત તો નિકલ મટ જાશે,
દુઝા મરતો રી વ્યા ન જાશે ।

અપ્પન તો નિરવધી જાણો,
ઠાણાખાંગ રા હી પરમાણો ॥ ૫ ॥

અનુકમ્પા રો વણ ન આવે
જ્ઞાતીજન પરમાગ્રથ પાત્ર ।

અનુકમ્પા રા અણકલ્પતાત્ર

૩ — કમ્પા નિ જે કહતે કિ:-

અનુકમ્પા કિર્તી વણ જાત્ર પરમાગ્રથ નિરખા પાત્રે ।
ભિર્ગીધ ન કારમા કરેણં કિંચ માત્રવા દયા રા રમ્પો ॥
૧ જા ૮)

अणहूँता ही अरथ लगावे ॥ ६ ॥

भोलों ने बहु भरमाया,

कूडा-कूडा अरथ बताया ।

अनुकम्पा में पाप ने गायो,

हलाहल कलियुग चलि आयो ॥ ७ ॥

३—अधिकार अपराधी को निरपराधी

कहने का ।

कोई चोर अने परदारी,

हत्या कीनी मनुज री भारी ।

अपराधी राजा ठहरायो,

मारण योग्य जगत दरसायो ॥१॥

वधवा योग्य ते 'वध्या' कहावे,

“वज्रभाषाणा” पाठ में गावे ।

गुनि मध्यस्थ भावना भावे,

समभाव पापी पर लावे ॥२॥

वधवा याग्य मुनी मर्हि केबे,

दुष्ट कम पे मन नहि दबे ।

अनबध्य अपराधी प्राणी,

एसी मुनी कहे मर्हि बाणी ॥ ३ ॥

अपराधी होबे जो प्राणी

निरअपराधी कहे किम आणी ।

दोपी ने भिरदापी बाप,

राजनीति धर्म (ने) अबापे ॥४॥

दोपी न निरदोपी बताव

दाप री अनुमोदना पावे ।

विण इहे मुनी मौन राखे,

सुगढार्येग मूतर भाख ॥५॥

मन्त्रमयी तो ऊँचा बोल

मन्त्रपाठ द्विय मर्हि ताले ।

(६६) मतमार कहे अणुरा रणी

एहे काले बिना नाली ? ॥६॥

इम ऊँधा अरथ लगावे,

जाने ज्ञानी न्याय बतावे ।

मतमार मुनि नित केवे,

तेथी “माहण” पद प्रभु ठेवे ॥७॥

मतमार कह्यौ पाप नाहीं,

भव्य । समझो हिरदा रे माँही ।

‘मतमार’ मे पाप जो केवे,

मिथ्यामत रो पद वो लेवे ॥ ८ ॥

साधु थी अनेरा जो प्राणी,

थापे हिंसक खेचाताणी ।

वाने मत मारण नहि केणो,

ये कुगुरु तणा छे वेणो ॥९॥

जगजीव राखण रे काजे,

सत-शास्त्र कह्या जिनराजे ।

प्रश्नव्याकरण सूत्तर देखो,

संवरद्वारे कह्यो जिन लेखो ॥१०॥

चार मासना मुनि निठ मासे,

त थी संवर गुण वह आवे ।

मैत्री प्रमोद, कल्याण, आशा,

मध्यस्था चौथी बसाणा ॥११॥

मैत्रीभाव सभी प लाभ

गुणिजन स हय बहाव ।

कल्याण दुःखिया जीवों री लाभ

यथा भाव्य मिटावण आव ॥ १२ ॥

छाटा-कम कर काई जाण्ही

चोरी जारी हाया मन आव्ही ।

दिसक कर-कम न जारी

दुख दुःख जगल न भारी ॥ १३ ॥

पता दुःख बन्ध मुनि पाण्ही

मध्यस्थ भाव लाय गुणसागला ।

मागल याव्य गंगा नहि पान

यवमा बगल नहि पान ॥ १४ ॥

वधवा योग्य कहे किम जानी,

समभाव है महा सुखदानी ।

आततायी (ने) अवज्मत्य किम केवे,

लोक विरुद्ध कार्य किम सेवे ॥ १५ ॥

या मध्यस्थ भावना जाणो,

इणरो सुगढाअग बखाणो ।

दुष्ट जीवों रो यहाँ अविकारो,

अध्ययन पाँचवें जानी विचारो ॥ १६ ॥

ऊँधा अरथ करी भ्रम पाडे,

नाखे मिथ्यामत री खाडे ।

कहे “साधु यी अनेरा प्राणी,

जाने हिंसक लेवो जाणी” ॥ १७ ॥

(कहे तिणने) “मतमार कहे उण रो रागी,

तीजे करणे हिंसा लागी ॥”

‘मतमार’ जीव नहिं क्रेणो,

ऐसा कुसति काढे वेणो ॥ १८ ॥

समुद्रमत्-विचार

धार भावना मुनि नित मात्रे

ते ही संवर गुण बढ़ जाय ।

मैत्री, प्रमोद, करुणा, जाग्रो

मध्यम्य शौधी वलाखो ॥ ११ ॥

मैत्रीभाव सभी पे लाव,

गुणिजन से हृद बढ़ाव ।

करुणा दुःखिया जीवों री लावे,

बड़ा योग्य मित्रावय जाव ॥ १२ ॥

काटा-कर्म करे कोई जाणी,

चोरी, जाली, हत्या, मन जाणी ।

हिंसक मूर-कर्म री करी,

बड़े दुःख जगत ने मारी ॥ १३ ॥

एवा दुष्ट बल मुनि प्राणी,

मध्यम्य भाव लावे गुणप्राणी ।

मारख योग्य ऐसा नहि बोल,

‘अबग्म्य’ बचन नहि खोल ॥ १४ ॥

तिम द्रुष्ट सर्व मन जाणो,

कोई तु कर्मी ने पिछाणो ।

जिम उतरायेन रे माई,

भद्र प्राणी कहा जिनगई ॥ २३ ॥

जम्बुक आदिक कुत्सित कहिये,

हिरणादिक भद्रक लहिये ।

निग्रथपराधी भद्रक भाखे,

सूत्र अरथ टीका री मारो ॥ २४ ॥

जो कहे साधु श्री अन्य कर प्राणी,

(तो) भद्रिक अर्थ री होवे हाणी ।

तिम हिंसक सर्व नहिं प्राणी,

अति-द्रुष्ट हिंसक लेवो जाणी ॥ २५ ॥

वध्या ने वध्या न बतावे,

निरदोषी कहा द्रोप आने ।

या मध्यस्थ भावना भाई,

दरगंगा री उपेक्षा बता

हिंसे सूत्र प्रमाण पिडाणा,

समी जीव दुष्ट मत जाना ।

सुत्र प्राणी से चाख्यो लेखो,

‘ठाणावंग’ सूत्र में देखो ॥ १९ ॥

चुटिच अधम कया प्राणी

पट मेइ कया क्योग नाखी ।

असनी तिरिच पंचेन्त्री,

तठ वाठ बली विचलन्त्री ॥ २० ॥

दुमरी बाचना रे मोई

मिह बाध बरग (का) दुखदार् ।

दिवडा, गीछ तिरिच लहिय,

पू कर प्राणी इम कहिये ॥ २१ ॥

मच जीव कर मत जानो,

ठाणावंग सूत्र परमाना ।

खान् भी अन्या जो प्राणी,

सेन सुत्र कहे स अनानी ॥ ॥

जीवन हेतु आहार रो करणो
सूत्र मे कीनो यो निरणो ॥२॥

अवसर जाण मरण रे काजे,
तजे आहार धर्म शुद्ध साजे ।

यो जीवनो मरणो चावे,
पाप न लागे सूत्र वतावे ॥३॥

।जमती रहनेमी ने भापे,
धिवकार नू जीवन राखे ।

मरणो तुमने श्रेयकारी,
धर्म लाभ हुवे तुम भारी ॥४॥

अज्ञानी अनुकम्पा थी मागा,
ऊँधा अरथ करण यूँ लागा ।

“आपणो जीवणो ॐ माधु वळे,
(तो) पाप-कर्म रो होवे सचे” ॥५॥

छ—जैसा कि वे कहते हैं —

आपणो वळे तोहि पापो, पर नो कुण घाले सन्तापो ।
मरणो जीवणो वळे अज्ञानी, सम भाव राखे ने सुजानी॥
(अनु० हाल २ गाथा १४)

कण्ठारी बात यहाँ नार्ह,

‘मुगडाभैंग’ टीका रे माइ ।

इणरा ऊँपो अर्थ कोइ ताण

‘मठमार’ में पाप बसाये ॥२७॥

नाम मुगडाभैंग रो लेइ

लोरी जुगत्थों मन सूँ वेइ ।

लिख हेत किया बिस्तारो,

सुख-जया थी है निस्तारो ॥ २८ ॥

४ अविवार जोषणा मरणा योषणे का

जीवयो आपखो मम में आनी,

भाजन-पान करे सुख ग्रामी ।

उत्तमभ्येन बचीस रे मोई,

छ कारण में बात या आइ ॥ १ ॥

जो दिन अवसर अन्न त्याग,

(तो) आत्मदत्ता मुनि ने जाग ।

५—अधिकार शीत, तापादि च' छवा
आसरी ।

वर्षा, शीत न तापो,

राजविग्रह रो नहि सन्तापो ।

भिक्ष, उपद्रवनाशो,

मातों बोलों रो यो समाप्तो ॥१॥

दुःख-सुखदायी ये जाणी,

हो-मतहो कहेणी नहीं बाणी ।

निज सुख-दुःख सम मुनि जाणे,

तेथी णवो वचन सुख नाणे ॥२॥

अज्ञानी तो ढलटा बोले,

मोला ने नाखे भूखभोले ।

उपद्रव मिटण कोई चाखे,

निण माँहीं वे पाप बतावे ॥३॥

अनुकम्पा-विचार

कदशा भी पगसीव बचावे,

तिरुने पाप सेंताप लगावे ।

इणमें साल मेंवारु री इवे,

ऊँधा अरय सू दुर्गति लवे ॥६॥

पूजा-रलापा मेंवारु में इस्ती

जीवणो चावे कोड बिरोन्नी ।

अतिवार सेंवारु रो मारुयो,

पिण मदि अनुकम्पा रा इरुयो ॥७॥

मदिमा पूजा मदि पाव,

तथा कष्ट शरीर में चावे ।

तब मरण आरंभा लावे,

मंथारा में दोष यो चावे ॥८॥

विदन्-मरण रा नाम ता लव

आर्ममा (पन्नोग) अर्ब मदि केवे ।

अनुकम्पा उठावा ग कामी,

भूटा अथ करे दुःखगामी ॥९॥

रोग रो वियोग जो चावे,

आरत-ध्यान प्रभूजी बतावे ।

और मुनिगँ रो रोग मिटावे,

ते तो आरत नाहिं कहावे ॥ ८ ॥

स पर-उपद्रव रो जाणो,

पाप केवे तो कुमति पिछाणो ।

गँ वन्दना मुनि नहिं चावे,

चावे तो दूषण पावे ॥ ९ ॥

यो आपणा आत्मरि जाणो,

‘सुगढायग’ मूत्र पिछाणो ।

कोई वन्दना मुनि ने वेवे,

दोष तिण में मूत्र नहिं केवे ॥ १० ॥

‘खेम’ निरउपद्रव तिम जाणो,

पर रो वछ्या न दोष रो ठाणो ।

खेमकर मुनी गुण कहिये,

ते वछ्या दोष किम लहिये ॥ ११ ॥

धनुकम्पा-विचार

“सर्वरक्षार’ जिनगी भास्यो

‘स्वेमंकर’ मुनिगुण दास्यो ।

उपद्रव मरु ते स्वेमंकर

ने भीर्यो रो आखो द्वितंकर ॥४॥

भी बीर रा गुण हम भासे,

आशर कुँवर गोशाला न दास्य ।

धस-बाबर (२) स्वेम करता

शान्ति करलुरीति भगवन्ता ॥५॥

पर उपद्रव मरु गु आसे

तिगु मं तो पाप न धाव ।

शीत तापानि उपद्रव कोइ

निज प आयो मुनि लिया जाइ ॥६॥

ताबा-मनदाया मुनि नहि फव

आहत-धान जाणु भौन रव ।

आहत-धान ग ताजो भेष

गग आनो कर काइ गग ॥७॥

(कहे) “मनुज वचाया पापो,

तेथी (मुनि) जल न बतावे आपो ॥४॥

जो जीव वचाया में धर्मों,

(तो) मनुज वचियाँ हुवे शुभ-कर्मों ।

जल बताई नाँय वचावे,

(तेथी मनुष्य) वचायाँ पाप बहु थावे” ॥५॥

एवी खोटी करे कोई थापो,

जाँरे उदय हुवा महापापो ।

जो जल ने (मुनि) नाहि बतावे,

(तेथी) मनुज वचायाँ पाप में गावे ॥६॥

(उत्तर) मुनि निज नो-तो जीवणो चावे,

आहार पाणी मुनी नित खावे ।

निजनी अनुकम्पा (तो) करनी,

यातो तुम पिण मुख थी वरणी ॥७॥

तो निज अनुकम्पा लाई,

(कहो) क्यों पाणी बतावे नाहीं ?

२ - अधिकार नौका का पानी बताने का ।

साधू पैठा नाबा में आइ,
 नाबकिय माव बसाई ।
 नाव फूटी माँय आवे पाखी
 बपरा-बपरी जल सँ भरगछो ॥१॥
 आटा पानी बतावा रो नेमो
 तेधी मुनी बतावे केमो ।
 अबसर दूबख केरु आवे
 जतना स निकल मुनि आवे ॥२॥
 बिधि स उतरवा नहि पाट,
 'आइगिबरियेमा' पाट ।
 जतना सँ निकल ने जाखो
 दूबजाये रो नहि बसाखो ॥३॥
 पवा मरल अर्थ ने छोड़ी,
 त्वेनी कस्तों मूँडा सँ ओड़ी ।

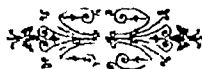
“અનુકમ્પા કિણરી ન કરણી”❀,

એસી આચારઙ્ગે ન વરણી ।

શઙ્કા હોધે તો સૂતર દેશ્વો,

નાવ રો વતાયો જઠે લેશ્વો ॥૧૨॥

॥ દ્વિતીય ઢાલ સમ્પૂર્ણમ્ ॥



❀-જેમે કિ વે કહતે હે -

આપ દ્વે અનેરા પ્રાણી,

અનુકમ્પા કિણરી નહિ આણી ॥

(અનુ૦ ઢાલ ૨ ગા૦ ૧૯)

अनुकम्पा-विचार

(कहे) “अनुकम्पा वा निज नी करणी,
पाणी बतावा री (सूरार में) नार्ही वरणी ॥८॥

कस्य पाणी बतावा रो नार्ही,

(पिण निज) अनुकम्पा में बाप न काई”।

सो इमहिज समझे रे मार्ई,

पर री अनुकम्पा धर्म रे मार्ई ॥९॥

मनु जों मे वचाया में धर्मों,

सो ठाणायह रो मर्मा ।

निज (अनुकम्पा) काज न पाणी बतावे,

(तिम) परकाज पिण नाहि दिव्याव ॥१०॥

पाणी बतावा रो कस्य नार्ही,

मनुजरचा धर्म र मार्ही ।

जीव बधियां न ग्रह में भज्जा,

‘विष र सार्सी आचारजो ॥ ११ ॥

तीसरी-ढाल



१-अधिकार मेघरथ राजा का पारेवा
पर दया करने का ।

(तर्ज — विछिया नी)

इन्द्र करी परसंसिया,

मेघरथ मोटो महाराय—रे जीवाँ ।

दयावन्त दानेश्वरी,

शरणागत देवे सहाय—रे जीवाँ ॥१॥

मोह अनुकम्पा न जाणिये,

नहिं मोह तणो यह काम—रे जीवाँ ।

परकाश अँधेरा ज्यूँ जुवा,

दोयाँ रा न्यारा नाम—रे० मो० ॥२॥

॥ दोहा ॥

बाँझ मरण जीवयो, धर्म तखु ज काम ।
सुतधारी ते शूगमा, (सौं) माग्था आत्मकाज ॥१॥
(पर) अनुकम्पा कीया थकी, कट कम नो बंरा ।
'भयान्तरा' बौध कहूया, मोह तखो मदि बंरा ॥ २॥
पर अनुकम्पा जा करे, मिट राग धन धन ।
भाग मिटे इन्द्रियों तखा अन्तर-दृष्टि देख ॥ ३॥
जीवयो रे कारण मपरध त्वंही काय ।
शान्तिनाथ मा जीव य, समशयेंग रे माय ॥ ४॥
मेंटा रया चन्दा नदी कम किया थकपूर ।
समशयेंही देह नी, दयावन्त महा-शूर ॥ ५॥

मौस आपो निज देह नो,

इगुरे बराबर ताल—रे जीवों ।

दक्षित हो गाय उम कहे,

यह तो भलो कस्यो थें चोल-रे जीवों, मो० ॥७॥

तुरत तगज मौंड न,

गाय गगडन लागो काय—रे जीवों ।

हाहाकार हृथो घणो,

अन्तवर अति विलगाय-रे जीवों, मो० ॥८॥

उत्तर दीवो राजवी,

नहि मोह तणो यहाँ काम—रे जीवों ।

जत्रो धर्म छै माहगे,

धर्म राखे छें थारो स्वाम-रे जीवों, मो० ॥९॥

सब नमभाया ज्ञान सूँ,

विलखाया सामा जोय—रे जीवों ।

उसडो धर्मी जगत में,

हुथ्रो बली होसी कोय-रे जीवों, मो० ॥१०॥

अबुल्ला-बिषा

तिण फालि गऊ दयता

दयामात्र देवण रे काज—रे जीवों ।

रूप परवा बाज ना,

तिण बीमो बहिय साज—र०मो० ॥३॥

पड़िया राव रो गोह में,

भय बी ठहफ ठछ काय—रे जीवों ।

गण्यो दियो महाराजजी,

भय मतपाया कदि बाय—रे जीवों, मो०॥४॥

याज कहे भन्न महरों,

मुक्त मूला नो यह शिकार—रे जीवों ।

और बहू लेसुँ नहीं

मोन आवो म्हाये आहार रे० मो ॥५॥

यो शरणागत माहर,

और मोंग तू बसु रयास—रे जीवों ।

जे मगि त आपहुँ,

हूँ बीबदया प्रतिपाल—रे जीवों, मो०॥६॥

इण अनुकम्पा मे मोह कहे,

उणरे पूरो उदे मिध्यात—रेजीवाँ ।

यह तो परतख मोह रो जीतणो,

ग्रन्थ माँहे देखो साक्षात-रे जीवाँ, मो० ॥१५॥

२—अधिकार अरणकजी की

अनुकंपा का ।

अरणक परीक्षा कारणे,

देव बोले इण पर वाय—रेजीवाँ ।

अनुव्रत पाँचों निर्मला,

दया-धर्म धारे चितचाय—रेजीवाँ, मो० ॥१॥

व्रत तोड़ हिंसा करसी नहीं,

अनुकंपा न छोड़सी आज—रेजीवाँ ।

(जाव) धर्म न छोड़सी ताहरो,

तो हूँ करसूँ मोटो अकाज-रेजीवाँ, मो० ॥२॥

वचन सुणी ढरियो नहीं,

इम चिन्तवे चित्त मुभार—रेजीवाँ ।

निज जो मरखो बंदिखो

ते हो जाग्यो धर्म रो काग-रे जीवों ।

प्राण कपास रा गन्धिया,

त ह्युख धर्म रे नाम-रे जीवों, मो० ॥११॥

तन खंखण मन खंख्यो नहीं,

अपूरख आख्यो बोल-रे जीवों ।

बीर रमे महाराजजी,

तन मेस दियो अनमोल-रे जीवों, मो० ॥१२॥

जयजयकार (तब) सुर करे,

धम ! धन ! तूँ महाराज—रे जीवों ।

इन्द्र किया गुण ताइय,

मैं बेज लिबा पहों आप-रे जीवों मो० ॥१३॥

कम अपराध तूँ माइयो,

हुओ सुवरण (मैं) पारस संग-रे जीवों ।

गोत तीर्थकर बौधियो,

राय क्या खये परसंग-रे जीवों, मो० ॥१४॥

धन-धन मुख से बोलतो,

दयाधर्मी तू महाशूर—रेजीवाँ, मो०॥७॥

कुमती कदाग्रही इम कहे,

जहाज में मनुज अनेक—रेजीवाँ ।

मोह-करुणा न आणी केहनी॥,

मरतो नहिं राख्यो एक—रेजीवाँ, मो०॥८॥

एहवी अणहूँति वात उठायने,

अनुकम्पा मे थापे पाप—रेजीवाँ ।

॥—जैसा कि वे कहते हैं --

तिण सागारी अणसण कियो, धर्म ध्यान रह्यो चित्त ध्याय रे ।

सगला ने जाण्या दूबता, मोह करुणा न आणी काय रे ।

जीवा मोह अनुकम्पा न आणिये ॥४॥

लोक विलविल करता देखने, अरण करो न बिगड्यो नूर रे ।

मोह करुणा न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूर रे ।

जीवा मोह अनुकम्पा न आणिये ॥८॥

(अनुकम्पा ढाल २)

अमुक्या-विचार

१ •

धम-बाध इणरे नही,

तयी पाप करण मूँछर—रेजीवाँ, मा०॥३॥

सुमति धत्री कुमती भजी,

तेहरी धर्म गुहावरण पाव—रेजीवाँ ।

मैं धर्म जाख्या है पढ़नो,

तयी धर्म छोड़पो किम जाय-रेजीवाँ, मा०॥४॥

पाप है पातक अगत में

दुष्ट सब करे अकाज—रेजीवाँ ।

अगबच्छस जिन-धर्म है,

सुखदार् सारे काज—रेजीवाँ मो० ॥५॥

अह्नी-मीजा रम रह्यो,

जारे धर्म तणो अनुराग—रेजीवाँ ।

कम गढ़े कर काहरा

रतन चिन्तामणि स्थाग-रेजीवाँ, मो०॥ ॥

दृढ़ रख्यो बलियो नही

बब कीनो उपसर्ग दूर—रेजीवाँ ।

एवी मूढ करे कोई कल्पना ?

के ज्ञानी केरी या थाप ?—रेजीवाँ, मो० ॥१३॥

जव जाव न आवे एहनो,

तव ज्ञानी कहे समझाय—रेजीवाँ ।

शील सती खण्डे नहीं,

तिणरे रत्ता घणी दिल माँय—रे० मो० ॥१४॥

तिम धर्म न छोडे शुभमति,

अनुकम्पा घणी घट माँय—रेजीवाँ ।

तिणने कहे कोई मूढ़मति,

वो अनुकम्पा लायो नाँय—रे० मो० ॥१५॥

धर्म शील न छोड़े तेहने,

नामे करे एहवी थाप—रेजीवाँ ।

“अनुकम्पा से पाय छे,

तेथी मनुष्य वचाया नाय”—रे० मो० ॥१६॥

एवी मूढ करे परूपणा,

ज्ञानी री यह नहि वाय—रेजीवाँ ।

जारे मोह ऊँ, अति भाकरो,

तइयी खाटी करे छे वाप-रजीवों, मो०॥१॥

मध्य राक्षस धर्म जोइयो नही,

तइयी माइ कहणा री वाप-रजीवों ।

स्यों न बुधबन्ध करे इण परे

इक हेतु रोइवो माव-रजीवों, मो०॥१०॥

‘रावण सीधा ने करे,

‘तू मुजने न करे स्त्रीकर-रजीवों ।

सेयी मरस नर अति सामटा,

वारे नाहि दया सँ प्यार-रजीवों, मो०॥११॥

वधा-धर्म मुक्त मन बस्या,

हूँ ता सगला रं चाहूँ श्रम-रजीवों ।

वार हिरद छोटी बासना

म्हारे हिरदे सौं चो नेम’-रजीवों, मो०॥१२॥

शम्भ न सीता परिहयो,

तेयी अनुकम्पा में पाप’-रजीवों ।

एवी मूढ करे कोई कल्पना ?

के ज्ञानी केरी था थाप ?—रेजीवाँ, मो०॥१३॥

जब जाब न आवे एहनो,

तब ज्ञानी कहे समझाय—रेजीवाँ ।

शील सती खण्डे नहीं,

‘ तिणरे रक्षा घणी दिल माँय—रे० मो०॥१४॥

तिम धर्म न छोड़े शुभमति,

अनुकम्पा घणी घट माँय—रेजीवाँ ।

तिणने कहे कोई मूढ़मति,

वो अनुकम्पा लायो नाँय—रे० मो०॥१५॥

धर्म शील न छोड़े तेहने,

नामे करे एहवी थाप—रेजीवाँ ।

“अनुकम्पा में पाप छे,

तेथी मनुष्य बचाया नाय”—रे० मो०॥१६॥

एवी मूढ करे परूपणा,

ज्ञानी री यह नहिं वाय—रेजीवाँ ।

धम गीन सम आवसो,

आव-ग्या धम रे मोंय-रजीवों, मो० ॥ १७ ॥

काइ दब कइ आवक मणी,

नू व निन-धम न छोड़-रेजीवों ।

नहि मा साधरी गुम्फा तहरी,

जारा गील मनस्पू तोड़-रे० मो० ॥ १८ ॥

धर्म न छोड़ तहरी

काइ मूख आवे भगम-रजीवों ।

जनि बसाया में पाप है,

निणरे दल न छाड़-पा धर्म-रे० मो० ॥ १९ ॥

(बलि) दब कइ धर्म न छाड़सी

भट बारी ग करस्पू पा-रेजीवों ।

तब धम न छाड़ तहरी

काइ मूढ करे णटरी पाप-रे० मो० ॥ २० ॥

धम त्याग बारी म धहावनों,

बारी भट छाड़ना में पाप-रजीवों ।

या मूर्ख री परूपणा,

इम जानी जाणे साफ-रेजीवाँ, मो०॥२१॥

इम अठाराही पाप रो,

न्याय सुद्ध हिरदे मे धार-रेजीवाँ ।

धर्म त्यागे न पाप छुडायवा,

यो सूत्र तणो निरधार-रेजीवाँ, मो०॥२२॥

कहे “पाप छोडावणो धर्म मे,

पिण धर्म तो छोडे नॉय-रेजीवाँ ।

धर्म न छोडे तेहथी,

पाप मेटण पाप न थाय”-रेजीवाँ, मो०॥२३॥

(तो) जीवरत्ता रो द्वेष छोडने,

समभाव लावो मनमाँय-रेजीवाँ ।

धर्म छोड अनुकम्पा ना करे,

अनुकम्पा गावज नॉय-रेजीवाँ, मो०॥२४॥

धर्म छोड मनुष्य नहिं राखिया,

तेथी मनुष्य वचाया पाप-रेजीवाँ ।

अनुकम्पा-विचार

या छोटी सुरघा बाहरी,
इए न्याय भी जाणो साफ-रे० मो०॥२५॥

नाम सर्व भाणुक तयो
अनुकम्पा कठावण काम-रजीवों ।

ते मूढ़ अहानी जीवका,
झाड़ी धर्म ने भेष ही लाव-रे० मो०॥२६॥

६ अधिकार 'माता बचाने से सुखणी
पिया के व्रत(दि का भंग नहीं हुआ'

अरणक नी परे जाखम्पा
सुखणीपिया नी बात-रजीवों ।

पुत्र मार सूना फर छँट्या,
अनुकम्पा राखी माझाव-रे जीवों, मा०॥२७॥

अपरुषो न नहि पररुषा,
कीधा पोसा माहीं नम-रेजीवों ।

तथी पुत्र रा मारणहम दे
अनुकम्पा गुर्ला घर प्रेम-रजीवों, मा०॥२८॥

मूढमती उलटी कहे,

जारे दया नहिं दिल माँय-रेजीवाँ ।

करुणा न की अँगजात नी,

एवी खोटी बोले वाय-रेजीवाँ, मो० ॥३॥

जो देव इणी विध बोलतो,

थारा पुत्र वचाया में धर्म-रेजीवाँ ।

तू सरधे तो छोड़ू जीवता,

नहिं तो घात करूँ तज सम-रेजीवाँ, मो० ॥४॥

तदा श्रावक धर्म न श्रद्धतो,

देव करतो पुत्र री घात-रेजीवाँ ।

तो करुणा न की अँगज तणी,

या साँची होती तुम वात-रेजीवाँ, मो० ॥५॥

पिण देव तो बोल्यो इण परे,

थारे जीव दया रो व्रत-रेजीवाँ ।

ते तोड हिंसा करमी नहीं,

थारा पुत्र मारूँ इन शर्त-रेजीवाँ, मो० ॥६॥

तेथी मायक ब्रत तोडपा नहीं,
 दया-धर्म हिरदा में ध्याय-रेखीवों ।
 तुम कहो करुणा चाखी नहीं,
 यो तो मृत्ने धारो व्याय-रेखीवों, मो०॥५॥
 दब कहे हिंसा करसी नहीं,
 धार दब गुरू सम माय-रेखीवों ।
 विष्णुन मार सुला कर छोट्सूँ,
 दया धर्म न मुक्त सुहाय-रेखीवों, मो०॥८॥
 इम सुण चुलणीपिया कोपियो,
 पा तो पुरुष बनारज धाय-रेखीवों ।
 पक्षरें मारें पइन
 इम बिस्ती झारे धाय-रेखीवों मो० ॥९॥
 दब गयो आकाश में,
 इणरे बोबो आयो हाय-रेखीवों ।
 कालाहल कीधा पखा
 तब भाइ भत्रा मात-रेखीवों, मो० ॥१०॥

वच्छ । विरूप देख्यो तुमे,
 नहिं हुई पुत्राँ री घात-रेजीवाँ ।
 पुरुष मारण तुम ऊठिया,
 ब्रत-नेम भागा साक्षात-रेजीवाँ, मो० ॥११॥
 इहाँ झूठा बोला इम कहे,
 जॉरे नहिं अनुकम्पा सूँ प्रेम-रेजीवाँ ।
 “अनुकम्पा करी जननी तणी,
 ते सूँ भागा ब्रत ने नेम”-रेजीवाँ, मो० ॥१२॥
 धेदा हो इण पर कहे,
 मिथ्यात रो चढ़ियो पूर-रेजीवाँ ।
 जानी कहे हिवे साँमलो,
 होकर सतवादी शूर-रेजीवाँ, मो० ॥१३॥
 त्याग किया हिंसा तणा,
 तेथो श्रावक रे ब्रत होय-रे जीवाँ ।
 ते ब्रत भागे हिंसा किया,
 यो न्याय विचारी जोय-रेजीवाँ, मो० ॥१४॥

अनुकम्पा हिंसा नहीं,

तेन त्याग्या व्रत नहिं धाय-रे जीवों ।

ओ, अनुकम्पा त्याग द,

निरदयी कष्टो जिनराय-रे जीवों, मो० ॥१५॥

अनुकम्पा भी व्रत नीपसे,

तेषी व्रत री किम हुबे पात-रेजीवों ।

अमृत भी मरग्यो कह,

या तो मूढ़मर्त्यों री वात-रे जीवों, मो० ॥१६॥

मार त विष आणुम्पा

अमृत पो रक्षा धाय-रे जीवों ।

अनुकम्पा भी व्रत भाग नहीं

हिंसा दुष्टा व्रत आय-रेजीवों मो० ॥१७॥

अनुकम्पा भी व्रत भाग कहें

त बुद्ध काली-धार—रे जीवों ।

यन्त्री माला न भगमाय न

पक्क दपोया लार-रेजीवों मा ॥१८॥

“भगवण भगानियम” रो,

बलि “भग पोषध” रो अर्थ-रे जीवाँ ।

टीका में कियो इण भाँत थी,

थें खेंच करो क्योँ व्यर्थ-रे जीवाँ, मो० ॥१९॥

कोप करी ने दोड़ियो,

पुरुष मारण रे परिणाम—रे जीवाँ ।

अनुव्रत भागो तेहथी,

करुणा न रही तिण ठाम—रे० मो० ॥२०॥

अपराधी पिण नहिं मारणो,

या पोषध री मर्याद-रे जीवाँ ।

भाव हुवा मारण तणा,

व्रत भागो तजो हठवाद-रे० मो० ॥२१॥

क्रोध करण रा त्याग था,

पूरप पर आयो कोप-रे जीवाँ ।

नियम उत्तर गुण भागियो,

जिन आणा दिवि लोप-रे जीवाँ, मो० ॥२२॥

न कस्ये पोषणे शोभया,

ते छो शोभया पुर्य रे सग—रे जीवों ।

दाइ-भों अजबना दुई,

पोषध रो दुष्मो भंग—रे जीवों मो० ॥२३॥

यो सत्य अर्थ सूतर तखो,

टीका भी लीओ ओय रे जीवों ।

खाना अर्थ कुरुरों तखा

मव मानजा स्पष्टा होय—रेजीवों, मो० ॥२४॥

शूरादब का दावला

“अनुकम्पा आखी अननी तणी,

ते सूँ मगा वत ने नेम”—रे जीवों ।

एही खानी बाप कोई कर,

तन ठतर हीज एम—र० मो० ॥२५॥

शूरादब भावक तणी,

बुलखीपिया सम पाव—र जीवों ।

देव कष्ट दियो पुत्राँ तणो,
 तिनमें विशेष छे इण भाँत—रे० मो० ॥२६॥
 जो तूँ दया-धर्म छोड़े नहीं,
 तो थारी देह रे माँय—रे जीवाँ ।
 सोले रोग मैं घालसूँ,
 तूँ मरने दुर्गत जाय—रेजीवाँ, मो० ॥२७॥
 डम सुण कोप थी दोड़ियो,
 चुलणीपिया सम जाण - रे जीवाँ ।
 व्रत-नियम भागा कह्या,
 ते समझ ने तज दो ताण—रेजीवाँ, मो० ॥२८॥
 पोषा सामायक में तुमे,
 ग्वी करो छो थाप—रे जीवाँ ।
 देह रक्षा किया भागे नहींॐ,
 आगार कहो तुम साफ—रे० मो० ॥२९॥

ॐ -जैसा कि वे श्रावक धर्म विचार में श्रावक
 की सामायिक व्रत की ढाल में कहते हैं—
 शरीर कपडादिक तेहना,
 जतन करे सामायक मोयजी ।

तुम कथन शूरतुव र,

रह रघा थी भागा न प्रत-र जीबों ।

दीव अनुकम्पा कियरी करी

तिथु थी भागा इथरा प्रत-र जीबों, मा० २०॥

लाव चारारिक रा मय धकी

पञ्चन रधानक जवया से जावजी ॥२३॥

भापरा ता भागार रागिषा,

भीरा रो मही छे जागार जी ।

भीरा न त्वाम्बा सुमाई मई

प्यों न किजगिष हजारे बहार जी ॥

सिन्धुजी जल भाराचिरे ॥२४॥

लप चारारिक रा मय धकी,

राज्या ने द्रव्य ले जावजी ।

पान्कनी कपडारिक हुने घसा ।

प्यों ने लो बाहर न ले जावे लावजी ॥२५॥

राज्या त द्रव्य ले जावता,

सुमाई रा मग न जावजी ।

इण कथने थें जानलो,

चुलणीपिया नी (पिण) वात-रे जीवाँ ।

जननी अनुकम्पा थकी,

नहिं हूई ब्रत री घात-रे जीवाँ, मो०॥३१॥

हिंसा करण ने दोडियो,

वली क्रोध आयो तिणवार—रे जीवाँ ।

त्यागा छे ल्याँने ले जावता,

सामायी रो ब्रत भाग जायजी० ॥२९॥

ग्यारहवें ब्रत की ढाल में भी लिखा है —

पोषा ने सामायिक ब्रत ना,

सरखा छे पच्चखाणजी ।

सामायिक तो मुहूर्त एकनी,

पोषो दिवसरात रो जाणजी ॥७॥

पोषा ने सामायिक ब्रत में,

याँ दोयाँ में सरखो छे आगारजी ॥ ८ ॥

अजनना श्योपाय धो,

त्रन नम पापघ टटी कर - रे मा० ॥१२॥

प्रत भाग हिमा वकी,

पो निरव लीजो जाण—रे जीवों !

अनुकम्पा थी रक्षा हुव

(निधी)प्रत मागो कद अणजाण - र०मो०॥१३॥

४—अधिकार ' नमीराज अपि ने
अनुकम्पा नहीं की' ऐसा कहनेवालों
के लिये उत्तर ।

नमीराज अपि समय लीना,

प्रम्यकषोधी (मोग) अणगार—रे जीवों ।

निज हित करणे ठठिया

पर गी नहीं करे सार समाप्त—रे मो० ॥१॥

गोप्ता न दव केसने

१ दव भावक (ना) प्रत—रे जीवों ।

उपदेश पिण देवे नहीं,

पूछ्याँ उत्तर देवे सत्य-रे जीवाँ, मो० ॥२॥

(ते) अनुकम्पा करे आपनी,

पर री कल्पे तस नायँ—रे जीवाँ ।

इन्द्र आयो तिण ने परखवा,

त्याँ माया विविध बनाय-रे जीवाँ, मो० ॥३॥

महल अन्तेवर ताहरा,

अगनि में बले परतख-रे जीवाँ ।

तुम स्वामी छो एहना,

ज्ञानादिक नी परे (याने) रख-रे० मो० ॥४॥

तव, नमीऋपिजी इम कहे,

ज्ञानादिक गुण छे मूक्त—रे जीवाँ ।

पथी बीजी वस्तु नहिं माहरे,

निश्चय-तय री बतार्ड सूक्त-रे जीवाँ, मो० ॥५॥

मुक्तनो न तो बले नहीं,

यह मिथिला पड़ता धर्मी,

ज्ञानात्मिक नारा न होय-ने जीर्णों, मो० ॥६॥

कह अमानि इस करे,

अनुकम्पा री करवा पात-ने जीर्णों ।

‘नमीराज ऋषि आणी नहीं

मोह अनुकम्पा री बात’-ने जीर्णों, मो० ॥७॥

(उत्तर) अनुकम्पा रा प्रश्न छे नहीं,

नहिं उत्तर में तनी बात-ने जीर्णों ।

पौ मूठा गाल बजाबिया,

पौ रे मोह छय मिथ्यात-ने जीर्णों, मो० ॥८॥

(जा) अन्तर्बर रक्षा ना करी,

तइपी अनुकम्पा में पाप-ने जीर्णों ।

एवी करे कोई वापना,

ता उत्तर सुखसो साफ-ने जीर्णों, मो० ॥९॥

हिमा, भूट बोरी तणा

नामी (खी) न ब्याप्ते लज्जा-ने जीर्णों ।

वस्तर पिण राखे नही,

संग मे न रहे महाभाग - रेजीवाँ, मो०॥१०॥

निज हित में तत्पर रहे,

पर साधु रो न करे काज-रे जीवाँ ।

प्रत्येकबोधी मुनि तिके,

पर रो न बंछे साज-रे जीवाँ, मो०॥११॥

या प्रत्येकबोधी रो नाम ले

कोई मूर्ख करे एहवी थाप—रे जीवाँ ।

जो कार्य नमीश्रुषि ना करे,

तिण में मोहतणो छे पाप-रे जीवाँ, मो०॥१२॥

इण लेखे (तो) दीक्षा देण में,

बलि विविध करावण नेम-रे जीवाँ ।

ते मोह पाप में ठहरसी,

नेने ज्ञानी तो माने केम-रेजीवाँ, मो०॥१३॥

दीक्षा, त्याग, ब्यावच तणा,

याँ कार्य में दोष न कोय-रे जीवाँ ।

अनुकम्पा उठायवा,

ए नहीं ममदृष्टि रा काम - रे० मो० ॥१८॥

५—अधिकार नेमिनाथजी ने गज-
सुकुमाल की अनुकम्पा नहीं की,
ऐसा कहनेवालों को उत्तर

श्री नेमि जिनेश्वर जाणता,

मुनि गजसुकुमाल री घात-रे जीवाँ ।

ए तो खेर खीरा माये खमी,

मोक्ष जावसी इणहिज भौत-रेजीवाँ, मो० ॥१॥

तेयी जिण भिन दीक्षा आदरी,

पडिमावहण चित चाय—रे जीवाँ ।

आत्रा माँगी जिणराज री,

श्रीमुख दीवी फुरमाय-रे जीवाँ, मो० ॥२॥

शमसाणे काउसग्ग कियो,

सोसल आयो तिहाँ चाल-रे जीवाँ ।

माख पाल बाँधी माली तखी,

मोह धास्या लीग लाल-रे जीबों, मो०॥३॥

कष्ट सखा बेदना म्यमी,

मुनि माख गधा लिखवार—रे जीबों ।

केइ मंदमती तो इम कह,

“नम करुणा न करी लिगार—रे० मो०॥४॥

पहल अनुकम्पा भाखी नहीं,

और साधु न मय्या साथ-रे जीबों ।

● बिस्वा कि व कहते हैं—

कष्ट सखो बेदना भति बची

नेमी करुण्य व भाखी लिगार रे ॥१८॥

भी नेमि जिनबबर जायता

होधी गजमुकुमाक री बात रे ।

पहिल अनुकम्पा भाखी नहीं

और साधु व मेम्पा साथ रे ॥१९॥

(अनुकम्पा शब्द—१)

तेथी अनुकम्पा में पाप है”,

इस बोले भूठ मिथ्यात-रे जीवाँ, मो० ॥५॥

(उत्तर) चर्म शरीरी जीव नो,

आयु टूटे नहीं लिगार-रे जीवाँ ।

जिम बाँध्यो तिम भोगवे,

निरूपकर्मी तणो निरधार-रे० मो० ॥६॥

आगम बलिया केवली,

कल्पातीत त्रिकाल ना जाण-रे जीवाँ ।

निश्चय जाणे तिम करे,

जारो नाम लेई करे ताण-रे० मो० ॥७॥

गजसुकुमाल री ना करी,

अनुकपा श्री जिन नेम-रेजीवाँ ।

ए वचन अनुकम्पा-द्वेष रा,

ज्ञानी तो समझे एम-रे० मो० ॥८॥

सूत्र व्यवहारो मुनि तणो,

सूत्र ने व्यवहारो धर्म-रेजीवाँ ।

अनुकम्पा आण बाब में पढ़-या,

यो तो जिन मान्यो नहिं धर्म रे जीवों ।

ते भी उपसर्ग मेढखो पाप में,"

मदमती पावे इम मर्म—रे जीवों, मा० ॥४॥

दिवे उत्तर एनो मौंभलो,

बब मण्या छे उपसर्ग आय—रे जीवों ।

अनुकम्पा रा द्वेष थी,

मदमती य दिया छिपाय—रे जीवों, मो० ॥ ५॥

अिय दिन बीजा आवरी,

कायास्सर्ग रखा बस मौंय—रे जीवों ।

पशुपाल बैल र कारण,

बीर न मारख हाथ छाय—र० मो० ॥६॥

तय म्त्र आय मै रंजियो,

मछिबन्त ता मछि जाय—र जीवों ।

(बली) सिधारय बब भीबीर रा,

बहु उपसर्ग दीना मिटाव—र०, मो० ॥७॥

कानाँ थी खीला कादिया,

भक्तिवन्त वैद्य हुलसाय-रे जीवाँ ।

ते महाफल पायो धर्म नो,

मरणान्तिक कष्ट मिटाय—रे० मो० ॥८॥

इम बहु उपसर्ग मेटिया,

कल्पसूत्र कथा रे माँय—रे जीवाँ ।

तो पिण अनुकम्पा द्वेषी इम कहे,

कोई उपसर्ग टाल्यो नाँय—रे० मो० ॥९॥

(कहे) “कथा री बात मानाँ नहीं,”

तो संगम (देव) री मानो केम—रे जीवाँ ।

या कथा पिण “कल्पसूत्र” नी,

तुम साख देवो छो केम❀—रे० मो० ॥१०॥

❀ जैसा कि वे कहते हैं —

संगम देवता भगवान ने,

दु ख दीधा अनेक प्रकार रे ।

अनुकम्पा-विचार

अनुकम्पा आण बोच में पड़या,

या ता जिन माय्यो नहिं धर्म रे जीवों ।

त थी उपसर्ग मेदखा पाप में,”

मंदमती पावे इम मर्म—रे जीवों, मा०॥१४॥

दिवे उत्तर पना मोभलो,

एव मट्या ह्ये उपसर्ग आय—रे जीवों ।

अनुकम्पा रा दूय थी

मदमती य दिया क्षिपाय—रे जीवों, मो०॥१५॥

जिख दिन दीक्षा आदरी

कायात्सग रणा वन मॉय—रे जीवों ।

पद्मपाल बैल रे कारण

बीर न मारण हाथ उठाव—र० मो० ॥१६॥

तय इन्द्र आय न रोकियो

भक्तिवन्त ता भक्ति आय—रे जीवों ।

(कसी) सिधारय एव भीबीर रा

बहु उपसर्ग दीना मिटाव—र०. मो० ॥१७॥

पार्श्व-प्रभु नीना प्रहो.

काउमरग कियो वन माय-रे जीवाँ ।

जव कमठे मेह बरसावियो,

उपसर्ग दीनो आय-रे जीवाँ, मो०॥१३॥

तव धरणेन्द्र पदमावती,

उपसर्ग दीनों मिटाय-रे जीवाँ ।

तुम पिण मानो। या वारता,

हिवे बांली ने बदलो काँय-रे० मो०॥१४॥

बलि कथा रे नामे तुमे,

ढालाँ जोड़ी विविध प्रकार-रे जीवाँ ॥

भी बीर ना उपमग मन्ध्या,

ठाम-ठाम कषा रे मौय—रे जीबों ।

सुम कहो किमही न मेटिया †, ‡

मूठा बोलवा सरमो नाय—र० मा०॥११॥

अब स्वाध न भावे पानो,

भावा-भमला गाल बजाय—रे जीबों ।

म्लेच्छ राक्ष सुटा थका,

बूंगर भी टोल गुहाय—रे जीबों, मो०॥१२॥

अनाथ कोहीं भी बीर रे ।

दवानादि ब्रीचा कर रे ॥

(अधु वा ३ गा २१)

† किसी कि से कहते हैं—

दुम्भ मैना मैली मगवान ने,

अकगा न बीचा मान रे ।

समरहि बैब हूँ ना बना

पिच किमहीं न बीची साद्वान रे ॥

(अधु वा ३ गा २२)

१००

पार्व-प्रभु नीना प्रहो,
काउसग कियो वन माय-रे जीवों ।
जय कमठ मेह वरसावियों,
उपसर्ग दीनो आय-रे जीवों, मो०॥१३॥
तय धरणेन्द्र पदमावती,
उपसर्ग दीनों मिटाय-रे जीवों ।

तुम पिण मानो। या वारता,
हिवे बोली ने बदलो काँय-रे० मो०॥१४॥
बलि कथा रे नामे तुमे,
ढालौ जोड़ी विविध प्रकार-रे जीवों ॥

। जैसा कि वे कहते हैं —

पार्वनाथजी घर छोड काउसग कीधो,
जय कमठ उपसर्ग कर वरसायो पाणी ।
जय पद्मावती हेठे सिंहासन कीधो,
धरणेन्द्र छत्र कियो मिर आणी ॥ ओ० मु०॥

(गाथा २७)

अनुदय-विचार

नवकार मन्त्र प्रभावकी थी,

अपसर्ग मेठरा अधिकार—२० मो० ॥१५॥

कैसे कि आराधना की इसकी हाक में वे करते हैं—

पञ्च पुत्र की माह धई

नवकार प्रभावे कीरति करें ।

सुख धीमति उमर धने तर

इस जाल जरी की नवकार ॥१॥

जलि उड़ी किरी देवी,

किरी कनक-सिंहासन तरकेवा ।

करर धरर कुमर प्रति वैसर्ग

इस जाल जरी की नवकार ॥२॥

नवका बराबती विद्वार

नही पूर आपा गुणो नवकार

पई तत्त्वार्थन धरिता दीप दार

इस जाल जरी की नवकार ॥

समुद्र में दूधती

नवकार गुणो बर बित जाल...

श्रीमती अमर कुमर बली,

भील सेठ आदिक नी बात—रे जीवों ।

देव साय करी (तुमे) मानी खरी,

विच पड़िया ये साक्षान्—रे जीवों, मो० ॥ १६ ॥

यह था सम-दृष्टि देवता,

जिन-धर्म दिपावणहार—रे जीवों ।

नवकार महिमा कारणे,

संकट भेट कियो उपकार—रे० मो० ॥ १७ ॥

तुम कहता सम-दृष्टि देवता,

बीच मे नहिं पड़िया आय—रे जीवों ।

या बात थारी भूठी हुई,

बीच पड़िया मान्या (थों) जोड़ माँय ॥ १८ ॥

जहाज वचाई देवता,

यो तो धर्म तणो उपकार—रे जीवों ।

जो खोटा जाणे सम-दृष्टि,

देवता कियो कलहा तणो—रे० मो० ॥ १९ ॥

धें अनुकम्पा रा द्वेष थी (क्यो),

धर्म होवो न करणा बील—२ जीवों ।

‡ उपसर्ग तुरत मित्रावता,

समदृष्टि देवों रो शील—२० मो० ॥२०॥

(ता) मत्रकारक प्रभाव थी दृष्टा,

उपसर्ग मेर्या साक्षात्—२ जीवों ।

तुम क्यन पिण्ड हुबो धर्म यो

मान सबाछोइ मिथ्यात—२० मो० ॥२१॥

“ना सब उपसर्ग बीरता

देव केम न मेर्या भाय”—२ जीवों ।

‡ ऊँ कि वे क्यने ई —

धर्म हुता भाषा न काइता

बर्षी बीर न दुगिरा उल्ल—२ जीवों ।

बरीबद देवता भावा नद्व

एव भजता करता नाम—२ जीवों मो ॥२५॥

(अनुकम्पा काठ ३)

एवी शका कोई करे,
 जॉरि सुध-बुध हिरदे नाय—रे० मो०॥२२॥
 निश्चेवादी अवधिधरा,
 मिटता देख्या निज ज्ञान—रे जीवाँ ।
 (ते) विघन मेष्ट्या देवाँ हर्ष सूँ,
 धर्म सेवा रो दे शुभ ध्यान—रे० मो०॥२३॥
 जो होनहार टले नहीं,
 ते देव न सके टार—रे जीवाँ ।
 त्याँरो नाम लेई कहे मूढ़मती,
 (उपसर्ग) मेष्ट्याँ पाप अपार—रे० मो०॥२४॥
 सौ कोसाँ उपसर्ग ना होवे,
 जिन महिमा सूतर साख—रे जीवाँ ।
 होनहार गोशाले वीर पे,
 तेजू-लेस्या दीनी नाख—रे० मो० ॥२५॥
 उपसर्ग मिटे प्रभु तेज थी,
 यह तो प्रत्यक्ष आलो काय—रे जीवाँ ।

मायी (होनहार) दल नहीं जो करे,

(इण रो) मम्ह भाण सुख नाम—२० मो० २६॥

(तिम) बीर उपसर्ग देवों मेंटिया,

परतस धर्म रो काम—२ जीवों ।

जो होनहार मिटे नहीं

छानी नहीं लेवे पिछा रो नाम—२ ॥

मोह अमुकम्पा न जाणिय ॥२७॥

७—अधिकार द्वीप-समुद्रों की हिंसा

देयता क्या नहीं मट ?—इसका

उत्तर ।

काइ मम्हमती इण पर करे,

अमुकम्पा आबण काम—२ जीवों ।

इम्ह मनी न हिंसा समुद्र (द्वीप) री,

अपिन वस्तु रा १६ मात्र २० भा० ॥१॥

ज्याँने द्वेष घणो करुणा तणो,

उदय आयो मिथ्यात रो पाप—रे जीवाँ ।

तथी अनुकंपा में पाप छे,

एवी (कोई) मंद करे छे थाप—रे० मो०॥२॥

तयाँने ज्ञानी कहे समझायवा,

इन्द्र जे-जे न करे काम—रे जीवाँ ।

तिण में पाप कहो तो विचार लो,

केइ काम रा लेऊँ नाम—रे० मो०॥३॥

श्रीकृष्ण नरेश्वर महामती,

जाँए पड़हो दीनो फिराय—रे जीवाँ

जो दीक्षा लेवो श्री नेम पे,

में पिछला री करूँ सहाय—रे० मो०॥४॥

सहस्र-पुरुष संयम लियो,

यो परतख महा-उपकार—रेजीवाँ ।

पिण इन्द्र पड़हो फेरयो नहीं,

तिणरो बुधवन्त करो विचार—रे०॥५॥ —

जो इन्द्र काम कियो मर्ती,

विणसूँ कृप्य ने कहे(काई)पाप—रजीबों ।

त जिन धर्म रा अगाध छे,

लोटा हेतु री करे बाप—रे० मो० ॥६॥

सेणिक पकड़ो पेटाबियो,

साधु मे बेयो रवान—रेजीबों ।

बलि जीवहिंसा करो मर्ती,

सप्तम अक्ष में चरो ध्यान—रे० मो० ॥७॥

यो काम इन्द्र कीषा नहीं,

सणिक कीषो घर ध्यान—रेजीबों ।

वे वा सौँषो समदृष्टि हुंवा,

हुम पारो दिखे शान—रे० मा० ॥८॥

सेणिक इम न विचारियो,

यो इन्द्र करयो नहीं काम—रजीबों ।

मुक्त न धम डोसी के नहीं

एवी राका न आणी साम—रे० मो० ॥९॥

तो पिण (कुमति) इन्द्र रो नाम ले,

अनुकम्पा में नाखे भर्म—रेजीवाँ ।

पिण इन्द्र ज्ञान में देखे तिम करे,

अनुकम्पा तो आछो धर्म—रे० मो०॥१०॥

सावद्य ने निरवद्य वली,

अनुकम्पा रा भेद दोय—रेजीवाँ ।

इन्द्र क्या नहिं तुम भणी,

थे भाखो क्यों निर्वुध होय—रे०मो०॥११॥

तब तो झटके बोल दे,

म्हारे इन्द्र सूँ काई काम—रेजीवाँ ।

म्हे सूत्र से करौं परूपणा,

म्हारा गुराँ रो राखाँ नाम—रे०मो०॥१२॥

तो समझो रे समझो जरा,

अनुकम्पा न सावद्य होय—रेजीवाँ ।

सूत्र में न भाखी केवली,

वलि इन्द्र कह्यो नहिं तोय—रे मो०॥१३॥

जो इन्द्र काम कियो नहीं,

विष्णु कृष्ण ने कहे(कोई)पाप—रेजीवों ।

त जिन धर्म रा अज्ञायु थे,

छोटा हेतु री करे पाप—रे० मो० ॥६॥

सण्डिक पकड़ो केरबियो,

साधु न वेयो स्वान—रेजीवों ।

बलि जीवहिंसा करो मत्ती,

सप्तम अङ्ग में धरो ध्यान—रे० मो० ॥७॥

यो काम इन्द्र कीधी नहीं,

सण्डिक कीभा घर ध्यान—रेजीवों ।

त तो सौंधो समदृष्टि हूँघो,

हुम पारो दिखे ध्यान—रे० मो० ॥८॥

मेणिक इम न विचारियो,

यो इन्द्र करयो नहीं काम—रेजीवों ।

मुक्त न धर्म होसी के नहीं,

एवी शक्त न आखी वाम—रे० मो० ॥९॥

“वीर अनुकम्पा आणी नही,
(पोते) न गया न मेल्या साध — रे० मो० ॥२॥

मानव मुआ दोय सग्राम मे,
एक क्रोड ने अस्सी लाख — रेजीवाँ ॥३९॥

भगवत अनुकपा आणी नहो,
पोते न गया न मेल्या साधरे ।

याँने पहिला पिण वर्ज्या नहीं,
ते तो जीवाँ री जाणी विराध—रेजीवाँ ॥४०॥

एमाँ अनुकम्पा जाणता,
तो वीर विचाले जायरे ।

सगळोँ ने साता उपजावता,
यह तो थोडे मे देता मिटाय—रेजीवाँ ॥४१॥

कोणक भक्त भगवान रो,
चेहो वारह-ग्रत धार रे ।

इन्द्र भीड आयो ते समकिती,
ते किण विध लोपता कार—रेजीवाँ ॥४२॥

(अनुकम्पा ढाल—३)

अणुहुँसी पाव पठावन,

मठ करो अनुकम्पा री पाव—रेजीबों ।

इन्द्र रो नाम लेई-लेइ,

मठ कर्म बाँधो साक्षात्—रे० मा० ॥१४॥

द-अधिकार कोणिक-बेड़ा का संभाम
मिटाने में पाप कहते हैं, इसका उत्तर ।

केइक कुमठी इम करे,

संभाम कुड़ाया पाप—रेजीबों ।

पहली पिख नहिं कर्जखा,

युद्ध होता जाणो साफ—र० मो० ॥१॥

छपड़ा कोणिक री साख दे,

मोलों ने सिखावे बाद—रेजीबों ।

—बैसा कि वे करने हैं—

बेड़ा वे कर्मिक नी बारता

निरपावस्थिता भगवनी साम्ब रे ।

चवदेपूर्व चार ज्ञान ना,

गोतमादिक लब्धी धार—रे जीवाँ ।

याँने हिंसा मेटण मेल्या नहीं,

कोई कारण कहो निरधार—रे०मो०॥७॥

कोणिक भक्तो वीर नो,

चेडो वारा-व्रत नो धार—रे जीवाँ ।

(याँने) उपदेश देता वीर जाय ने,

दोनों हिंसा देता टार—रे० मो० ॥८॥

तव तो बोले पाधरा,

“होणहार न मेटी जाय—रे जीवाँ ।

(केवल) ज्ञान में देख्या थी ना गया,

वलि साधु न मेल्या साय”—रे०मो०॥९॥

तो डमहिज समजो भाव थी,

संग्राम मेटण मे धर्म—रे जीवाँ ।

न्याय रीत समझाविया,

शान्ति हुए न वन्धे कर्म—रे०मो०॥१०॥

पाने पेहला पिण वर्मा नहीं,

आयता था संग्राम में पात—रेजीबों ।

युद्ध मिटाया पाप छे,

तेधी कही न मेरुण पात"—रे० मो० ॥३॥

(उत्तर) मोला मरमावण वयो,

यो तो परतक मोंदियो कन्द—रेजीबों ।

खानी पूछे तेहने

तब मुकन्दो हो आये कन्द—रे० मो० ॥४॥

जो युद्ध मेरुण बीर ना गया,

तेधी रण मेरुण में पाप—रे जीबों ।

ता हिंसा मेरुण बीर ना गया,

तेधी हिंसा मेरुण में पाप ?—रे० मो० ॥५॥

तब ता बोले उतावला,

हिंसा मेरुणों तो होवे धर्म—रे जीबों ।

(ता) बीर मेरुण किम ना गया,

महा हिंसा रा घोर धर्म—रे० मो० ॥६॥

६—अधिकार समुद्रपालजी ने चोर
पर अनुकम्पा नहीं करी कहते हैं,
उसके विषय में ।

पालित श्रावक गुणमणि,
प्रवचने परिष्ठित जाण —रे जीवाँ ।
समुद्रपाल सुत तेहनो,
महल माँहे वेठो सुखमाण—रे० मो०॥१॥
फाँसी-योग एक पुरुष ने,
फाँसी रो पेरायो वेप—रे जीवाँ ।
तिणने मारण ले जावताँ,
समुद्रपाल देख्यो विशेष—रे० मो०॥२॥
करुणा उपजी अति घणी,
अहो-अहो कर्म-विपाक—रे जीवाँ ।
वैरागे संजम लियो,
मोच गया करम कर खाक—रे० मो०॥३॥

मय जीव खेमकर वीरजी,

“सुगहार्थेग” मोंय वस्तु—रे जीवों ।

मय मेरे मय जीव रा,

अमरंकर विरुध विरुध—रे० मो०॥११॥

मगवन्त विचार दरा में

सौ-सौ कोसों रे मोंय—रे जीवों ।

मनुष्यों रे उपद्रव ना रहे,

पिण्ड होयी तो मिट नोंय—रे० मो०॥१२॥

हिम बेड़ा-कोणिक संग्राम में,

न्याये मिटाया मोटो-धर्म—रे जीवों ।

मिन्नो न वक्ष्यो ज्ञान में,

मनु ना गया समझे धर्म—रे मो०॥१३॥

अनुकम्पा उठायवा

मिथ्या मौखिया धों परपंच—रे जीवों ।

बहुर विचारे न्याय न

त्याग देव मिथ्या खंच—रे० मो०॥१४॥

जिम 'जीरण' भाई भावना,

वीर रो नहि मिलियो जोग—रे जीवाँ ।

तिरियो निर्मल भाव थी,

व्यवहारे रयो वियोग—रे० मो० ॥८॥

तिम मरता पुरुष देखने,

करुणा उपजी मन माँय—रे जीवाँ ।

गरुप जाण संसार नो,

समुदपाल नी धूजी काय—रे० मो० ॥९॥

चोर अपराधी राय नो,

ते राख्यो कहो किम जाय—रे जीवाँ ।

व्यवहार नहां यह जगत नो,

राखण री शक्ति नाय—रे० मो० ॥१०॥

तेहथी छोड़ाई ना सक्या,

पिण छोड़थो ससार—रे जीवाँ ।

भावौ करुणा आदरी,

तेथी पाया भव नो पार—रे० मो० ॥११॥

(कह) “अनुकम्पा न आखी चार री”

एही कुमति कावे रौंय—रे जीवों ।

अनुकम्पा रो धर्म उपापवा,

मोला ने दिया भरमाय—रे० मो० ॥४॥

दुखी देख कोइ जीव ने,

करुणा सपने मन रौंय—रे जीवों ।

कामल-भाव करुणा करी

दुखमटण भाव कह्य—रे० मो० ॥५॥

शक्ति अवसर पाय ने,

पर-जीवों रा मटे दुख—रे जीवों ।

सफल करे निह माय न,

करुणा रे हो सन्मुख—रे० मो० ॥६॥

जा शक्ति अवसर ना हुवे,

अनुकम्पा गे मन रौंय —रे जीवों ।

त भाव करुणा जिन करी,

प्यवहार माय दिनाय—रे० मा० ॥७॥

जिम 'जीरण' भाई भावना,

वीर रो नहिं मिलियो जोग—रे जीवाँ ।

तिरियो निर्मल भाव थी,

व्यवहारे रयो वियोग—रे० मो० ॥८॥

तिम मरता पुरुष देखने,

करुणा उपजी मन माँय—रे जीवाँ ।

सरूप जाण ससार नो,

समुदपाल नी धूजी काय—रे० मो० ॥९॥

चोर अपराधी राय नो,

ते राख्यो कहो किम जाय—रे जीवाँ ।

व्यवहार नहीं यह जगत नो,

राखण री शक्ति नाय—रे० मो० ॥१०॥

तेहथी छोड़ाई ना सक्या,

पिण छोड़थो संसार—रे जीवाँ ।

भावौं करुणा आदरी,

तेथी पाया भव नो पार—रे० मो० ॥११॥

अनुकम्पा-विचार

समुद्रपाल नो नाम स,

करुणा ठठावण काज—रे जीवों ।

त बेरी अनुकम्पा घणा,

मूठ पोसण री नहिं लाज—रे० मो०॥१२॥

ममजीब हिरदा में धारजो,

निश्चय करुणा रा भाव—रे जीवों ।

राकि खास सफ़ल्यो करे

जब मिले व्यक्तार रो दाब—रे मो०॥१३॥

साधु भावक होनों ठया,

करुणा रा भाव मुदाय—रे जीवों ।

परबगती सुख-सुख,

हुम जाशे सूत्र रो न्याय—रे० मो०॥१४॥

जिनकस्पी बीधरकस्मि नी,

प्रवृत्ति एक न होय—रे जीवों ।

एक कथा प्राप्ति हुवे

वृज नहिं करवा बी जोय—रे० मो०॥१५॥

तिम श्रावक साधू तणी,

भिन्न-भिन्न छे मर्याद—रे जीवौ ।

गेही (गृहस्थ) न करे पापी हुवे,

ते ही करवोन कल्पे साध—रे० मो०॥१६॥

भूखा राखे भोजन ना दिये,

श्रावक होवे दया हीण—रे जीवौ ।

साधु आहार न देवे गृहस्थ ने,

ते तो कल्प राखण परवीण—रे० मो०॥१७॥

“साधु-श्रावक दोनो तणी,

अनुकम्पा प्रवृत्ति एक”—रे जीवौ ।

एवी (केई) करे प्ररूपणा,

उत्तर पूछ-याँ पलटता देख—रे० मो०॥१८॥

साधु उपधि में उलझिया,

उँदरादिक जीव जाण—रे जीवौ ।

(साधु) अनुकम्पा आणी ने छोड दे,

नहि छोड़-याँ थी होवे हाण—रे० मो०॥१९॥

गद्दी (गृहस्थ) रे रम्मी में कलमिया,
 गायारिक प्राखी आख —रे जीवों ।
 गेही दया से झोक दे,
 नहिं झोक यों पी होवे हाथ —रे० मो० ॥२०॥
 धम बतावे साध न
 गद्दी न बतावे पाप —रे जीवों ।
 फर्क पड़-यो कियु कारण,
 छाटी मछा पीय साफ —रे० मो० ॥२१॥
 “माधु भावक री एक गीत छे,”
 मूँडा यी वालो णम —रे जीवों ।
 दोनों मरोन्वा काम में,
 तुम फर्क पठावो केम —रे० मो० ॥२२॥
 जीव सर साधु योग पी
 गस्थ पनाया धर्म —रे जीवों ।
 गद्दी गद्दी न जीव बनाय द
 विग म ता पनावा अधर्म — रे० मा० ॥२३॥

जीव प्रन्था दोनो जगा,

दोनो रा दलिया पाप—रे जीवों ।

इन दोनों सरिखा काम मे,

उलट-पलट करे खोटी थाप—रे० मो० ॥२४॥

धर्म बतावे एक मे,

दूजा में केवे पाप—रे जीवों ।

यो कुटिल-पन्थ कुगुरों तणी,

खोटी श्रद्धा दीजे साफ—रे० मो० ॥२५॥

कुगुरु कपट ओलखायवा,

जोड़ करी शुद्ध न्याय—रे जीवों ।

ज्यष्ठ कृष्ण चतुर्दशी,

उगणीशे छियासी माँय—रे० मो० ॥२६॥

तीसरी ढाल समाप्तम्

दोहा

हुस्तिपा वखी तावये, जो खोई मेले जाय ।
पाप बटावे तेह ने, मन्मथी री वाय ॥१॥
इस हणाय मल आयवे, तीसों कर्मा पाप ।
तिम रखा माथी कहे, (या) लोटी भूझा साफ ॥२॥
कर्म छदे बी अविद्या तीम बेवना पाय ।
भारत-रुद्र प्याल घी, माथों कर्म बँधाय ॥३॥

कर्मबन्ध टालन तणो, ज्ञानी करे उपाय ।
 उपदेशे अरु साज थी, देवे कष्ट छुड़ाय ॥४॥
 साधु कल्प थी साध जी, गृहस्थ कल्प थी गृस्थ ।
 तीव्र आरत मिटाय ने, सन्तोषी करे स्वस्थ ॥५॥
 दु ख भेटण में मन्दमति, पापबन्ध बतलाय ।
 असंजती रो नाम ले, खोटा चोज लगाय ॥६॥
 मारणवालो असजती, असजती माखो जाय ।
 एक देवे महावेदना, एक (महा) दु खे घवराय ॥७॥
 आरत रुहर ध्यान थी, दोनों बाँधे पाप ।
 पाप टलावे बेहुना, ते ज्ञानी मन साफ ॥८॥
 (कहे) “हिंसक पाप छुड़ाय दाँ, मरे ते भुगतो कर्म ।
 दु ख भेटे कोई तेहनो, म्हे नहि मानाँ धर्म” ॥९॥
 या श्रद्धा कुगुरु तणी, मिथ्या जाणो साफ ।
 सत युक्ती माने नही, उदय मोह रो पाप ॥१०॥
 जीव बचावा ऊपरे, खोटा देवे न्याय ।
 (ते) युक्ति थी खण्डन किया, मिथ्या-तम मिटजाय ।

दोहा

दुस्निया देखी तावहे जो कोई मेले जाय ।
पाप बतावे तेह ने, मन्वमती री जाय ॥१॥
इस इणवे भल जाणवे, चीनो करना पाप ।
सिम रवा मारी कहे, (पा) लोटी मन्दा साका ॥२॥
कमे छदे भी जीबदा, तीव्र बेदना पाप ।
आपव-वद्र ध्यान पी, माछो कर्म बैजाय ॥३॥

भैम्या ने जातौ देवने,

दयावन्त दया लाय हो भ० ।

छाछ पाय सन्तोपियो,

तिरखा दिवो मिटाय हो भ० करो० ॥४॥

हिंसान लागी भैस्या भणी,

जीवाँ रो दलगई घात हो भ० ।

दया शान्ति दोयाँ तणी,

धर्म तणी या वात हो भ० करो० ॥५॥

जो पाप वतावो थे एह में,

तो खोटो थारो पक्षपात हो भ० ।

(तलाई) नाड़ा भैसों रो नाम ले,

थे कहणा रो कर रया घात हो भ० करो० ॥६॥

(कहे) “साधु छाछ पावे नहीं,

तिण श्री वतावाँ पाप हो भ० ।

जो इनमें साधु धर्म मानता,

तो झटपट करता आप हो भ०” करो० ॥७॥

चौथी-ढाल

— ❦ —

(कइ) “नाहो भरियो हो बेंडक मायला,
 ठिण पर भेंस्यो आयो बलाय हो भबिकजन ॥
 ठिणने ईकास्या दुख भी मरे,
 नही ईकास्या मरे तसकाय हो भबिकजन ॥
 करो परीक्षा सठ धर्म री ॥१॥

धर्मी जोरावे केहन,
 कर्म करी दुख पाय हो भबिकजन ।
 लाय लागी संसार में
 बीच पदिया पाप बेंधाय हो भ०” करो० ॥२॥

(उचर) इस मोलाँ ने भरमायबा,
 खोग लगाया म्याम हां भ० ।
 हानी कहे दिवे सौंमसो,
 इण भग्म ने इवों मिटाव हो भ० करो० ॥३॥

इम सुलिया-धान रो नाम ले.

लटॉ, इल्याँ रो न्याय हो भ० ।

गचा-पाणी ने कन्द रो,

तीम ऊकरड़ी मुख लाय हो भ० करो० ॥१२॥

ह्रा ने विह्ली तणा,

माखी-माखा चित्राम हो भ० ।

दया काढ़ण कुगुरु किया,

खोटा जारा परिणाम हो भ० क० ॥१३॥

(उत्तर) ज्ञानी-पुरुष हुआ घणा,

सूत्र रच्या तंतसार हो भ० ।

जीवरक्षा रे कारणे,

देखो "संवरद्वार" हो भ० करो० ॥१४॥

जिण न्याय हेतु दृष्टान्त थी,

कोमल हूवे चित्त हो भ० ।

(उत्तर) साधु गद्दी रा कन्य रो,

म्यों रे पट में पार चँपार हो म० ।

तर्फी साधु रा नाम ल (गृहस्थ गी)

वृथा सुहावे पिछर हो म० करो० ॥८॥

मिनकस्पी आतरता त्यागियो,

बीबरकस्पी ने दखा आहार हा म० ।

न परिचय टासगु कागण,

मा कन्यतखा व्यवहार हो म० करो ॥९॥

बीबरकस्पी बीबा समय,

गृहस्थ न देखो आहार हो म० ।

त्याग्या परिचय टालवा,

मो मुनि रा आचार हो म० करो०॥१०॥

तर्फी साधु न द गद्दी न

ते कस्य रा मोटी काम हो म० ।

गद्दी देब पाप सुहायवा,

ते कस्ये सुप परिणाम हो म० करो०॥११॥

[कारज करता थकाँ,

भारी टलजावे पाप हो भ० ।

पापनो परनो बेहु नो,

करमाँ ने नाखे काप हो भ० करो० ॥१८॥

ज्ञान दर्शन होवे निर्मला,

पाप टालण परिणाम हो भ० ।

संवर निरजरा दीपती,

सद्गुण रो होवे धाम हो भ० करो० ॥१९॥

पेला रो पाप छुड़ावियो,

ते पिण पावे ज्ञान हो भ० ।

तो पथिक होवे ते मोक्ष रो,

गुणाँ रो ध्यावे ध्यान हो भ० करो० ॥२०॥

जो ज्ञान पावण शक्ति नहीं,

तो पिण टलियो पाप हो भ० ।

तीव्र आरत रुकवा थकी,

मिटे महा सन्ताप हो भ० करो० ॥२१॥

यथा अनुकम्पा स्वर्गमे,

ते सत्-शास्त्रश्रुती रीत हो भ० करो० ॥ १५

शिशु न्याय हेतु छग्रन्त भी,

इया माय बठ जाय हो भ० ।

त कुइतू जायजो,

(यो) सौँचो समझो न्याय हो भ०-क० ॥ १६

अस्य-पाप बहु-पाप रा,

ज्ञानी बचाया कम हो भ० ।

पुष्कन्त समझ ज्ञान सूँ,

जोलखे सुष परियाम हो भ०-करो० ॥ १७

ॐ—य सुखा परिवर्ज्यन्ति ता
लतिमहिंसये ॥

(१ ५ ३)

अर्थात् जिसके अन्तर से सब क्षमा थीर अहिंसा
इन गुणों की प्राप्ति हो वह सुखा प्राप्त है ।

दु ख दियोँ हिंसा हुवे,

सुख अनुकम्पा जाण हो भ० ।

घूघू ने सूफे नहीं,

परगट ऊगो भान हो भ० करो० ॥२६॥

पापी ने धर्मी करे,

देइ दान सम्मान हो भ० ।

कीधो मिथ्याती रो समकित्ती,

करि बहुलो सन्मान हो भ० करो० ॥२७॥

इत्यादि पर-उपकार में,

एकान्त थापे पाप हो भ० ।

सूत्र-वचन उत्थाप ने,

या खोटी श्रद्धा साफ हो भ० करो० ॥२८॥

पिछलाँ री साल संभाल सूँ,

पुरुषाँ एक हजार हो भ० ।

कृष्ण दलाली थी हुवा,

निर्मल संजम धार हो भ० करो० ॥२९॥

अनुकम्पा-विचार

(पिण) कुत्तुह क्यन छोटा किया,

पाप मटण में पाप हो म० ।

भोलों मे भरमायबा

छोटी कर रबा जाप हो भ करो० ॥२२॥

महापाप टलावे पारका,

तन घन समस्त छार हो म० ।

साय करे सन्तोष दे,

विधिष करे उपकार हो म० करो० ॥२३॥

ज्ञान दया शुभ भाव सँ,

गले पर रो पाप हो म० ।

तीव्र-वेदना पुन्य वे,

अन मेन सम्हाप हो म० करो० ॥२४॥

उलटी-मति रा मामची

हुन्क मेटण में पाप हो म० ।

धर्म अंश भये नहीं,

सोठे जारा जाप हो म० करो० ॥२५॥

दुख दियाँ हिंसा हुवे,

सुख अनुकम्पा जाण हो भ० ।

घूघू ने सूमे नहीं,

परगट ऊगो भान हो भ० करो० ॥२६॥

पापी ने घर्मी करे,

देइ दान सम्मान हो भ० ।

कीधो मिथ्याती रो समकित्ती,

करि बहुलो सन्मान हो भ० करो० ॥२७॥

इत्यादि पर-उपकार में,

एकान्त थापे पाप हो भ० ।

सूत्र-वचन उत्थाप ने,

या खोटी श्रद्धा साफ हो भ० करो० ॥२८॥

पिछलौं री साल संभाल सूँ,

पुरुषाँ एक हजार हो भ० ।

कृष्ण दलाली थी हुवा,

निर्मल सजम धार हो भ० करो० ॥२९॥

अमुक्या-विचार

येत्र कामेत्र बासी ममा,

वासा कला जिणराज हा म० ।

पात्र-अपात्रे दान दे,

भित्तपर्व विपाचण काम हा म० करो० ॥३०॥

राक्ष होवे तो देखलो

“ठाणायेंग” रे माय हो म० ।

चौथा ठाणे भिन क्यो,

ममक सरथा पाय हो म० करो० ॥३१॥

कहि कहि मे कितनो क्यो,

दुष्ट-माय पर उपकार हा म० ।

धर्म-पुण्य छुट ऊपमे,

पावे मुक्त भीकार हो म० करो० ॥३२॥

बीयासर मोहे मल्ली,

जोद करी पर ध्यान हा म० ।

पुनमचन्दजी री हस्त में

क्योसी सज्ज वरम्यान हो म० करो० ॥३३॥

बीबी बाबू समस्त

दोहा

अनुकम्पा उत्थापवा, देवे तीन दृष्टान्त ।

ते यथायोग खण्डन करूँ, ते सुणजो मन शान्त ॥१॥

पाँचवीं-ढाल



(तर्ज-सहेल्यौ ए आँवो मोरियो)

केई कुहेतू इम कथे,

(वली) देखाड़े हो काँकरा चित्राम ।

“एक चोर चोरे धन पारको,

एक मारे हो पंचेन्द्री ने ठाम ॥”

शुद्ध श्रद्धा ने ओलखो ॥ १ ॥

(भवि) शुद्ध श्रद्धा ने ओलखो,

किणविध री हो रची माया जाल ।

अमुक्या-विचार

करुणा न कर्यापवा,

भोला ने हो नाक्या भ्रमजाल ॥मु०॥ ॥

“एक सम्पर्क पर-नार ना,

जो तीनों रे हो कर्म नो बन्ध होय ।

(घो) तीनों ने मापु मिस्या,

प्रतिबोझा हो कर्म बन्ध न होय ॥मु०॥ ॥३॥

जो तीनों ने (मुनि) समझाविया,

तीनों रा हो दास्या महा-पाप ।

चोर चोरी छोड़-या बका

घन रखा हो टस्यो धनि सन्ताप ॥मु०॥ ॥४॥

हिंसक हिंसा छोड़ की

जीव बधिया हा धर्म प्रेमधुराग ।

पर-नारी त्यागी तिण पुरुष री,

पकी कूजे हो नारणी कण्ठरे रग ॥मु०॥ ॥५॥

घन, जीव रया नारी मुई,

जो रे काजे हो नहीं दाँ ॐ उपदेश ।

चोर हिंसक लम्पट तणा,

पाप छोड़ावाँ हो मारी श्रद्धा री रेश"॥शु०॥६॥

ॐ जैसा कि वे कहते हैं —

चोर तीनो ही समज्याँ थकाँ,

धन रह्यो हो धनी रो कुशल क्षेम ।

हिंसक तीनों ही प्रतिबोधिया,

जीव बचिया हो किया मारण रा नेम ॥

भय-जीवाँ तुमे जिन-धर्म ओलखो ॥७॥

जे शील आदरियो तेहनी,

स्त्री हो पड़ी कूचा माँही जाय ।

याँरो पाप धर्म नहिं साधु ने,

रह्या मूवा हो तीनों अवत माँय ॥भ० ॥८॥

धन रो धनी राजी हुवो धन रह्यो,

जीव बचिया ते पिण हर्षित थाय ।

साधु तरण तारण नहीं तेहना,

नारी ने हो पिण नहीं दुयोई थाय ॥भ० ॥९॥

(अनुकम्पा दाल—५)

अमुक्या-विचार

इसका इहेतु कैलावे,

जीबरचा में हो बढावे पाप ।

अच्छर इश्यो सौमलो,

तेबी मिटे हो मिथ्या सन्ताप ॥ सु० ॥ ७ ॥

चोर अवच ले पारको,

ते घन मे हो दुःख-सुख मत्वी कोय ।

घन रु घणी ने दुःख रूपमे

इष्ट बियोगे हो आस्त बहुत होय ॥ सु० ॥ ८ ॥

तेबी अवच-पाप प्रसु मासियो,

घनहर ने हो मुनि बे उपदेरा ।

पर-अन परमा (वाच) माण बे,

त हरता हो दुःख पावे विरोध ॥ सु० ॥ ९ ॥

चोर ने मुनि मविषोष बे,

शिया नर मा हो माठा दास्तन पाप ।

घन घणी ने आत्म लखो,

पाप तु क ना हो मेदण सन्ताप ॥ सु० ॥ १० ॥

इम पाप छुड़ावे बेहू ना,

बेहू नरना हो बलि टलिया दुख ।

कर्मबन्ध टल्या मोटका,

दोनों रे हो हुबो शान्ति नो सुख॥शु०॥११॥

केई साहूकार रा पूत रो,

देवे हेतू हो दया काढ़न काज ।

“एक ऋण लेवे कोई पारको,

ऋण मेटे हो दूजो धरि लाज ॥शु०॥१२॥

ऋण लेता ने बरज दे,

ऋण-मेटण हो नहिं रोके बाप ।

तिम हिंसक बकरा नित हणै,

करज करता हो बाँधे बहुपाप ॥शु०॥१३॥

बकरा रे कर्ज चुके घणो,

ऋण-मेटक हो पुत्तर सम जाण ।

साधु पिता सम तेहने,

किम बरजे हो कहो चतुर सुजान ॥शु०॥१४॥

अनुकम्पा-विचार

हिंसक न बरसे सही,

करम शूल रो हो क्यों बाँधे तूँ भार ।”

इम भोला न भरमायवा,

रख बीनी हो हूँ-हूँ की कर बारा ॥ १५ ॥

● जैसा कि वे करते हैं —

जै बकरा रो बीचणु

बाँधे नहीं किंगार ।

छिज ऊपर दृष्टान्त ते

सोमकजो सुककर ॥ १ ॥

साहुकर रे दीच सुत

एक कपूत जयचार ।

जान करदी जागा ठगु

माथे के जवार ॥ २ ॥

दूखी सुत जग दीपतो

यज ससार महार ।

करदी जागो रो करज

उठारे छिज बार ॥ ३ ॥

कहे ज्ञानी तुमे कुहेतु श्री,
मिथ्यापस नी हो कीनी या थाप ।

कहो केहने वरजै पिता

द्वीप पुत्र में देख ।

वर्जै कर्ज करे तसु,

के ऋण-मेढत पेंस ॥ ९ ॥

॥ ठाल ३२ मीं ॥

(समता रस विरला प देशो)

कर्ज माथे सुत अधिक करंतो ।

वार-वार पिता चरजंतोरे, समझ नर विरला ॥

करड़ी जागौं रा माथे काय कीजे,

प्रत्यक्ष दुख पामीजे रे ॥ सम० ॥ १ ॥

अधिक माथा रो कर्ज उतारे,

जनक तास नहिं धारे रे ॥

पिता समान साधु पिछाणो,

बकरो रजपूत वे सूत माणो रे ॥ सम० ॥ २ ॥

हिंसक न बरसे सही,

कर्म करण रो हो क्या बाँधे तूँ भार ।”

इम मोला मे भरमापवा

रच दीनी हो कृषी-कृषी ॐ बाराछु०॥१५॥

● जैसा कि वे करते हैं —

वे कमा रो अन्नपु

वाँछे नहीं बिगार ।

तिज ऊपर दधान्त से

सोमकमो सुककार ॥ १ ॥

साधुकर र दीव सुत

एक कपूत बन्धनार ।

करन करदी जगता तपु

साधे करे अपार ॥ २ ॥

दूजो सुत बना दीपतो

बल सप्तार मन्तार ।

करदी जगो रो करन

बतार तिज बार ॥ ३ ॥

तेथी हल्का करम भारी हुवे,

मन्द-रस ना हो तीव्र-रस पहिचान ॥ शु० ॥ १७ ॥

अल्पस्थिति महास्थिति करे,

पाप भोगताँ हो बाँधे साठा कर्म ।

एवी करकश-वेदनी वेदता,

अरडावे हो ज्ञानी जाणे मर्म ॥ शु० ॥ १८ ॥

एवा कर्मबन्ध ना काम में,

कर्म-छूटण हो लेवे मिथ्या नाम ।

न्याय अन्याय तोले नहीं,

परतख दीखे हो साठा परिणाम ॥ १९ ॥

सो वकरा कसाई हणता थका,

मुनिवरजी हो तिहाँ दे उपदेश ।

ते घात टालण वकरा तणी,

कसाई रा हो मेटण पाप कलेश ॥ २० ॥

करकश वेदना ऊपज्याँ,

वकरा ध्यावे हो महा आरत-ध्यान ।

वकरो दुःख भी वकफै,

दुःख पावे हो वेने अति सुस्ताप ॥ ८ ॥ १६ ॥

शान्ति भाव छ्यारे नहीं,

वीज आरव हो ध्याने रहै ध्यान ।

कर्म कय कल माये कृप करतो

आगच्छ कर्म कृप अपहरतो रे ॥ सुम ॥

कर्म कल रजपूत माये करे के

वकता संचित-कर्म भोगवे ॥ रे ॥ १ ॥

साधु रजपूत ने बरें सुहाव

कर्म करव करे कोव रे ॥ सुम ॥

कर्म बध्या बना गौता छासी

पर-भय में दुःख पासी रे ॥ ३ ॥

सरवर पये त्रिभ ने सुस्तापो

तिरौ तिरौ बछ्यो सुभिरातो रे ॥ सुम ॥

वकता बीजावन नहीं दे उपदेस,

कही जोकन बुद्धिबन्त रेस रे ॥ ५ ॥

(भिक्षुभक्त रसुत्तम)

पैसा ने दुख-सुख नहीं,

किम होवे हो दया चतुर सुजाण ॥२५॥

आरत-रुद्र वकरा तणो,

मुनि मेंटण हो देवे उपदेश ।

पैसा रे ध्यान-लेश्या नहीं,

सुख-दुख रो हो नहि तिणरे क्लेश ॥२६॥

प्राणी-अनुकम्पा मुनि करे,

जड़-धन में हो नहिं करुणा रो लेश ।

जो जीव जड़ एकसाँ गिणे,

निर्दयता हो जारा घट में विशेष ॥शु०॥२७॥

हिसक पाप मेंटण कहो,

वकरा रो हो मेंट्यौँ कहो दोष ।

चूक पडी इण में किसी,

थारो दोखे हो वकरा पर रोपा ॥शु०॥२८॥

इम पाप छुटा वेहू तणा,

वेहू जीव ना हो वलि टलिया दु ख ।

वलि रुद्र-ध्यान पिण्ड ऊषज,

“ठाग्याभ्या” (में) हो जोषो धरम्यान ॥२१॥

पूर्व कर्म दोनों मोगमे,

नवा बौध हो दोनों बैराणुबन्ध ।

मुनि उपकारी मेहुना,

उपदेरो हो टाल मेहुना दण्ड ॥२२॥

(कह) “दिसक पाप मुकामबा,

में तो देवाँ हो धर्म रो उपदेरा ।

बक्य, धन एक सारखा,

तिखरे कारण हो नहिं रौ उपदेरा” ॥२३॥

(उत्तर) ग्नी करे केई थापखा,

बिहल हुआ हो अमुकम्पा रे द्वेष ।

पाणालुकम्पा प्रमु बही

नहिं पैसा नी हो (अमुकम्पा) बरा समझे देसा २४।

(न धर्मी) धनिक री अमुकम्पा हासे,

प्रासधर्मी हा बक्य री विद्वान् ।

मास-खमण रे पारणे,

गोचरी आया हो मुनिजी गुणखाण ॥३३॥

कोई मूरख मन में चिन्तवे,

आहार बेराया हो निजरा बन्द होय ।

नहिं बेरायाँ निजरा घणी,

तप बधसी हो मुनि ने गुण जोय ॥शु०॥३४॥

जिण सुपात्रदान न ओलख्यो,

ते मूढ़-मति हो एवो करे विचार ।

मुनि जाँचे छे आहार ने,

देवणवाला ने हो हुवे लाभ अपार ॥शु०॥३५॥

कदा आहार मुनि ने मिले नहीं,

समभावे हो निजरा बहु होय ।

त्याँने पिण आहार आपताँ,

दाता रे हो धर्म रो फल जोय ॥शु०॥३६॥

मुनि दान माँगे दाता दिये,

दोनों रे हो धर्म रो फल होय ।

कर्मबन्धन टप्प्या मोटका,

दोनो रे, हो हुबो शान्ति नो सुख ॥२९॥

करा लोटी पक्ष लोनी करे,

‘ मरता (लीन) काजे हो नहि नो उपरेरा ।

विखुरे निम्जरा होती बन्ध हुबे,

नहारी सरपारी हो या अँडी रेस” ॥३०॥

(उत्तर) इय लेखे तो हिंसक मणी,

उपरेरा देखो हो योरे पाप रे मौय ।

हिंसा जोद-यो बकरो बने,

तथा निम्जरा हो होती रुक जाय ॥३१॥

इम अन्के मया बाहरी,

लोटी मौडी हो तुमे माया जल्ल ।

इय मिथ्या-पक्ष ने जोद दो,

सन्-भय्य रो हो मन भायो ख्याल ॥३२॥

नेत्ररा भर्म मिटाववा

गक हेनू हो सुखो चतुर सुजाण ।

गाम-ग्रामण रे पारणे,

गोचरी आया हो मुनिजी गुणग्राण ॥३३॥

कोई मूरख मन में चिन्तवे,

आहार बेराया हो निजरा वन्द होय ।

नहिं बेरायों निजरा घरों,

तप बधसी हो मुनि ने गुण जोय ॥शु०॥३४॥

जिण सुपात्रदान न ओलख्यो,

ते मूढ-भवि हो एवो करे विचार ।

मुनि जाँचे छे आहार ने,

देवणवाला ने हो हुवे लाभ अपार ॥शु०॥३५॥

कदा आहार मुनि ने मिले नहीं,

समभावे हो निजरा बहु होय ।

त्याँने पिण आहार आपताँ,

दाता रे हो धर्म रो फल जोय ॥शु०॥३६॥

मुनि दान माँगे दाता दिये,

दोनों रे हो धर्म रो फल होय ।

कर्मपण्डन टस्या मोटका,

दोनों रे, दो दुवा शान्ति जा सुख ॥२९॥

करा लोटी पत्त लोनी कदो,

“मरता (जीव) काजे दो गहि बों अपदेरा ।

विणरे निज्जरा दोवी बम्ब हुबे,

म्हारी सरपारी हो या ऊँची रेस” ॥३०॥

(उत्तर) इण लसे तो दिसक भणी,

अपदेरा वेशो हो थोरि पाप रे माँस ।

दिसा छोड़-याँ बकरो बचे,

सदा निग्भरा हो होती रुक जाय ॥३१॥

इम अटके भया बाहरी,

लाटी माँही हो तुमे माया जल ।

इख भिव्या-यल ने छोड़ हो,

सत्-बया रो हो मन आस्था कयाल ॥३२॥

निज्जरा मम मितायवा

एक इतू हो सुणो चतुर मुजाय ।

भय मेरुओं अभयदान छे,
 समदृष्टि हो लेवे हिरदा में धार ॥शु० ॥४१॥
 (पिण) समभाव बकरा रे नही,
 तिणरे निजरा हो कहो किणविध होय ।
 आर्त्त-रुद्र परिणाम थी,
 माठा पाप रो हो बन्ध कर रयो सोय ॥४२॥
 तेथी तिणने बचाया गुण होवे,
 निजरा री हो अन्तराय न कोय ।
 भय मिटियो, गुण नीपज्यो,
 भेटणहारो हो अभयदाणी होय ॥४३॥
 बलि सत्य-हेतु एक सँभलो,
 तिन वाण्या री हो चाली सूतर में बात ।
 एक लाभ लेई घर आवियो,
 बीजो लायो हो धन मूलज साथ ॥शु० ॥४४॥
 तीजे मूल गमावियो,
 ई दृष्टान्ते हो जाणो दया रो काम ।

अन्तरा नहिं निम्नरा तणी

जोई म्याय हो यक्य रा जाय ॥ध्रु०॥३७॥

यक्यो चाहे निज प्राण मे,

मरख-भय भी हो छोडावे (मुक्त) कोय ।

जो छोडावे अभयशमी क्यो,

दाया रे हो फल माटको दाय ॥ध्रु०॥३८॥

(जिम) भयभाण्ड हुषो राय संजयी,

ते ओंवे हो मुनि भी कर जोड ।

अभयदान वा मुक्त भखी,

मृगमारण हो अपराध भी छोड ॥ध्रु०॥३९॥

तब ध्यान खोल मुनिराय जी,

अभय (दान) वीन हो भय भेटण ओय ।

विम मरता (जीव) भय पामता,

त निर्मय हो अभयदान भी होया ॥ध्रु०॥४०॥

तिग अभयदान न पाय मे

ज धावे हा ता मूढ गिर्बो ।

भय मेझ्याँ अभयदान छे,

समदृष्टि हो लेवे हिरदा मे धार ॥शु० ॥४१॥

(पिण) समभाव वकरा रे नहीं,

तिणरे निजरा हो कहो किणविध होय ।

आर्त्त-रुद्र परिणाम थी,

माठा पाप रो हो बन्ध कर रयो सोय ॥४२॥

तेशी तिणने वचाया गुण होवे,

निजरा री हो अन्तराय न कोय ।

भय मिटियो, गुण नीपज्यो,

मेटराहारो हो अभयदाणी होय ॥४३॥

बलि सत्य-हेतु एक साँभलो,

तिन वाण्या री हो चाली सूतर में बात ।

एक लाभ लेई घर आवियो,

बीजो लायो हो धन मूलज साथ ॥शु० ॥४४॥

तीजे मूल गमावियो,

ई दृष्टान्ते हो जाणो दया रो काम ।

एक जीव बचावा उपवेशो,
 लाभ बहुतो हो होने शुभ परिणाम ॥४५॥
 मौन रहे बोले नहीं,
 मूल-पूँजी रो हो ते रत्नखहार ।
 मार कहे सीजो पापियो,
 मूल पूँजी रो हो ते वो सोबखहार ॥४६॥
 केई कुतरफाई हम कहे,
 जीव बचिया हो बचे पाप री बल ।
 छोटा म्याय बहुविधि कहे,
 मुमे सुखनो हो खोटी सरपारो खल ॥४७॥
 (कह) 'परमेश-पापी एक पुरुषमा,
 उपदेश दा मुनि मेण्या पाप ।
 पर-नापी जाइ कब पड़ी
 तिहार मुनि न दा नहि पाप-सम्हाप ॥४८॥
 बचना बच्यो नारी मुड
 न ना समझो दा दाना एक समान ।

वकरा वच्या दया नहीं,

नारी मुआ हो नहि हिंसा स्थान ॥शु०॥४९॥

वकरा वच्या धर्म सरधसी,

तिणरी सरधा में हो नारी मुआ रो पाप ।”

एवा कुहेतू केलवी,

भोला आगे हो करे मत री थाप ॥शु०॥५०॥

(उत्तर) हिवे ज्ञानी कहे भवि साँभलो,

वच्या-मरिया री हो सरखी नहीं बात ।

वकरा री रक्षा कारणे,

उपदेशे हो मुनिजी साजात् ॥शुद्ध०॥५१॥

नारी मारण (मुनि) कामी नहीं,

मारण मे हो नहि पर-उपकार ।

आत्मघात करे (कोई) पापिणी,

महा मोहवस हो मरे ते नाग ॥शु०॥५२॥

त्याग हेते स्त्री मरे नहीं,

मोह कारण हो वा मरे मत-हीण ।

तिष्ठरी पिण्ड पात दुःखायवा,

उपदेशो हो मुनि धर्म-प्रवीण ॥शुद्ध०॥१५३॥

मुख उपदेश (करा) बच गई,

तबी दलिया हो महा-मोहनीकर्म ।

आमहस्या टल गई,

गुण निरम्यो हो यो धर्म रो मर्म ॥शुद्ध०॥१५४॥

बकरो नारी बधिया बक,

गुण निपजे हो टले पाप बिकार ।

स्वपाते गुण नहि नीपजे

सुषमव थी हो करो जरा विचार ॥ १५५ ॥

मरणा बचाबणा एक है,

एतो जाणो हो विकसों रा बेण ।

आरे मान नहीं धर्म-पाप रो,

आरा फूटा हो दिया रा नय ॥शुद्ध०॥१५६॥

मुनि उपकारी बेहूना

पहु अण ना हो मेण्या माटा कम ।

जो श्रद्धा पामे ते वेहू,

तो पामे हो संवर नो धर्म ॥शुद्ध०॥५७॥

आरत-रुद्र टले वेहुना,

श्रद्धा योगे हो धर्म-ध्यानी होय ।

उम तिरण-तारण मुनि वेहुना,

उपकारी हो मुनि वेहू ना जोय ॥शु०॥५८॥

कटि कर्म-उदय वेहू जणा,

संवर श्रद्धा हो पामे नहिं दोय ।

तो भारी-पाप वेहू ना टले,

आरत पिण हो हलको बहु होय ॥५९॥

(कदा) उपदेश वेहू माने नहीं,

(तो पिण) साधु रे हो उपदेश रो धर्म ।

(कदा) एक माने एक माने नहीं,

जो माने हो तिणरा टलिया कर्म ॥शु०॥६०॥

किणरी शक्ति नहीं समझण तणी,

तिणगे पिण हो मुनि चंद्रयो हित ।

अमुक्या-विचार

तेधी वच्यदल बहु-काया वणा,
 परवल प्रोचो हो हितकारी पित ॥मुद्र०॥६१॥
 “सरदह वलाव” करेवन वणा,
 त्याहा करायो हो मुनि मेण्या कर्म ।
 सरदह वलाव जीवो वणो,
 तुल टलियो हो मिन माकवो धर्म ॥६२॥
 नीम्व आम्बादिक वृष्ट ना,
 करायो हो मुनि फाटण नेम ।
 त हितकारी वेष्ट वणा,
 तरवर ने हो मुनि कीनो खेम ॥मु०॥६३॥
 उपकार समस्त राखी नही,
 विकलेन्त्रा हो जीवो री जाण ।
 मुनि जाण तम वेदना,
 उपदरा हो हितकारी बघाख ॥मुद्र०॥६४॥
 उच नई गोंब जलावता,
 उपदरा हो करायो नेम ।

ते दाहक ग्राम बेहू तणो,

पाप टाली हो उपजायो चेम ॥शुद्ध०॥६५॥

इम मांसादि खावा तणा,

सुस करावे हो मेटण तस पाप ।

बलि मासे मरता जीव रा,

दितकारी हो मुनि मेटे मन्ताप ॥शुद्ध०॥६६॥

सूत्र भगोती शतक सातमें,

इम भाख्यो हो श्री दीनदयाल ।

निर्दोषण मुनि भोगवे,

छकाया नो हो वांछक करुणाल ॥शुद्ध०॥६७॥

जाँ जीवाँ रा शरीर रो आहार ले,

त्याँ जीवा ना मुनि वंछक होय ।

(तिम) हिंसा छूट्या वच्या जीवड़ा,

उपकारी हो मुनि रक्तक जोया ॥शुद्ध०॥६८॥

जीव मारण में हिंसा कही,

नहीं मारे हो दया रा परिणाम ।

बहु कथा-विचार

मगता जीव कथाविया

मनसा बाधा हो गया रा काम ॥ शुद्ध ॥ ६९ ॥

ॐ केइक इयमें इम कद,

‘जीवों काज हो नहिं रों कपहरा ।

एक दिसक समझवन,

नहिं मटों हा पणजीवों रा डेर’ ॥ ७० ॥

ॐ विसा कि वे कदत है—

केइक जगानी इमि कद

ऊ कथा काज हो रों चर्म उपदेस ।

पण्य जीव वे समझावियों

मिट जावे हा कथा जीवों रा ज्ञेस ॥

मण्य जीवों नुमे जिन चम जोकनो ॥ ७१ ॥

ऊ काप परे गान्ति दुवे

परी पामे हो कन्वसोवी चर्म ।

परी भज न पावो जिन पत्र रा

न ना भुम्हा हा उरुह आपा बहुमध्य ॥ ७२ ॥

(बहुकथा राज—५)

सत्र जीवाँ रे शान्ति होवे,

एहवो भाखे हो दयाधर्मी धर्म ।

कुगुरु तेने पापी कहे,

(वलि) वतावे हो मिथ्यात रो भर्म ॥७१॥

हिवे सद्गुरु कहे तुम साँभलो,

सूतर सूँ हो निरणो लेवो जोय ।

छ काया रे शान्ति कारणे,

उपदेशे हो दयाधर्म ते होय ॥शुद्ध०॥७२॥

सुगडाँग श्रुतस्कन्ध दूसरे,

अध्ययन छठे हो भाख्यो पाठ रे माय ।

अस थावर (जीव) खेमंकर वीरजी,

धर्म भाखे हो मत हणो तस वाय ॥७३॥

असथावर (रे) शान्ति कारणे,

करुणा कही हो दशमा-अंग रे माँय ।

ये सहु (सूत्र) पाठ उथापने,

मिथ्यामति हो बोले मूठा वाय ॥शु०॥७४॥

अनु (गा-विषा)

“शान्ति न हारै हँ हँ काय र,”

एवा अनपक हो पकड़ने टाय ।

विध्या-उदय ल सीधर,

तना मुग्य भी हो एवा निहल बोय ॥५॥

क्यबहार शान्ति परधीन ने

निरप भी हो निज री से होय ।

क्यबहार शान्ति ब्यागना

निगिरे फिज हा स्थाय बग साय ॥६॥

आग त्रिन अनन्ता दृषा

हँ काया रा हो शान्ति बरजत ।

● ईया हि से करने हैं—

आने बरिदल अनन्ता दृषा

करना २ हा मही जाने नहिंते कर ।

मे आग नगन धीत नहिंता

अपना २ हा बरिदल न दूई निगज ॥७॥

(अनुपगा राय—५)

दुःख भेटण उपदेश थी,

जगवच्छल हो जग ना सुखकार ॥शु०॥७७॥

जगनाथ, जगवन्धू कहा,

नन्दी-सूत्रे हो गाथा प्रथम माँय ।

सत्र जीव राखण उपदेश थी,

सुख थापे हो वन्धू पद पाय ॥शुद्ध०॥७८॥

शान्तिनाथ प्रभु सोलमाँ,

शान्तिकरता हो सब लोक रे माँय ।

उत्तराध्येन मे देखलो,

गणधरजी हो गुण जारा गाथ ॥शु०॥७९॥

कही-कही ने कितना कहूँ,

छ काया रे हो शान्तिकरता रा नाम ।

जो शान्ति न होती छ काय रे,

शान्तिकरता हो किम होता श्याम ॥८०॥

मिथ्या हेतू खण्डवा,

बलि भाखूँ हो सूत्र रो साख ।

सत्य-स्वरूप ने झोसली,

मध्य जोड़ो हो मिथ्या रा पात्र ॥श्रु०॥८१॥

वाङ्मार्थी भुत केवली,

जगत्कारक हो केवली गुरुराय ।

विवर्धका रा बाग में,

धर्मदेराना हा बीनी सुखदाय श्रु०॥८२॥

बिठ भावक सुख हर्षियो,

करे बीनती हो मुनिज गुरुराय ।

परदरी अति पापियो,

पाप करन हो अति हर्षित भाय ॥श्रु०॥८३॥

अधर्मी यो राजबी

अधर्म मी हा कर निरादिम बाप ।

गिरि गोर एक सम गिखे,

गाढ़ा-गाढ़ा हो म्बामी कर रयो पाप ॥८४॥

या हा नर पशु पंथी न,

(मिज आनि की) इति आरी हो बेरी ह्वाय ।

विनय-भाव तिणमें नहीं,

तेथी गुरुजन (माता पिता आदि)

हो आदर नहिं पाय ॥ शुद्ध० ॥८५॥

देश दुखी इण राय थी,

करडा लेवे हो हासिल दुख दाय ।

तेने धर्म सुनाविया,

बहु गुणकर हो होसी मुनिराय ॥ शु० ॥८६॥

गुण होसी परदेशी राय ने,

पशु-पंखी हो नर ने गुण थाय ।

श्रमण महाण भीखारी ने,

बहु गुणतर हो होसी सुखदाय ॥ शु० ॥८७॥

देश रे बहु गुण उपजसी,

होजासी हो करडा हँसिल दूर ।

राय१, जीव२, भिक्षु३, देश४ रे,

गुण हेते हो धर्म भाखो सनूर ॥ शु० ८८ ॥

जीव मारण परिणाम थी,

राजा रे हो माठा लागे पाप ।

बेरा न बहुगुण निपजसी,

तुमे करो हो स्वामी धर्म कष्टार ॥९७॥

चित बिनती करी शुध-भाव धी,

सुध भया री हो तुमे करो पिछाण ।

(यो) प्रतपारी-जाबक मोटको,

समकित पर हो गुण रत्नों री साण ॥९८॥

जो जीव, मिछारी, बेरा री,

करुणा में हो नई भयतो धर्म ।

(तो) अधर्म अर्ज विण किम करी,

अन बचनों रो हो ते तो साणता मर्म ॥९९॥

जीव बचावण करखे,

पपबेरा हो चित भयतो पाप ।

चौनाथी गुठ आसले

बिनती करता हो इणविष ते साक ॥१००॥

स्वामी । हिंसा जोकावो राखरी

परदरी हो होसी गुण रे धार ।

जीव बचे मरता थकाँ,

त्याँ जीवाँ रे हो गुण नाहीं लिगा ॥१०१॥

तिम श्रमण, भिखारी देश रे,

गुण श्रद्धा हो स्वामी लागे मिथ्यात ।

केवल राय ने तारणो,

या श्रद्धा हो स्वामी परम विख्यात ॥१०२॥

पिण चित इम नहिं भापियो,

ते तो श्रद्धतो हो जीव बचिया मे धर्म ।

तेथी विनती करी गुरुराय ने,

(मरता) जीवाँ रे हो कह्यो गुण रो मर्म ॥१०३॥

जीव बचावे ते पाप में,

या श्रद्धा हो श्रावक री नाय ।

जीव बचे त्याँ ने गुण होवे,

या श्रद्धा हो चित री सुखदाय ॥शु०॥१०४॥

जीव बचावणो धर्म मे,

दुखिया रो हो ते तो जाणतो मर्म ।

अनुकम्पा-विचार

सगलों रे गुण रे कारण,

कीधी बिनती हो उपराधो धर्म ॥१०५॥

जो कसर हावी इण कथन में,

केसी सामी हो केरा तिखवार ।

जीव, मिखायी, बेरा रे,

गुण बर्यो हो में तो माहीं सिगार ॥१०६॥

सगलों रे गुण रे कारणे,

बिनती कीधी हो समकित गुण जाय ।

पारं बर्य में रूपण रूपनो,

आलोखो हो जिनधर्म रे न्याय ॥१०७॥

पिछ भित भावक जिम भइता,

तिम भइता हो भी केरी स्वाम ।

नेनों री बर्य एक थी,

वधी नहिं लीनो हो निषेध रे नाम ॥१०८॥

मुनि जीव मिखायी बेरा रे,

गुण इत दा उपराध धर्म ।

या श्रद्धा चित्त शुध जाणता,
 विनती कीधी हो जैनधर्म रे मर्म ॥१०९॥
 केशी श्रमण गुरुराज री,
 चित्तजी री हो श्रद्धा थी एक ।
 (तेथी) विनती मानी भाव थी,
 चार वातों रो हो बतायो लेख ॥शु०॥११०॥
 छोडो रे छोडो मिथ्यात ने,
 जीवरक्षा रो हो तुमे श्रद्धो धर्म ।
 त्यागो कथन कुगुरु तणो,
 खोटो घाल्यो हो अनुकम्पा मे भर्म ॥१११॥
 कोई पतिव्रता सती तणो,
 एक पापी हो खण्डे शील विशेष ।
 देहत्याग माँढथो सती,
 तीहाँ मुनिजन हो दीनो उपदेश ॥११२॥
 प्रबोध पापी पामियो,
 सती नार ना हो रक्षा शील ने प्राण ।

मुनि उपकसी बेहुना,

तुमे समझे हो समझे नि सुजाण ॥११३॥

एक मौनप्रती मुनिराज री,

कोई पापी हो करतो सो पात ।

(तिष्णमे) उपदेरा बेई समझभियो,

रक्षा कीची हो मुनि भी विख्यात ॥११४॥

जो वकरो बच्चा पाप भ्रष्टसी,

तिणारे लेले हो मुनि वचिया रो पाप ।

जो मुनि बच्चा कदया कहो,

तो वकरो वचिया हो दया-वर्म है साफ ॥११५॥

कोटा कुहेसु काखणी,

हास जोकी हो राजलदेसर मोंय ।

सोंचे मन हुरा भ्रष्टा

भ्रष्टा नो हो निर्मल शुभ पाप ॥११६॥

इति पञ्चम-वाक्य सङ्गर्जम्

दोहा

साधु जीव मारे नहीं, पर ने न कहे मार ।
भलो न जाणे मारिया, त्रिकरण शुद्ध विचार ॥१॥
हणे, हणावे, भल गणे परजीवों रा प्राण ।
तीन करण हिंसा कही, श्रीजिन वचन प्रमाण ॥२॥
घोले, घोलावे, भल कहे, सावय कूड़ा वेण ।
तीनों करणे मृष्ट है, गोलो अन्तर नेण ॥३॥
जिम सत घोले साधुजी, पर ने कहे तू घोल ।
भल जाणे सत बोलियों, तीनों करण अमोल ॥४॥
निम । साधुचचावे जीव ने, पर ने कहे वचाय ।
वचिया अनुमोदन करे, त्रिकरण शुद्ध कहाय ॥५॥

अनुकम्पा-विचार

(कई) 'सात्वज-सत्य न बाल्या, किम न बचाम्यो जीव
अनुकम्पा सात्वज दुवे,' या कुशुरों री मीव ॥६॥

(उत्तर) सावध-निरवध सूत्र में, सत्य रा भाव्या मेर
पिय अनुकम्पा रा महीं वज दो खोटी लेइ ॥७॥

मिण बोसे परजीव ने, दुख अपज सुख मोंव ।

ते सत ने सात्वज क्यो, सुगहार्थेग रे मोंव ॥८॥

पर पीडाकारी महीं, दितकारी सुखदाय ।

ते सत निरवध जाणम्यो, जिन सासन रे मोंव ॥९॥

अनुकम्पा पर-जीव ना, प्राण बचावखहार ।

दुख किण भी उपज महीं, निरवध निरवे घार ॥१०॥

मय मटपा परजीव नो, दान अमय प्रमुगाय ।

किण में पाप बटावियो जैनी मय घराय ॥११॥

अमयदान महीं बालक्यो, दीनो दया छाय ।

माशा न भरमाववा, कृपा बोज लगाय ॥१२॥

(कई) "जीवबचाव मुनि नहीं पर ने न कई बचाव
स्ता न जाण बचाविया, ' इम लोटा खेल दावा ॥१३॥

ढालु-छठी



(तर्ज—चतुर नर छोडो कुगुरु नो सग)

इण साधौं रा भेख में जी,

बोले एहवी वाय ।

“छकाय रक्षा ना करौंजी,

जीव बचावौं नाय ॥”

चतुर नर समझो ज्ञान विचार ॥१॥

एहवी करे परूपणा जी,

पिण बोले बन्ध न होय ।

बदल जाय पूछ्यौं थका जी,

ते भोला ने खबर न कोय ॥ चतुर० ॥२॥

थारे पाणी रे पातरे जी,

माखौं पढ़िया आय ।

दु ख पात्रे अति तड़फड़े जी,

बूढ़ा होवे जीव काय ॥ चतुर० ॥ ३ ॥

समुद्रमन्त्रिणा

साधु देखे विण अवसरै जी,

कड़ो काढ़ के नौय ?

तब तो कहै "मष्ट काढ़याजी,

महि काढ़-यो अनरण पाय ॥ चतुर ॥४॥

(कर) मूर्खानी हावे माहिमौजी,

जतना से मूर्खा जाय ।

(तो) कपडारिक में घोंबने जी,

मूर्खा देखौ सिटाय" ॥ चतुर० ॥ ५ ॥

माछी नौय बचावयाली,

वे कहा पछी बाय ।

परतल माछा बचावियाजी,

बासी बोली में वन्दन करय ॥ चतुर ॥

कहे "जीव बचायौ पाप छे जी,

किञ्चित नही भर्म" ।

तो श्री माछा बचाविया,

बासी भद्रा रा निरुप्यो भर्म ॥ चतुर० ॥६॥

(इम चिडिया) मूपादिक थारे पातरेजी,

पड़िया ने काढ़ो वार ।

मुख सो कहो न वचावणाजी,

यो कूडो थारो व्यवहार ॥चतुर० ॥८॥

वीर, गोसालो वचावियोजी,

तिण में बतावो पाप ।

(पोते) उदिर आदि वचायलो जी,

थारो खोटी श्रद्धा साफ ॥चतुर० ॥९॥

(जो) पाप कहो भगवान ने जी,

(तो) पोते काँ छोड़ी रीत ?

उन्दिर माखा वचाविया (जी)

थारी कूण माने परतीत ॥चतुर० ॥१०॥

गोसाला ने वचायवा में,

पाप कहो साक्षात ।

(सौ) माखाँ मरता देखने जी,

क्यो काढ़ो निज हाथ ॥चतुर० ॥११॥

तब तो कहे "म्हे साध छौं जी,

(श्रावक) वेठो करों केम ।

म्हारे काम के ई गेही से जी",

बोले पाधरा एम ॥ चतुर० ॥ १६ ॥

(धारा) पाटा पर श्रावक मरे जी,

तिण ने वचावो नाँय ।

ऊँदरा-चिड़िया वंचायलेजी,

पड़े जो पातर माँय ॥ चतुर० ॥ १७ ॥

उंदरा चिड़िया वंचायलेजी,

श्रावक उठावे नाँय ।

देखो (पूरो) अंधेरो एहने जी,

ए पड़िया भरम रे माँय ॥ चतुर० ॥ १८ ॥

उन्दर चिड़िया वचावतौं जी,

शके नार्हीं लिगार ।

श्रावक ने वेठो किया में,

पाप री करे पुकार ॥ चतुर० ॥ १९ ॥

इतरी समज पड़े नहीं,

स्यमें समष्टि पावे केम ।

इकिया मोह मिष्यात में जी,

बोल मतवाला जम ॥ चतुर० ॥ २० ॥

(कह) 'साधों न कुंदर काड़णो जी,

पातरादिह धी बार ।

पाटा पर भावक मरे जी,

(तो) केडो न करों लिगार" ॥ चतुर० ॥ २१ ॥

(उत्तर) भावक केडो ना करेजी

कुंदर काड़ा जाय ।

या छोटी भ्रष्टा वाहरो जी,

मिल न पावु म्याय ॥ चतुर० ॥ २२ ॥

(या) परमग्न बात मिले नहीं जी,

वायका दोहरी जम ।

म्यापमगा भ्यों बालग्यो जी,

व बभ्रुओं की मान कम ॥ चतुर० ॥ २३ ॥

(कहे) “पेट दुखे सो श्रावकों जी,
जुदा होवे जीव काय ।

(थें) हाथ फेरो पेट ऊपरे जी,
सौ श्रावक बच जाय ॥ चतुर० ॥२४॥

(जो) जीव बचाया में धर्म छे तो,
साधु ने फेरणो हात ।

(जो) हाथ साधु फेरे नहीं,
तो मिथ्या थॉरी बात” ॥ चतुर० ॥२५॥

(उत्तर) साधु कहे हिवे साँभलो जी,
इण कुयुक्ति रो न्याय ।

(जो) हाथ फेरथा निज जीव बचे,
(तो) निज रोफेर बच जाय ॥ चतुर० ॥२६॥

हाथ फेरण रो साधु ने जी,
श्रावक केसी केम ।

हठवादी समझे नहीं जी,
श्रावक जाणे (धर्म रो) नेम ॥ चतुर० ॥२७॥

(कहे) “सम्पि आमोक्षी साधुरेजी,
फरस्यो दुख मिट जाय” ।

(उत्तर) वा (वह) चरण मुनि रा फरससीमी,
तवक्ष्य बोखो धाय ॥ चतुर० ॥२८॥
चरण साधु रा फरसणा जी,
भावक रो व्यापार ।

दाय फेरस रो कहे मर्ही जी
ब मूर करो उप्पार ॥ चतुर० ॥२९॥

सम्पि मुनीरी रह में जी,
ओ फरम मुनि काय ।

(तो) रोग मिट सावा होबे जी,
मुनि ने दाय न धाय ॥ चतुर० ॥ ३० ॥

(जो) चरण फरस दुखको मिटेजी
वा खिन व्याधा रे मोंय ।

मिटो दाय फेरस काय मर्ही जी,
पाय मन न लो मममाय ॥

(मनस्यो उपाय काय) ॥ चतुर० ॥३१॥

कूयुक्त्याँ बहु केलवो जी,

भोलाँ दो भरमाय ।

जानी न्याय बताय दे जब,

भरम तुरत मिट जाय ॥ चतुर० ॥३२॥

(कहे) “उंदिर नाँय छोड़ावणो जी,

मिन्नी मारण धाय” ।

एवी कर-कर थापना जी,

भोला दिया फँसाय ॥ चतुर० ॥३३॥

(उत्तर) आवश्यक-सूत्र देखलो जी

ध्यान आगारा रे माँय ।

उन्दरादिक ने मारवा जी,

विह्ली भपटी आय ॥ चतुर० ॥ ३४ ॥

आगे सरक बचावताँ जी,

काउसग भागे नाय ।

(बलि) टीका ने निर्युक्ति में जी,

परगट दियो बताय ॥ चतुर० ॥ ३५ ॥

हजारों वर्षों तथी जी,

निर्युक्ती निरभार ।

बबदा सौ वर्षों तथी जी,

(यो) तीक्ष्ण में विस्तार ॥ चतुर० ॥३६॥

आचार्य आगे हुआ जी

ज्ञान गुणों रा पार ।

बंदरादिक बचाववा में,

पाप न क्यो लिगार ॥ चतुर० ॥३७॥

पाप महाविस तुमे क्यो जी,

प्रभु आका रा पार ।

तेनी कभी निर्युक्ति में जी

यो मास्यो निरभार ॥ चतुर० ॥ ३८ ॥

ध्यान में जीव बचाववों जी

काइसरा भंग न होय ।

आचार्यक निर्युक्ति तथो जी

निर्यो छिन्नो जोय ॥ चतुर० ॥३९॥

अठारे से संवत पूरवे जी,
जीव वचावण मॉथ ।

कोई आचारज नहीं कह्यो जी,
पाप करम बन्धाय ॥ चतुर० ॥ ४० ॥

अपुठो इम भाषियो मिनी,
करे चुवा री घात ।

ध्यान खोल वचावताँ जी,
दोष नहीं तिलमात ॥ चतुर० ॥ ४१ ॥

(कहे) “मूसादिक ने वचायलो जी,
मिनकी ने छछकाय ।

श्रावक मरे मुख आगले जी,
तिणने वचावो के नाय” ॥ चतुर० ॥ ४२ ॥

(उत्तर) मरतो जाए वचाविया जी,
दोष मुनी ने न कोय ।

निशित्थ अर्थ में देखलो जी,
भरम हिया रो खोय ॥ चतुर० ॥ ४३ ॥

भाषक बचावा धर्म ले जी,

साधु भी लेवे बचाव ।

अवसर ठाम-कुठाम जो जी,

कस्य रो ध्यान लगाव ॥ चतुर० ॥ ४४ ॥

धर्म देशना (देना) धर्म में जी,

पिण्य देवे कस्यते ठाम ।

(तिम) जीव बचावणो धर्म में पिण्य,

करे कस्य भी काम ॥ चतुर० ॥ ४५ ॥

चिड़ियो मुच्चो धारा स्थान में जी,

धारे अठक्यो सम्मध्य रो काम ।

परछो के परछो महीं जी,

एव उत्तर दब ताम ॥ चतुर० ॥ ४६ ॥

“चिड़ियों ने तो परठणों जी,

जाणी धर्म रो साव ।”

(तो) कुच्चो मरयो भारा मान में जी,

तम परछो के नाय ? ॥ चतुर० ॥ ४७ ॥

“साधू वाजाँ म्हेँ जैन रा जी,

कुत्ता घीसाँ केम ?”

(तां) कुत्ता ने चिडिया तणो थारे,

रयो न सरखो नेम ॥ चतुर० ॥ ४८ ॥

(तिम) जीव वचावा में जाणज्यो जी,

ज्ञान से न्याय विचार ।

अवसर अण-अवसर तणो जी,

साधु तणो आचार ॥ चतुर० ॥ ४९ ॥

(कहे) “गाड़ा हेटे मरे डावडोजी,

तुमें साधू लेवो उठाय ।

श्रावक मरतो जाण ने जी,

तिण ने उठावो के नाय” ॥ चतुर० ॥ ५० ॥

(उत्तर) म्हेँ तो जीव वचायवा में,

धर्म रो श्रद्धाँ काम ।

श्रावक ने लड़का तणो जी,

म्हारे न भेद रो ठाम ॥ चतुर० ॥ ५१ ॥

(कहे) 'लट, गजायों, कतरा जी,

ढोंडा भी बीची जाय ।

ह्यों ने बचावा सुनो मुनि,

क्यों मर्हि करे बपाय ॥ चतुर० ॥५२॥

जो लड़का ने बचावसी जी,

सो लटादि लसी बपाय ।

(जो) लट गजाई रक्षा ना करे जी

तो लड़को बचावे कावै" ॥चतुर०॥५३॥

(उत्तर) दोन्यों बचाया धर्म छे जी,

ये मूठा रक्ष्या सोफन ।

मिथ्या पंथ बलायबा सी,

मूल्य गया छे भान ॥ चतुर० ॥ ५४ ॥

(बलि) सबका, लट, गजाय, नो जी,

संरक्षा नहीं छे न्याय ।

लड़को सजी पंथन्त्री ते

लट सम कहे किम याव ॥चतुर०॥५५॥

शक्य होवे तो वचायले जी,

कीड़ा मकोड़ा रा प्राण ।

अशक्य वचाई ना सके,

जॉरी मूर्ख करे कोई ताण ॥चतुर०॥५६॥

द्रव्य-क्षेत्र ना अवसरे जी,

उपदेश दे मुनिराय ।

बिन अवसर तो ना दिये जी,

(तेथी) उपदेश अधर्म मे नाँय ॥चतुर०॥५७॥

(तिम) अवसर होवे साध रो जी,

जीवाँ ने लेवे वचाय ।

बिन अवसर रक्षा न हुवे तो,

रक्षा में पाप न थाय ॥ चतुर० ॥५८॥

उपदेश१, रक्षा२, धर्म में जी,

दोर्था में शुध परिणाम ।

पिण अवसर होवे जद सदे जी

अद्वे आछो काम ॥ चतुर० ॥ ५९ ॥

(कट्ट) “लट, गजायों, कातरा जी,

होंडा थी चींथी जाय ।

ह्यों ने बचावा तपो मुनि,

क्यों नहिं करे उपाय ॥ चतुर० ॥५२॥

आ लड़का न बचावसी जी,

तो सन्तति खसी बचाय ।

(जो) लट गजाई रक्षा ना करे जी

तो लड़को बचावे कार्ये” ॥चतुर०॥५३॥

(उत्तर) दोनों बचाया धर्म से जी,

वे मूठा रक्ष्या तोफान ।

मिथ्या पंथ बलायबा जी

मूल गया ये भान ॥ चतुर० ॥ ५४ ॥

(बलि) लड़का लट गजाय, नो जी,

सगलो नहीं से म्याय ।

लड़को सभी पंचेग्री ते,

लट सम कहा किम बाय ॥चतुर०॥५५॥

(जो) जीव वचावणो पाप मे जी
गोसालो वचायो केम ।

उत्तर न आयो एहनो जी,
तब भूठ वोल्या तज नेम ॥चतुर०॥६४॥

(कहे) “गोसाला ने वचावियो जी,
चूक गया महावीर ।

पाप लागो श्री वीर ने,
म्हारी श्रद्धा बडी गँभीर” ॥चतुर० ६५॥

(बलि कहे) “साधों ने लब्धि न फोड़णी जी,
सूत्र भगोती रे माँय ।

लब्धी फोड़ वचावियो जी,
तेथी पाप कर्म बन्धाय” ॥चतुर०॥६६॥

(उत्तर) उपदेशे जीव वचायले जी,
लब्धि फोडे नाय ।

ते पिण पाप एकंत में,
थारी श्रद्धा रे माँय ॥ चतुर० ॥ ६७ ॥

अनुकम्पा-विचार

छफेदरा बठावे धर्म में जी,

जीब बचावों पाप ।

(धा) छोटी भैया तेहनी जी,

झानी जायु साफ ॥ चतुर० ॥ ६० ॥

सबका लट सरिला क्ये जी,

(ते) मूरख, मूढ़ गवोर ।

जैनी नाम धरबने जी,

भ्रष्ट किया नरनार ॥ चतुर० ॥ ६१ ॥

कीड़ा, मकोड़ा, मनुज नी जी,

सरस्वी बठावे बात ।

(त) मेघ लई मारी हुवा जी,

धर्म ही कर दया पात ॥ चतुर० ॥ ६२ ॥

बहनाथी हुष संयमी जी,

वीर अगल गुह राम ।

गोमात्रा में बचावियो जी,

अनुकम्पा बिल नाथ ॥ चतुर० ॥ ६३ ॥

(जो) जीव बचावणो पाप मे जी

गोसालो बचायो केम ।

उत्तर न आयो एहनो जी,

तब मूठ बोल्या तज नेम ॥चतुर०॥६४॥

(कहे) “गोसाला ने बचावियो जी,

चूक गया महावीर ।

पाप लागो श्री वीर ने,

म्हारी श्रद्धा बड़ी गँभीर” ॥चतुर० ६५॥

(बलि कहे) “साधों ने लब्धि न फोड़णी जी,

सूत्र भगोती रे माँय ।

लब्धी फोड बचावियो जी,

तेथी पाप कर्म बन्धाय” ॥चतुर०॥६६॥

(उत्तर) उपदेशे जीव बचायले जी,

लब्धि फोड़े नाय ।

ते पिण पाप एकंत में,

थारी श्रद्धा रे माँय ॥ चतुर० ॥ ६७ ॥

बहुधा-विद्या

(तेयी) मूठा बोज लगाविया जी,
लखि केरे नाम ।

अमुकपा रठायवा जी,

या मिथ्या-मत से काम ॥ चतुर० ॥ ६८ ॥

(इस) समुच्चय लखि रा नाम ल जी,

मोसों मे व भरमाय ।

पिण सौंधी कोई मठ जायगयो जी,

मेव सुखो चित साय ॥ चतुर० ॥ ६९ ॥

शीतल लेख्या लखि नो जी,

दोष न सूख मौज ।

सुखराई दुख ना होवे जी,

(एबी) जीव-दिखा नहिं जाय ॥ चतुर० ॥ ७० ॥

भंग उपाङ्ग प्रमथ में इण,

लखी से दोष न कोय ।

तो सिद्ध पाप बटावियो जी,

यो कष्ट कुण्ड रा गोय ॥ चतुर० ॥ ७१ ॥

दोष होवे जे लब्धि थी ते,

प्रकट बताया नाम ।

इणरो नाम न चालियो थे,

तजो कपट रो काम ॥ चतुर० ॥ ७२ ॥

(कहे) “उण्ण ने शीतल एक छेजी,

तेजू लब्धि रा भेद” ।

मद छकिया इम ऊचरे जी,

(ते) सुणताँ उपजे खेद ॥ चतुर० ॥ ७३ ॥

(उत्तर) शीतल थी शान्ती होवे जी,

जीव न विणसे कोय ।

उण्ण थी जीव मरे घणा जी,

एक किसी विध होय ॥ चतुर० ॥ ७४ ॥

(कहे) “अग्नि पाणी भेला होवे जी,

जीव घणा मर जाय ।

(तिम) तेजू शीतल लब्धि मिल्याँ जी,

घात जीवाँ रो थाय” ॥ चतुर० ॥ ७५ ॥

(तिथी) मूला चोज लगाविया जी,

लम्बि केरे नाम ।

अनुकम्पा छठायवा जी,

बो मिथ्या-मत्त रो काम ॥चतुर०॥६८॥

(इम) समुचय लम्बि रा नाम ले जी,

मोसों ने वे मरमाय ।

पिण्ड सौंभी कोई मत्त आयम्ब्यो जी,

मेव सुणो पित्त लाय ॥ चतुर० ॥ ६९ ॥

तीतल लेस्या लम्बि नो जी

दोष न सूखर मोंधि ।

सुखवाई दुःख ना होवे जी,

(एसी) जीब-हिंसा नहिं वाय ॥चतुर०॥७०॥

अंग उपाङ्गर प्रन्ध में इण्ड,

सम्भी रो दोष न फोय ।

वा पिण्ड पाप बततबियो जी,

या कपट कुगुरु रा ओय ॥चतुर०॥७१॥

दोष होवे जे लब्धि धौं तें,

प्रकट वताया नाम ।

डणरो नाम न चालियो धे,

तजो कपट रो काम ॥ चतुर० ॥ ७२ ॥

(कहे) “उण्ण ने शीतल एक छेजी,

तेजू लब्धि रा भेद” ।

मद छकिया डम ऊचरे जी,

(ते) सुणताँ उपजे खेद ॥ चतुर० ॥ ७३ ॥

(उत्तर) शीतल थी शान्ती होवे जी,

जीव न विणसे कोय ।

उण्ण थी जीव मरे घणा जी,

एक किसी विध होय ॥ चतुर० ॥ ७४ ॥

(कहे) “अग्नि पाणी भेला होवे जी,

जीव घणा मर जाय ।

(तिम) तेजू शीतल लब्धि मिल्यौ जी,

घात जीवौं री थाय” ॥ चतुर० ॥ ७५ ॥

(उत्तर) तम् लेख्या पुद्गल मखी जी,

अपित कथा दिनराय ।

सूत्र भगोटी में देखलो बें,

सोटा लगानो न्याय ॥चतुर०॥७६॥

हिंसारी कृष्ण भी जी,

सोटी-लेख्या बाय ।

जीव रक्षा रा माय में जी,

भली करवा मुखराय ॥चतुर०॥७७॥

माटी-करवा में ना कथा की,

जीव रक्षा रो काम ।

छतराम्येन बोलीस में जी,

सच्छ इर रे ठाम ॥चतुर०॥७८॥

महा मुद्र-करवा भीर में जी,

पाप करो किम होय ।

आचारि देखलो जी,

प्रभु पाप न कीमा होय ॥चतुर०॥७९॥

(कहे) “राग हुँतो तब वीर में जी,

लियो गोसाल बचाय ।

‘छद्मस्थपणे चूकिया’ म्हें,

पाप केवाँ इण न्याय” ॥ चतुर० ॥८०॥

(उत्तर) छद्मस्थ राग रो नाम लेने,

पड़िया पाप रे कूप ।

अरिहन्त आसातना करी जी,

हुवा मिथ्यात रा भूप ॥ चतुर० ॥८१॥

पंचम-गुणठाणा धणी जी,

(वलि) सराग सजमी जोय ।

संजम पाले राग से जी,

जामें दोष न कोय ॥ चतुर० ॥ ८२ ॥

संजम-राग न दोष में जी ।

असंजम-राग में दोष ।

धरमाचारज (रा) राग से जी,

मुनि होवे निरदोष ॥ चतुर० ॥ ८३ ॥

(छतर) तेसू लेखया पुद्गल भखी जी,

अधित कया मिनराय ।

सूय मगोती में देखको बें,

स्नेटा लगावो न्याम ॥चतुर०॥७६॥

हिंसायी कूर्म भी जी,

छोटी-लेखया बाय ।

जीय रक्षा रा माय में जी,

भखी लेखया सुखदाय ॥चतुर०॥७७॥

मापी-लेखया में ना कया जी,

जीव रक्षा रो काम ।

छवराप्पेन चोतीस में जी,

सहण शर रे ठाम ॥चतुर०॥७८॥

सदा दुख-लेखया वीर में जी,

पाप कदो किम होय ।

आचारगे देखलो जी,

प्रभु पाप न चीनो होय ॥चतुर०॥७९॥

दोष न लेश प्रभु कयोजी,
गोसाल वचाया माँय ।

वीतराग गोपे नहीं जी,
प्रकट देवे फुरमाय ॥चतुर० ॥ ८८ ॥

गोतम ने प्रभुजी कयोजी,
आनंद लेवो खमाय ।

प्राछित ले निर्मल हुवो ज्यूँ,
दोष थारो मिट जाय ॥ चतुर० ॥ ८९ ॥

गोतम दोष मिटायवाजी,
प्रकट कह्यो प्रभु आप ।

निज नो केम छिपावता जी,
(तुम) तज दो खोटी थाप ॥ चतुर० ॥ ९० ॥

यो प्रकट न्याय न ओलखे जी,
जारे माँय मूल मिथ्यात ।

अरिहँत वचन उथाप दे ते,
निन्हव कहा जगनाथ ॥ चतुर० ॥ ९१ ॥

धर्म-रत्ना रत्ना क्या जी

माचक रा गुण मौंय ।

धर्म-रत्ना करता धर्मों जी,

शुक्ल-लेम्बा पिण्ड पाय ॥ चतुर० ॥८४॥

व्या एक रस माच मे जी,

लियो गोसांस्तो बचाय ।

धं राग प्रशस्त प्रभु वणा जी,

धर्म लेम्बा रे मौंय ॥ चतुर० ॥ ८५ ॥

गासांला ने बचावियो जी,

पाप जाण्वा रवाम ।

तो सर्व सार्धों ने वर्जता जी,

इसको न करजो कम ॥ चतुर० ॥८६॥

केवलज्ञान मे प्रभु क्योजी,

अमुकम्पा रो धर्म ।

गोसांला न बचावियो प्रभु,

प्रकट करवा यो मर्म ॥ चतुर० ॥८७॥

आयुष मुनि रो जाणता जो,

गोतमाङ्गि गुण धार ।

विहार मुन्याँ ने करावता जी,

(थारेपिण) जामें दोष न एक लिगार ॥१०४॥

(मुनि) निश्चे देख्यो ज्ञान में जी,

ते किम टाख्यो जाय ।

ते जाणी ज्ञानी-मुनी जी,

न सक्या त्याँ ने वचाय ॥ चतुर० ॥१०५॥

सो कोसों वेर न ऊपजे जी,

अरिहँत अतिशय विशेष ।

समवसरण में ऊपनो ते,

होणहार री रेष ॥ चतुर० ॥ १०६ ॥

निश्चय होण रा नाम से जी,

गोशाल वचाया में पाप ।

उलटा न्याय लगायने जी,

थे' कर रया खोटी थाप ॥ चतुर० ॥१०७॥

ननुकम्पान्वितार

(उत्तर) आयुष आम्हो तहनोमी,

वेक्या जी जिनराज ।

निरणय ठास्वो ना टस्या (जी),

अहो साक्षा आवम कज ॥ चतुर० ॥ १०० ॥

(कदे) “गोवमादिक गणधर हुंतामी,

सुखस्य लक्ष्मि ना धार ।

अवार्ये क्यो न यचाविया जी,

शीतल लेख्यो मिकर’ ॥ चतुर० ॥ १०१ ॥

(उत्तर) भिम नहिं निम समा कया जी,

गोवमादि गुखधार ।

आयु आयु सर्व भो जी,

बलि होनहार निरवार ॥ चतुर ॥ १०२ ॥

धर्मपोष-मुनि आणियो जी

धर्म रुषी बिरवन्त ।

सर्वार्थ-मिष्ट में वेगियो वे

पूरवधर या महन्त ॥ चतुर० ॥ १०३ ॥

अनुकम्पा-विचार

(कष्टे) "गोसाला ने बचाविया ठो,

बधियो धर्या मिथ्यात ।

(विधी) पाप क्षमो भी वीर ने जी,"

एही मन में रखे जात ॥ चतुर० ॥९२॥

(वृत्तर) गोसाला ने बचावियो जी

हुबो समकित्त धार ।

भीमुख निरखो किन कियो जी

जासी मोक्ष मेंम्वर ॥ चतुर० ॥ ९३ ॥

साधू गोसाला तस्या जी,

वीर रे शरखे जाय ।

ठिरिया धर्या संसार धी जी,

भाक्यो सुतर मोंव ॥ चतुर० ॥ ९४ ॥

भावक शरखे जावियो जी,

गोसाला ने छोड ।

साधु-भावक भी वीर रा न,

सबधो गोसालो मोक्ष ॥ चतुर० ॥९५॥

मिथ्याती मिथ्यात में जी,
 हुवा गोशाला रा शीष ।
 मिथ्यात बधियों किण तरेजी,
 खोटी थॉरी रीश ॥ चतुर० ॥ ९६ ॥

श्रावक गोसाला तणा जी,
 प्रस री नहिं करे घात ।
 रुन्द मूल पिण ना भखे जी,
 या सूत्र-भगोती में बात ॥ चतुर० ॥ ९७ ॥
 तप तो सराहो तेहनो तुम,
 खोटी करवा थाप ।

अनुकम्पा रा द्वेष थी (तुमे) बोलो,
 जीव बचावा में पाप ॥ चतुर० ॥ ९८ ॥

बलि कपट करी कुगुरु कहे,
 “दो साधु बचाया नाँय ।”

खोटा न्याय लगावता जी,
 कष्टा कठा लग जाय ॥ च

अनुकम्पा-विचार

(उत्तर) आमुप आयो तहनाजी,
देख्यो श्री भिनराज ।

निराचय वास्यो ना टस्या (जी),
अ्यों साव्या आतम काव्या ॥चतुर०॥१००॥

(अरु) 'गोतमादिक गणधर हुंताजी,
अथत्य लब्धि मा धार ।

अय्यें कयों न बचाविया जी,
शीतल लेख्यों निहार' ॥चतुर०॥१०१॥

(उत्तर) नित नहिं जिन समा कस्या जी,
गातमादि गुणधार ।

जाण आयु सर्व म्ये जी,
बलि होतहार निरधार ॥चतुर०॥१०२॥

धर्मधाप-भुमि जाणियो जी,
पम कर्पी बिरतन्त ।

मचार्य-गिह में रहियो ब

पूरवपर धा मदस्त ॥ चतुर० ॥१०३॥

आयुष मुनि रो जाणता जो,

गोतमाङ्गि गुण धार ।

बिहार मुन्यौ ने करावता जी,

(थारेपिण) जामें दोष न एक लिगार ॥१०४॥

(मुनि) निश्चे देख्यो ज्ञान में जी,

ते किम टाख्यो जाय ।

ते जाणी ज्ञानो-मुनी जी,

न सक्या त्यों ने बचाय ॥ चतुर० ॥१०५॥

सो कोसों वेर न ऊपजे जी,

अरिहँत अतिशय विशेष ।

समवसरण में उपनो ते,

होणहार री रेष ॥ चतुर० ॥१०६॥

निश्चय होण रा नाम से जी,

गोशाल बचाया में पाप ।

उलटा न्याय लगायने जी,

थे कर रया खोटी थाप ॥ चतुर० ॥१०७॥

ધનુષ્યા-વિચાર

સત્ત્વ હેતુ સુખ સમભક્તી ગી,
આમે હુઝ વિવેક ।

પદ્મપાત્ર તમ પામસો જી
મિરમસ સમક્ષિત્ત એક ॥ ચતુર ० ॥ ૧૦૮ ॥

મિધ્યા-સરજીય ને કરી ગી,
જોફ સુગત ધર મ્યાય ।

હુઝ માત્રે મરુષા પદ્મા ગી,
આનેંદ મજ્જલ ધાય ॥ ચતુર ૦ ॥ ૧૦૯ ॥

સંવત્ત કાળીસે તયો ગી
હીયોંસી રે સાલ ।

આપાફ હુક્લા પંચમી ગી
વગત મંગલ માલ ॥ ચતુર ૦ ॥ ૧૧૦ ॥

ૐ શાન્ત સમ્પર્ષમ્

दोहा

सबल निबल ने मारता, देख्या दीनदयाल ।
हितकर धर्म परूपियो, जीव दया प्रतिपाल ॥१॥
निरबल जीव वचायवा, सबलों ने समझाय ।
त्यामें पाप बतावियो, केइक कुमति चलाय ॥२॥
मांसादिक छुड़ाय दे, अचित वस्तु रे साय ।
एकान्त पाप तिण में कहे, केइ कुबुद्धि उठाय ॥३॥
कहे मिश्र श्रद्धाँ नहीं, श्रद्धयाँ हो मिथ्यात ।
धर्म पाप एकान्त है, यो खोदो पखपात ॥४॥

मल्ल-पाप बहु-निर्भय, सूत्र मगोठी देख ।
 मूलपाठ मनु भासियो, (तेजी) कूड़ो धारोसेछा ॥१॥
 द्वेष अनुकन्या-दान रो, क्योंरे है घट मोंष ।
 विणने सत-वध लावबा, दानी इम समम्भया ॥२॥
 अतु चौमासो आबियो, वर्षा वर्षे ओर ।
 लट गजाई डेंडका, उपन्या साख किरोर ॥३॥
 एक बेरया एक साधु रा, भल्ल मो मम हुलसाय ।
 तिय बला में जीखर-भा बेल्ल गाड़ी मोंष ॥४॥
 साधुमल्ल तो साधु रा, बरौन केरे काम ।
 बेरया अभिलाषी ठिको, जावे बेरया घाम ॥५॥
 गाड़ी बसवा बगदिया, जति अनम्या जाय ।
 इतना में बिजली पड़ी, दोइ मुखा ते मोंष ॥६॥
 धर्मी पापी कोण छ इण कोणों रे मोंष ।
 दिसा पान सारणी देखो अर्थ बताय ॥७॥
 तब तो त घट उपरे, माय बरान काम ।
 आवा गस्ता में मुखा, किणरा दुध परिणाम ॥८॥

धर्म लाभ तिणने हुवो, हिंसा तणो तो पाप ।
 गाड़ी आरंभ थी हुवो, यूँ बोले ते साफ ॥१३॥
 वेश्या अर्थे नीकल्यो, तिण मे धर्म न कोय ।
 एकान्त-पाप रो काम ए, यो साँचो लो जोय ॥१४॥
 वेश्या अर्थी जाणज्यो, एकान्त-पाप रे माँय ।
 दर्श(न)अर्थि गाड़ी चढ्यो, धर्म-पाप बेहुथाय ॥१५॥
 मन्दमति यों बोलिया, तब ज्ञानी कहे एम ।
 मिश्र तुमे नहिं मानता, (दिवे) बोली बदलो केम ॥१६॥
 तब पाछा ते यों कहे, दर्शन धर्म रो काम ।
 गाड़ी चढ़नो पाप में, इम जूदा बेहु ठाम ॥१७॥
 तो इमही तुम जाणलो, अनुकम्पा (धर्म)रो काम ।
 आरँभ समझो पाप मे, इम जूदा बेहु ठाम ॥१८॥
 अणसरते आरँभ हुवे, दर्शन केरे काम ।
 विन आरँभ दर्शन करे, तो चढ़ता परिणाम ॥१९॥
 अणसरते आरँभ हुवे, अनुकम्पा रे काम ।
 विन आरँभ करुणा करे, तो चढ़ता परिणाम ॥२०॥

प्रभुकम्पा-विचार

अस्प-पाप बहु-निर्भर, सूत्र भगोवी देख ।
 मूलपाठ प्रभु भाखियो, (तेषी) कूको बारोलेखा ॥१॥
 द्वेष अनुकम्पा-दान रो, ज्योरे हे पट मौंय ।
 तियने सत्त-वय लायबा, ज्ञानी इम समम्भया ॥२॥
 अतु भीमासो अप्रवियो, वर्षा बर्ये जोर ।
 सठ गजार्ई बेंडक, जपन्या लाख क्रियेर ॥३॥
 एक बेरया एक साधुरा, मऊ मो मन हुलसाय ।
 तिण बेला में जीसरया भठ गायी मौंय ॥४॥
 साधुभक्त तो साधु रा, दरान केरे काम ।
 बेरया अमिलापी विफो, जावे बेरया धाम ॥५॥
 गायी बलता बगदिया, जीब अनन्ता जाय ।
 इतना में बिजली पड़ी, दोइ मुखा त मौंय ॥६॥
 धर्म पापी दोख छ इस दोणों रे मौंय ।
 दिसा यत्न सारली, बेबो अर्थ बचाय ॥७॥
 तब तो ते पट ऊपर, माय दरान आम ।
 अस्ता रता में मुभा, तियरा गुण परिणाम ॥८॥

ढाल-सातवीं



(तर्ज — वीर सुणो म्हारी वीनती)

कन्दमूल भखे एक मानवी,

भूख दुखडो हो सह्यो नहि जाय ।

समभू तेने छोड़ाविया,

अचित वस्तु थी हो दीवी भूख मिटाय ॥

भवियण जिनधर्म ओलखो ॥१॥

कन्दमूल (और) भूखा पुरुष री,

करुणा में हो बतावे पाप ।

या श्रद्धा मन्दौं तणी,

खोटी दीसे हो जानी ने साफ ॥भ० ॥२॥

इम एकान्त पाप परूपता,

नहिं शक्के हो कुगुरु काला नाग ।

अमुकपा-विचार

अमुकम्पा छठाय मे, - दर्शन जाये धर्म ।
 जो पा मर्या धारसी, साक्षा वैषसी कर्म ॥२१॥
 कीदा कराया भल आशिया, दर्शन सुख परिणाम ।
 कीदा कराया भल आशिया, कहरा आये कर्मा ॥२२॥
 यो तो न्याय न जाणियो, पढ़ण टेक अनजान ।
 करण भोग बिगा विचार, मिथ्यामति अमान ॥२३॥
 कृपा हेतु लगाय मे, मिथ्यामत थापयत ।
 ते लंघन करें गुप्त से, मुख्यमो धर मति न्वत ॥२४॥
 सात दृष्टान्त तेन दिया, मिथ्या थापण पण्य ।
 स्लेख बपनमुद्र आशिया नाम धरयो संत ॥२५॥
 लम्बा इपन स्लेख न, एका लोटा म्याय ।
 त तो कपता ना बका जैनी नाम धरय ॥२६॥
 ज्योरी बुद्धि निमली, त सुख रे धिक्कार ।
 मूरख सुख मादिन दुष्मा दुष्मा काली धार ॥२७॥
 दिख ग्यहन माना तणा, करें बहुत विचार ।
 अविषण भावपरी सुणो, ज्ञान-दृष्टि रिस्कार ॥२८॥

बली होको, मांस, मुरदा तणो,

नाम लेवे हो भ्रम घालण काम ॥भ०॥७॥

फासु-अन्न थी मरता राखिया,

तिण रो तो हो छिपावे नाम ।

जाणे खोटी-श्रद्धा चोढ़े पढे,

जद बिगड़े हो ऊँधा-पन्थ रो कामा ॥भ०॥८॥

कोई जीव मारे पंचेन्दरी,

भूख दुखड़ो हो मिटावण काम ।

(तिणने) समझाय अचित्त अन्न से,

पाप मिटायो हो कोई शुध परिणाम ॥९॥

जीव वचायो पंचेन्दरी,

तिण रो टलियो हो दु ख आरत पाप ।

मारणवाला ने टल्यो,

हिंसाकारी हो मोटो कर्म सन्ताप ॥भ०॥१०॥

इम मरताँ ने मारणहार रे,

शान्ति करता हो सायक बुद्धिमान ।

जमुष्पा-विचार

इण भठा रो मरन पूषिषा,

चर्चा में हो जाने इय भाग ॥म०॥१॥

भोलाजन भेला करी,

छोटा हेतू हो थोषा गाल बजाय ।

घर में घुम घुरकाय ने

इण बिष धी हो रया फन्व बहाया ॥म०॥४॥

सुशो दहान्त दिबे तदना,

किणुबिष बाल हो त आल-पंपाल ।

पुइबन्त मुइ धी परस ल,

निरपुखी हो पैस माया जाल ॥म०॥५॥

(क) “सो मसुप्प न मरता रात्रिया,

मूला गाजर हा जमीकन्द लवाय ।

(क) मरता रात्रिया सा मानवी,

कापा पामी हो त्यो न अणुगल पाय” म०॥६॥

इय भासों (न) भरमायग,

गाजर मूसों य हो मुग्र भाण नाय ।

बली होको, मास, मुग्दा तणो,
 नाम लेवे हो भ्रम घालण काम ॥भ०॥७॥
 फासु-अन्न थी मरता राखिया,
 तिण रो तो हो छिपावे नाम ।
 जाणे खोटी-श्रद्धा चोढ़े पड़े,
 जद विगड़े हो ऊँधा-पन्थ रो काम ॥भ०॥८॥
 कोई जीव मारे पचेन्दरी,
 भूख दुखड़ो हो मिटावण काम ।
 (तिणने) समभाय अचित्त अन्न से,
 पाप मिटायो हो कोई शुध परिणाम ॥९॥
 जीव वचायो पंचेन्दरी,
 तिण रो टलियो हो दुख आरत पाप ।
 मारणवाला ने टल्यो,
 हिंसाकारी हो मोटो कर्म सन्ताप ॥भ०॥१०॥
 इम मरतों ने मारणहार रे,
 शान्ति करता हो सायक बुद्धिमान ।

मनुष्य-विचार

इस भद्रा रो मरन पृथिया,

बर्बा में हो जावे दूर भाग ॥म०॥३॥

मोक्षमन मेला करी,

तोटा हेतु हो योथा गन्ध बजाय ।

पर में पुन पुनश्चय मे,

इस विषयी हो रघा पन्थ बलाया ॥म०॥४॥

मुखो दृष्टान्त दिवे तेहमा

किष्किषि बोलो हो ते बाल-पपाल ।

मुद्रमन्त मुद्र भी परल ले,

निरुखी हो कैसे माया जाल ॥म०॥५॥

(कले) 'सो मनुष्य ने मरता राखिया,

मूला गाजर हो अमीकन्ध कवत्य ।

(कले) मरता राखिया सो मानवी,

काचो पात्री हो ह्योने अष्टागल पाव ॥म०॥६॥

इम भोलो (ने) मरमायवा,

गाजर मूलो रा हो मुख चाखे नाम ।

जीव वचिया पुत्र (धर्म) माने नहीं,

आरँभ ना हो मुख आणे वोले ॥१५॥

जीव वचे आरँभ मिटे,

पुन्य-धरम हो तिणे मे श्रद्धे नाय ।

आरभ थी जीव उगरे,

एवा प्रश्न ते हो पूछे किण न्याय ॥१६॥

अग्नि, पाणी, होका नो वली,

घस-मांस ना हो मन्द दृष्टान्त गाय ।

मुरदा खवायाळ रो नाम ले,

नहिं लाजे हो जैनी नाम घराय ॥१७॥

॥ जैसा कि वे कहते हैं —

पेट दु खे तड़फड़ करे,

जीव दोरा हो करे हाय-विराय ।

शान्ति वपराई सौ जणा,

मरता राख्या हो त्यों ने होको पाय ॥

भग्नियण जिन-धर्म ओलखो ॥७॥

अनुकम्प-विचार

एकान्त-पाप तिया में छड़े,

ते हो भूस्या हो शिव-धर्म से मान ॥११॥

जीव बचे आरेंस मिटे,

तिष्ठ में पिण हो घटाये पाप ।

ते जीव बचे आरेंस हूव,

(पणा) मरन पूछे हो कोडी नीयत साध ॥१२॥

जो पूनम-बन्ध माने महीं

आठम बन्ध ही हो पूछे ते बाध ।

चतुर बेठावे तेहने,

पुत्रपुत्र प्रोगो हो हूँ रहो किन्ध मोंत ॥१३॥

जा बर्यामासा मान नही,

छटा-छटा भा हो पूछे शाम्य उबार ।

ते मूरख जे संसार में,

मिथ्या-भापी हो तियरे नही विचार ॥१४॥

इय दृष्टान्ते जाण्यो,

कृपाही हो मिथ्याबादी अतोस ।

(कोई) भद्रिक अनुकम्पा करे,

अल्पारंभी हो हल्लूकमीं जोय ।

महारभी महा-परिमही,

तिणरे घट मे हो करुणा किम होय ॥१९॥

मोटी हिंसा त्रस-काय नी,

थावर नी हो छोटी सूत्र में जोय ।

आवश्यक, उपासक, दशा,

भगोती में हो प्रभु भाखी मोय ॥२०॥

मोटी हिंसा मूठ चोरी री,

आवक रे हो व्रत री मर्याद ।

(तेथी) अल्पारंभी आवक कछा,

आँख खोली हो देखो संवाद ॥भवि०॥२१॥

दया भाव दिल आणते,

सो मनखाँ रा हो वचावसी प्राण ।

ते अनूपारंभी जाणज्यो,

अनुकम्पा रो हो यो मर्म पिछाण ॥२२॥

अनुसन्धान-विचार

(बलि) नर मार मनुष्य बचाविया,
मंमार्द्र नो हो एम इहु मगाम ।

एवा कूटस्थान्त मेलवे,
त सुणने हो शामी लग्गा पाय ॥१८॥

सी बन्ना बुमिहत्तय मं
अन्न बिना हो मरे उखाइ माँव ।

कोइक मारे जस कप वे
सी अर्जा मे हो मरता राख्वा मिमाव ॥मन्त्रि ३८॥

विमदिक काळे अन्न बिना
सी अर्जा रा हो सुदा होवे जीव कप ।

उदरे कछेरा मुखा पविषो
कुलके राख्वा हो त्वनि तेह बुचान ॥मन्त्रि ३९॥

बके मरता देखी सी रोगकर
मंमार्द्र बिना हो ते छाजा न बान ।

कोई मंमार्द्र को एक मनुष्य ही
सी अर्जा रे हो शान्ति बिधि बचाय ॥मन्त्रि ४०॥
(अनुसन्धान-विचार ४)

(कोई) मदिक अनुकम्पा करे,

अल्पारभी हो हल्लरुमी जाग्र ।

महारंभी महा-परिग्रही,

तिणरे घट में हो करुणा किस होय ॥१९॥

मोटी हिंसा त्रस-काय नी,

थावर नी हो छोटी सूत्र मे जोय ।

आवश्यक, उपासक, दशा,

भगोती मे हो प्रभु भाखी सोय ॥२०॥

मोटी हिंसा भूठ चोरी री,

श्रावक रे हो व्रत री मर्याद ।

(तैथी) अल्पारंभी श्रावक कछा,

आँख खोली हो देखो संवाद ॥भवि०॥२१॥

दया भाव दिल आणने,

सो मनखाँ रा हो वचावसी प्राण ।

ते अल्पारंभी जाणज्यो,

अनुकम्पा रो हो यो मर्म पिछाण ॥२२॥

धनुःकम्पा-विचार

अस्फारमी नर हुबे

ब्रसगोब ने हा से मारे कम ।

अनुकम्पा उठावण कारणे

वाँ तजियो हो बोलण रो नेम ॥२३॥

पंचेन्ग्री पंचेन्ग्री सारीला

एवा बोले हो कुगुरु कृपा बोल ।

पाखी मांस सरीखो करे,

बर्बा कीया हो कुल जावे पोल ॥२४॥

पाखी अचित पीबो तुम्हें,

मांस अचित हो खावो के नौब ।

तब करे 'मैं सावो नही,

मांस आहार हो महा कर्म वैषाय ॥२५॥

मांस आहार नरक (रो) हेतु है,

ठागाचेंग हो ख्याई रे मांस ।

मैं साधू बाजो जैन रा

मांस खाव हो साधुवा बूढ जाय" ॥ २६॥

मांस पाणी एक सरीखा,

मूँडा थी दो तुम्हें कहता एम ।

(पोते) काम पढ़थो जद बदलिया,

परतीतो हो थारी आवे केम ॥भवि०॥२७॥

पाणी, मास अचित बेहू,

पाणी पीवो दो मांस खावो नाय ।

तो सरखा हिवे ना रखा,

किम भोलाँ ने हो नाख्या भर्म रे माँथ ॥२८॥

पाणी पीवे सजम पले,

मास खादे हो साधू नरक में जाय ।

(तेथी) सातों दृष्टान्त सरिखा नहीं,

योग्य-अयोग्य हो त्या मे अन्तर थाय ॥२९॥

जो सम परणामी साधु रे,

पाणी माँस में हो बहुलो अन्तर होय ।

तो गृहस्थ रे सरिखा किम हूवे,

पक्ष छोडी हो ज्ञान-नयने जोय ॥३०॥

अनुकम्पा-विचार

अस्फोरभी नर हुबे,

त्रसजीव ने हा से मारे फेम ।

अनुकम्पा कृपाका कारण

हाँ तजियो हो बोलण रो मेम ॥२३॥

एकेन्त्री पंचेन्त्री सारीला

एवा बोल हो कुगुरु बूझा बोल ।

पाखी मांस खरीदा कइ,

जपा कीजा हा तुल जावे बोल ॥२४॥

पाखी अथित पीबो तुम्हे

मांस अथित हो भावो के नौव ।

तब कहे 'भूँ ग्रापो नही

मांस आहारे हा महा कर्म बंधाय ॥२५॥

मांस आहार मरक (ने) देतु दे,

ठागार्थेग हो उगई रे मांस ।

गद गाधू पाजा अन रा

मांस गद हा गाधुण कट जाय" ॥ २६॥

मांस न खावे साधुजी,

फासुक पिण हो जाणे नरक रो स्थान ।

अन्न, मांस सरीखो नहीं,

साधु श्रावक हो करे अन्न-जल पान ॥३५॥

जो श्रावक मांस खावे नहीं,

दूजा न हो खावे केम ।

अनुकम्पा उठायवा,

अणहूँतो हो यो घाल्यो वेम । ३६ ॥

अचित तो बेहू सारखा,

मांस खाधा हो होवे संजम री घात ।

पाणी पीधा संजम पले,

(तो) उत्थप गई हो सातो हेतु री बात ॥३७॥

ए खोटा दृष्टान्त कुगुरु तणा,

ते दीधा हो मेटण दया धर्म ।

ते समदृष्टि श्रद्धे नहीं,

चोढ़े जाणे हो खोटी श्रद्धा रो मर्म ॥३८॥

अनुबन्ध-विचार

जो मांस पाणी सरिखा कहे,

(तो) बेदु खाया हो होसी मुनि रे धर्म ॥

(बारे) बहु अभिष पफ सारखा,

बारे लेले हा नहीं राखणो मर्म ॥३१॥

जो साधु र सरिखा कहे माहीं,

(तो) कोन मान हो तब वचन मतीत ।

आप बापी आप कथाप बी,

धारी भडा हा परतण विपरीत ॥ ३२ ॥

जो साधु रे बहु सगिगा कहे,

ता सोर्छों में हो पुर-पुर बहु बाय ।

तब मांस-पाणी मुदा कह,

मृग्य वाला री हा कुण पछ बंधाय म० ॥३३॥

मांस-पाणी सरीगा कहे,

साधों र हा केता साध मूढ़ ।

पूजा अलटो-पन ता आसिया,

स्वार कह हो बुद्ध कय-कय रुद्ध ॥ ३४ ॥

मांस न खावे साधुजी,

फासुक पिण हो जाणे नरक रो स्थान ।

अन्न, मांस सरीखो नहीं,

साधु श्रावक हो करे अन्न-जल पान ॥३५॥

जो श्रावक मांस खावे नहीं,

दूजा न हो खवावे केम ।

अनुकम्पा उठायवा,

अणहूँतो हो यो घाल्यो वेम । ३६ ॥

अचित तो बेहू सारखा,

मांस खाधा हो होवे संजम री घात ।

पाणी पीधा संजम पले,

(तो) उत्थप गई हो सातो हेतु री बात ॥३७॥

ए खोटा दृष्टान्त कुगुरु तणा,

ते दीधा हो मेढण दया धर्म ।

ते समदृष्टि श्रद्धे नहीं,

चोड़े जाणे हो खोटी श्रद्धा रो मर्म ॥३८॥

धनुस्त्वाम-विचार

जीवों की रक्षा जा करे,

मिठ जाने हो तेज राग मे द्वेष ।

श्री गुरु प्रभु हम भाक्षियो

रक्षा होवे तो हो बरामों भग दत्त ॥३९॥

रत्न अमोलक वेष्ट ने

मूर्ख नर हो जाये तस कर्षे ।

जबरी मिथ्या तेमे पारखू,

अमासक हो तब जाण्या खोप ॥४०॥

धर्म है जीव बचाविया

या बड़ा हा शुभ रतन अमाल ।

गुरु कौष सरणी बद्ध

ग्याय न सुज हो मिथ्या उदय अमोल ॥४१॥

सत बोले न जीव बचाय ले

बागी तज न हा बर जीव बचाय ।

बलि करे गुहाग्र लज्जा

जीव बचार हा अधिपार दुष्टाय ॥४२॥

धन तज राखे पर-प्राण ने,

(इस) क्रोधादिक हो अठारा ही त्याग ।

छोड़े छोड़ावे भल जाण ने,

परजीवों ने हो मरता राखे सुभाग ॥४३॥

भूख मरतो हणें पंचेन्दरी,

करुणा कर हो तेने दे समझाय ।

फासुक सूँ खडी देय ने,

जीव-रक्षा हो इणविध पिण थाय ॥४४॥

माहण माहण उपदेश थी,

बचाया हो पर-जीवों रा प्राण ।

या सत्य-वचन आराधना,

जीवरक्षा हो हुई परधान ॥ भवि० ॥४५॥

चोर लूटे धन पारको,

धन धणी हो मरणे-मारणे धाय ।

समझाय चोरी छोड़ाय दी,

दोनों री हो रक्षा हुई इण न्याय ॥४६॥

अनुकम्पा-विचार

जीबों री रक्षा जा कर,

मिट जावे दो तेना राग मे द्वेष ।

श्री मुक्त प्रभु हम भालियो,

राका होने वो हो बरामों अग देख ॥३९॥

रत्न अमोलक देख मे,

मूरख भर हो जाणे तस कौपि ।

जबरी मिस्त्रा तेने पारखू,

अमोलक हो तब जाण्यो सौंष ॥४०॥

धर्म है जीव बचाविया,

या मद्धा हा शुष रतन अमोल ।

कुगुरु कौन सरगरी चहु,

भ्याय न सूजे हो मिथ्या उदय अवाप्त ॥४१॥

मन वाप्त न जीव बचाय ले

पारी तप्त न हो पर जीव बचाय ।

बलि करे सुधारन गुरुवा

जीव बचाय हा अविषाग दुहाय ॥४२॥

बिन हिंसा जीव बचाविया,

तिण में श्रद्धो हो तुम पाप-एकान्त ।

(तो) सत्यादिक थी छोड़ाविया,

सगले ठामे हो थोरे पाप रो पन्थ ॥५१॥

हिंसा तजी, मूठ छोड़ने,

चोरी तज ने हो परजीव बचाय ।

मरता राख्या मैथुन तजी,

ते अनुकम्पा हो थारे पाप रे माय ॥५२॥

भूठ चोरी व्यभिचारऋरो,

नाम लेकर हो तुमे घालो भर्म ।

भूठा हेतु लगाय ने,

छोड़ दीनी हो तुमे लाज रु शर्म ॥५३॥

ऐसा किवे कहते है —

मूठ बोलने, चोरी करने हो परजीव बचाय ।

देवे, मरता राखे हो मैथुन मेवाय ॥२१॥

(अनुकम्पा हाल—७)

अनुकम्पा-विचार

शील रखते एक लम्पटी,

रक्षित होती हो रखेन लागी कम्य ।

सम्बट ने समझावियो,

प्राण बचिया हो सती रा धर्म र साथ ॥४७॥

घन अर्थे हथे एक सेठ ने

घन पछी हा वीनों परिमहो त्याग ।

प्राण बचिया परिमह हुत्वा

रहा हुई हो सवमारग लाग ॥मवि० ॥४८॥

काधबसे हथे जीव ने,

कोप बोकायो हो जीवरक्षा रे काम ।

इस मान, मायावी पाप ने,

बोकाया हो जीवरक्षा रे काम ॥म०॥४९॥

सौ सगला में जीवरक्षा हुई,

स्व-वरना हो बली हुवा पाप ।

एतु मौली जीव बचाविया,

मोह अनुकम्पा हो रही भवानी साफ ॥५०॥

पहेली कुकर्म कीधो आकरो,

दूजी रे हो आरम्भ आश्रव साय ।

दर्शन कीधा बेहू जणी,

दान दीधो हो धानें अति हर्षाय ॥५८॥

यामें उत्तम अधम कोण है,

अथवा सरीखो हो थारी श्रद्धा रे माँय ।

न्याय विचारी ने कहो,

विवेके हो हिरदा रे माँय ॥भवि०॥५९॥

(कहे)“पेली नारी महा-पापिणी,

दान दर्शन हो तिणरा लेखा में नाय ।

पन्थ लजायो हम तणो,

कुकर्मी हो धक्का जगत मे खाय ॥६०॥

दूजी विवेको गुण भरी,

दर्शन दान रो हो तिणरे धर्म रो धाम ।

घट्टी आरंभ आश्रव सही,

तिण विना हो तिणरो किम चले काम”॥६१॥

पुष्पा-विचार

जीवन्मृत्यु-दोषी कहे,

मरता राखे हो मैथुन सेवाम ।

विष्णु-उत्तर दीजे सौमसा,

मिट जाने हो बौरी बकबाय ॥म०॥५४॥

एक विषया धारा पम्प री,

मिज पूम्परी रा हो दरान री बाय ।

बीरा पूम्प रक्षा परगाम में

छाएबी बिन हो परान नहि पाय ॥१५॥

व्यभिचार की पैसी जोड़ने,

दरान काजे हो भारी पूम्परी रे पास ।

भाबना भारी (माल) बराबियो

कारज निपम्पा हो व्यभिचार की छासा ॥१६॥

(बीजी) विषका गरीब उद्यमबती,

पट्टी पीस हो पैसा जोड़न काज ।

दरान कर (आहार) बराबियो,

कारज निपम्पा हो पट्टी र साज ॥१७॥

जीवरक्षा जिन धर्म है,

सूत्तर में हो श्री जिनजी रा वयन ।

तिण में पाप बतावियो,

शुद्ध-बुद्ध नहीं हो फूटा अन्तर-नयन ॥६६॥

कोई क्रूर कसाई समझाय ने,

मरता राख्या हो दीन-जीव अनेक ।

तिण में पाप बतावता,

त्याँरा विगड़या हो श्रद्धा ने विवेक ॥६७॥

पहेला ने उपदेश दे,

पाप छोड़ाया हो धर्म रो फल जोय ।

तो पाप मिट्या मरता जीव रा,

धर्म तेहमें हो कहो किम नहीं होय ॥६८॥

कहे “पाप छोड़ाया धर्म है,

मरता जीवाँ राहो आरत(रुद्र)मेटण पाप ।”

खिण थापे खिण मे फिरे,

खोटी श्रद्धा हो या तो दीखे साफ ॥६९॥

अनुकम्पा-विचार

‘अन्तर’ तो समझो इया दृष्टान्त थी,
मैथुन सने हो जीवरक्षा रे काज ।

परबम नारी सारस्वी,
नहिं विवेक हो नहिं तिष्ठ रे लाज ॥६२॥
कोई जीव बचावे गुण भरी
पट्टी व्यापिक हो मेमठ रे साथ ।

अनुकम्पा वस मिरमली
भारम तो हो अणुसरते कणाय ॥६३॥
अभिचार पट्टी सरीखो गहीं
इस समझो हो सब कर्म कुकर्म ।

समझे विवेकी विवेक में,
अणुसमझू रे हा अपने अतिमर्म ॥६४॥
शील अणु दर्शण कहो कुण्ड करे,
तो जीव बचावे हो कुण्ड मैथुन सेव ।

अनुकुं कुण्ड रा कण्ठा,
अपनय जोड़यो हो मेरुण कुण्ड ॥६५॥

हृणता जीव ने रोकता,

तिणमाए हो मन्द पाप वताय ॥७२॥

पहला संवरद्वार में,

अमाघाओ हो दया रो नाम ।

वीर प्रभू उपदेशियो,

श्रेणिक राजादि हो सुणियो सुखधाम ॥७३॥

दया-भाव दिल उपज्यो,

‘अमाघाए’ हो घोषणा दी सुनाय ।

जीव कोई हणो मती,

सप्तम अंगे हो मूलपाठ रे माँय ॥७४॥

सप्तम दशम अंग रो.

एक सारीखो हो पाठ सूतर माँय ।

जे कारज वीर वखाणियो,

श्रेणिक नृप हो दियो सवने सुनाय ॥७५॥

(निज) श्रद्धा उठती जाण ने,

सूतर रा हो दीना पाठ उठाय ।

अनुकम्पा-विचार

देवलध्वज तेहनी परे,

फिर जावे हो न रही एक ठम ।

ब्या-बर्मो लखाप ने,

मलाहो मल्लो हो महि नचा रो काम ॥७७॥

अहिं कसार्हे रो नाम ले

राक्या मार-या रो हो मूठ रच परपच ।

बिन मार-या जीब बचाविया

पाप असे हो मूक कर-कर लथ ॥७८॥

जीब बचाया रा द्वेप थी

रवा अटे हो एही बोल नाय ।

७. वैसा कि वे कहत हैं:—

कोई नाहर कसार्हे न मारये

मरना गल्ला हो धया जीब अवेक ।

आ लिये दोषों ने सारना

मोही सिगड़ी हो अवा बाज विचेक ॥७९॥

(अनुकम्पा बाल—७)

पाप कहे श्रेणिक भणी,

ते तो बोले हो चोड़े भूठ मिथ्यात ॥७९॥

“अमारी” धर्म जिन भाषियो,

नृप पाल्यो हो पलायो जग (देश) माँय ।

तेमाँ पाप कहे ते पापिया,

भोलाँ ने हो नाख्याँ फन्द रे माँय ॥८०॥

(कहे) “वीरजी नाय सिखावियो,

पड़हो फेरजे हो थारा राज रे माँय ।

तो श्रेणिक सीख्यो किण कने”,

(इम) भ्रम घाले हो कुगुरु मन माय ॥८१॥

(कहे) “आज्ञा न दीनी वीरजी,

उद्घोषणा हो करो राज रे माँय ।

भगवन्त न सराह्यो तेहमे,

तो किमि आवे हो तिण री प्रतीत ॥ ३७ ॥

(अनुकम्पा ढाल—७)

बहुकल्याण-विचार

(क०) "पाप हूँ तो मेरे लिए भयभीत,"
 अभी बोले हो भयभीत ही बाल ॥७६॥
 भेषिक समझती हूँ तो
 हिंसा रोकी हो सूत्र र मौख ।
 मादणो मादणो प्रभु बड़े
 मठ माये हो भेषिक रिमो सुखाय ॥७७॥
 हिंसा पुनर्दा राज्यनी
 मन्त्रमति हो गुण ने गुण पाप ।
 जीव क्या रा छेपिमा
 रूची मति भी हो गुणन में जाय ॥७८॥
 गतिनारो मन्त्रा राय (भेषिक) री
 पा मागी हो गुणन में बाल ।

७ प्रेता कि वे करने दें —
 अ निश्वास बदल चिरवने
 बदल जाय हो मोय रात्रों ही रीत ।

यो हुक्म राजा श्रेणिक तणो,
 आज्ञाकारी हो सुणायो जाय ॥८६॥
 श्रेणिक ने प्रभु ना कह्यो,
 घोषण करजे हो म्हारा स्थान रे काज ।
 तो पाप हुवो तुम कथन थी,
 सेजा रो हो वीर ने दीनो साज ॥८७॥
 बलि मोटा होता राजवी,
 स्थान घोषणा (री) हो नहीं चाली बात ।
 तो श्रेणिक घोषणा किम करी,
 न्याय तोलो हो हिरदे साजात ॥८८॥
 श्रीकृष्ण करी उद्घोषणा,
 दीक्षा लेवो हो श्री नेम रे पास ।
 साय करूँ पिछला तणी,
 ज्ञाता में हो यो पाठ है खास ॥८९॥
 आज्ञा न दीवी श्री नेमजी,
 उद्घोषणा हो करो नगरी मँभार ।

भयुक्त-गर्भ-विचार

तो धर्म भेदिक र किम हुये,

पाप मर्या हो न्हँ ता मन रे मौय ॥८२॥

मांदा-मांदा हँता यजवी,

समदृष्टि हो भिन-धम रा जाय ।

त्यो हिंसा घोडावण्य कारण,

नहिं पापणा दाकीपी सूत्र प्रमासु" ॥८३॥

(इत्तर) एबि तक कर केई मन्त्रमती,

महिं सुने हो पूछा अन्तर-जवा ।

उत्तम एवायण होय थी

अलहूना हो मुत्य काँई पयन ॥८४॥

म्याप गुणो दिवे भाव भू

भेदिक री हा सूत्र में बान ।

निज माकर पुनाय म

आता बीनी ह। इगविष माण्य ॥८५॥

म्यान-धर्मी २ धनाय हो

जाता बीता ह। बीर-धनु जब भाव ।

यो हुक्म राजा श्रेणिक तणो,
 आज्ञाकारी हो सुणायो जाय ॥८६॥
 श्रेणिक ने प्रभु ना कह्यो,
 घोषण करजे हो म्हारा स्थान रे काज ।
 तो पाप हुवो तुम कथन थी,
 सेजा रो हो वीर ने दीनो साज ॥८७॥
 बलि मोटा होता राजवी,
 स्थान घोषणा (री) हो नहीं चाली बात ।
 तो श्रेणिक घोषणा किम करी,
 न्याय तोलो हो हिरदे साचात ॥८८॥
 श्रीकृष्ण करी उद्घोषणा,
 दीक्षा लेवो हो श्री नेम रे पास ।
 साय करूँ पिछला तणी,
 ज्ञाता में हो यो पाठ है खास ॥८९॥
 आज्ञा न दीवी श्री नेमजी,
 उद्घोषणा हो करो नगरी मँभार ।

बहुधन्या-विचार

(तो) धारे लेख पाप हुको धयो,

वीरा बलासी(में)हो नहीं धर्म विहार ॥९०॥

अम्य धूप री चाली नहीं,

अधोपणा हो वीरा रे सहाय ।

इय कारय भीक्यु ने,

पाप कइयो हा धारी बस्य रे माँय ॥९१॥

कोशिक भगवो बीर से

नित्यप्रये हो कुराक-बात मैगाव ।

प्रेम धरी सुये भाव से

इय काज हो देवे जर ने साथ ॥९२॥

वीरजी माव सिखावियो,

मुम्ह धारवा हो मित लीजे मैगाव ।

(तो) प्रसु नाम गोत्र सुखवा कयो

पाप लगये हो धारी बस्य रे माँय ॥९३॥

तब हो कुशुन इय पर कहे,

स्नान धोपणा हो करी श्रेष्ठिक राज ।

दीक्षा घोषणा थी कृष्णजी,

प्रभु वारता हो कोणिकजी मँगाय ॥९४॥

श्रेणिक अरु श्रीकृष्णजी,

धर्मदलाली हो कीधी शुध-भाव ।

कोणिक भक्ती रस पियो,

धर्म भाव रो हो चितमें अतिचाव ॥९५॥

श्रेणिक ने प्रभु नहि कह्यो,

घोषण कीजे हो म्हारे स्थान रे काम ।

आव-जाव कार्य करण रो,

गृहस्थी ने हो केणो बज्यो श्याम ॥९६॥

समदृष्टि निर्मल भाव थी,

स्थान-दलाली हो कीधी श्रेणिक राय ।

तिणारे विवेक अति निरमलो,

कारण काज हो समके मन माँथ ॥९७॥

उद्घोषण आज्ञा में नहीं,

दीक्षा-दलाली हो निर्मल परिणाम ।

बहुकर-विचार

धर्म-दलालो मीपजी,

समष्टी हो करे एहका काम ॥९८॥

नाम गोत्र सुण साधु रो,

अदि कत्र कइो हो सुख रे माँय ।

कोयिक सुणवो (प्रमु) वारदा,

मच्छी रो हो पल मोयो पाव ॥९९॥

वीरजी नाय सित्ताबियो

मुम्ह बार्ता हो निव लीजे मँगार ।

बली न अयाई कामना,

हे ता समझे हा निजबुद्धि लगाव ॥१००॥

बीजा राजा री पाली नही,

छूषोपण हो स्वान वीछा रे काम ।

पिख निपेध बीसे नहीं

कीधी होब हो माये अिन राज ॥१०१॥

(आमपिण) पत्र मेरुण साधु कइ नहीं,

मात्रक मेजे हो वन्दया विविध प्रकार ।

वन्दना रो तिण ने लाभ छे,

पत्र प्रेषण हो आरम्भ निरधार ॥१०२॥

पत्र प्रेषण साधु न सीखवे,

श्रावक भेजे हो निज ज्ञान विचार ।

वन्दन-भाव तो निर्मला,

साधु रो हो नही कहण आचार" ॥१०३॥

इम सूधा ते बोलिया,

तब ज्ञानी हो तेने कहे समभाय ।

इणहिज विध तुम श्रद्ध लो,

उद्घोषण हो मति मारया रो न्याय ॥१०४॥

घोषणाकर प्रभु ना कहे,

पूछया थी हो कदा न देवे ज्वाब ।

‘स्थान’ ‘दीक्षा’ ‘अमरी’ तणी,

सरखी घोषण हो तुम्हें समझो सिताव ॥१०५॥

‘स्थान’ ‘दीक्षा’ ‘अमरी’ तणा,

कारज चोखा हो प्रभु दीना बताय ।

अनुकम्पा-विचार

समष्टि कीना भाव सूँ,
धर्म दहाली हो धर्म सो फल पाया ॥१०६॥

अमावासी नाम क्या ठण्डो
बीर माय्यो हो प्रथम संहरदार ।

ते घोषणा नेणिक करी,
महिमारो हो घोषणा रो सार ॥१०७॥

पर न क्यो खान वेवजो
दीख क्षमा हो पर न क्यो ताम ।

महिमारो तिम पर न क्यो,
एक सरिला हो तीनों से काम ॥१०८॥

हो में धर्म केबो तुम्ह
तीजा में हा बताओ पाप ।

छोटी भट्टा छ तुम ठण्डी
मियाबाणी हो तुमे दीसो दोसा ॥१०९॥

(कहे) "महिमा थी नरक ह्मी मही",
(हो) "खान दसाणी थी ह्मी मही केम

(यदि कहो) आगे एना फल पामसी,
 मतिमार रा हो तुम्हे जाणो एम ॥११०॥
 जो नरक जावा रा नाम थी,
 मतिमार में हो वताओ पाप ।
 तो श्रेणिक भक्ती बहु करी,
 थारे लेखे हो ते सगली कलाप ॥१११॥
 जो भक्ति आदि किया थीकी,
 तीर्थकर हो होसी श्रेणिकराय ।
 (तो) मतमार दलाली धर्म री,
 पद तीर्थकर हो अभयगन रे साय ॥११२॥
 मतिमार घोषणा राय री,
 थें बतावो हो मोटा राजा री रीत॥

ॐ जैसा कि वे कहते हैं —

श्रेणिकराय पटहो फिरावियो,
 यह तो जाणो हो मोटा राजा री रीति ॥३०॥
 (भनुकम्पा ढाल—७)

बहुकल्प-विषय

समदृष्टि कीना भाव सूँ,

धर्म दलाही हो धर्म नो फल पाया ॥१०६॥

‘अमापाओ’ नाम क्या तयो

बीर भाव्यो हो प्रथम संबरदार ।

ते घोषणा भेषिक क्यी,

महिमायो हो घोषणा रो सार ॥१०७॥

पर ने क्यो स्थान बेबसो

बीका लेयो हो पर ने क्यो नाम ।

महिमायो विम पर ने क्यो,

एक सरिखा हो तीनों बे काम ॥१०८॥

तो में धर्म केयो तुम्हें,

तीखा में हो बतवो पाप ।

छोटी भया बे तुम तणी,

मिण्यागवी हो तुमे बीसो ओ साफ ॥१०९॥

(कहे) “महिमार बी नरक रुकी नहिं”,

(तो) स्थान दलाही बी रुकी नहिं केम ।

(पिण) निषेध नहीं इण वात रो,

करी होसी हो कोई समदृष्टि राय॥११७॥

ब्रह्मदत्त चक्री भणी,

चित मुनि हो समभावण आय ।

आरज कर्म ने आदरो,

परजा री हो अनुकम्पा लाय ॥११८॥

पिण भारी-कर्मी रायजी,

जीवरक्षा रो हो नहीं कीनो उपाय ।

तुमे अनुकम्पा रा द्वेष थी,

मतिमार में हो(श्रेणिक ने)देवो पाप बताय॥११९॥

लाज तजी वके भाँड ज्यूँ,

वेश्या रा हो देवे दृष्टान्त कूढ़ ।

कुकर्मी अनुकम्पा किम करे,

तो पिण खोटी हो कुगुरु ताणे रूढ़॥१२०॥

(कहे) “दो वेश्या कसाइवाड़े गई,

करता देखी हो जीवाँ रा संहार ।

शास्त्र विरुद्ध तुम या कभा,

कृष्ण मामें दा थोर परतीत ॥१८॥

तीधकर चाकी मोन्हा

ग्योरे नाम दो थों किया परत्तात ।

मतिमार पोपया न्हों करी,

चार मुख थी हो (पारी) अथप गर वात ॥१९॥

जो रोत माटा राजा तथी,

ता चाकी हो पाली न्हों केम ।

अमुकम्पा रा द्वेय थी

नहिं सूजे हा निम वास्या रो नम ॥२०॥

‘मतिमारो ने ‘दीक्षा’ री पोपया,

राज-रीती हो केवज्ज स नाय ।

समदही राजा तथी,

कृष्ण, मोक्षिक हा कीधी सूय रे माय ॥२१॥

दीक्षा री अरपोपया,

कृष्ण दोकी हो वृजा राजा री नाय ।

(उत्तर) भोला ने भडकाविया,

दृष्टान्त नी हो रची मायाजाल ।

(हिवे) करड़ो उत्तर विन दिया,

नही कटे हो यॉरी जाल कराल ॥१२४॥

काँटा थी काँटो काड़णो,

तेथी सुणने हो मत करज्यो रीस ।

कुहेतु शल्य उधारवा,

करड़ा दृष्टान्त हो देऊँ विश्वा वीस ॥१२५॥

दो बायों अनुरागण तुम तणी,

पूज्य दर्शण हो गई रेल रे माँय ।

किणविध आई बायों तुम्हे,

पूज्य पूछ्या हो बायों कह्यो सुणाय ॥१२६॥

(एक) गेणो बेच्यो म्हेँ आपणो,

रोक रुपैया हो कीना दर्शन काज ।

खरची गाँठे बाँध ने,

तुम दर्शन हो आई महाराज ॥१२७॥

अनुष्मन्-विचार

दोनों जगती मवा करी

मरता रह्यो हो जीव दाय हजार ॥१११॥

एक गदयो वइ थापया,

विण छोड़या हो जीव एक हजार ।

दूजी छोड़या इण्ड विधे

एक दोम खूँ हो बोभो आभय सबाइ । ११२॥

इम कही पूछ साध मे

धर्म पाप हो कही किय न होम ।

जीव नेह छोड़विषा

छुसक्या सरली हो फरक नहिं कोय ॥११३॥

● प्रस्ता कि ये कहते हैं :—

एकज सेबालो आधय पंचिमी

तो उज दूजी हो बोभो आभय सेवाय ।

केर पदयो छोई ते इम पाप मे

धर्म होसी ही ते तो छुरिको पाप इम ॥११४॥

(अनु शास्त्र—७)

सेव्यो आश्रव एक पाँचमो,

तो दूजी आई हो चोथो आश्रव सेव ।

दोयाँ रो भेद बताय दो,

आश्रव सरखा हो थारे केवा री टेव ॥१३२॥

सुण घबराया पूज्यजी,

उत्तर देता हो ऊठे श्रद्धा री टेक ।

(दोनों) सरीखी कहाँ शोभे नहीं,

लोक निन्दे हो (लागे) कलंक री रेख ॥१३३॥

ढरता इणविध बोलिया,

गेणा वेंची हो कीधा दर्शन सार ।

तिणरी बुद्धि तो निरमली,

तेने हुवो हो धर्मफल अपार ॥१३४॥

बीजी कुलक्षणी नार है,

दर्शन काजे हो चोथो आश्रवद्वार ।

सेव्यो तं महापापणी,

(विवेक) विकलणी रे हो धर्म नार्हा लिगार १३५

बहुधर्म-विज्ञान

(बि महिना) सेवा करसूँ वाहरी,

करबी खासूँ हो बाने बेरासूँ मास ।

भूजी कहे मुझ सौमलो

इसविष मे होम आई पास ॥१२८॥

करबी नही भी मुझ कने,

आवण री हो तुम पास जाव ।

एक वीथ सेठ री जाव मे,

करबी लीपी हो बोबो आवण सेबाव ॥१२९॥

तुम बर्मान करबी कारणे

बोबो आवण हो (स्वामी) सेम्यो बित जाव ।

खासूँ न माझ बेरावसूँ,

इम बाली हो पूज्य (री) मागठ बापा ॥१३०॥

(एक) समहटी मुखियो तिहौं,

वौण (बाबाँर) पूज्यने हो पूज्यो प्रहन एक ।

(घमो) धर्मणी पापणी काख मे,

बतल्यो हो बाँरी मर्या ने बेल ॥१३१॥

(बलि) लोभ छोड-यो सिणगार रो,

ममता मारी हो समता दिल धार ।

(तेथी) पेली हुवे धर्मात्मा,

ज्ञानदृष्टि हो डम करणो विचार ॥१४०॥

दूजी दुरगुण थी भरी,

दर्शन रा हो भाव क्रिणविध होय ।

वात असम्भवती दिसे,

दृष्टान्ते हो कदा मानौं मोय ॥१४१॥

तो मति खोटी तेहनी,

कुकर्मिणी हो मोटो कीनो अन्याय ।

पाप सेव्यो अति मोटको,

फिट-फिट हो हुवे जगत रे साय ॥१४२॥

(बलि) लोभ मिट्यो नहिं तेहनो,

तीव्र वधियो हो तिणरे मोह जंजाल ।

तेथी पापणी दूजी नार है,

दर्शन रो हो थोथो आल-पंपाल” ॥१४३॥

अधुक्क्या-विजा

वन बोस्यो तिहों समझिणी,

धारी मरुत हो धारे कपन कृष्ट ।

आमव सेम्या बिहुअणी,

फरुं भाक्यो हो तुम वज ने रुद्र ॥१३६॥

बरौन सेना, बौरी सारीजी,

केर पविरी हो क्यों बौरे मौंथ ।

एक मर्मी एक पापिणी,

किम होरे हो आर मव रे मौंथ ॥१३७॥

एक सेम्यो आमव पौंचमो

बोयो आमव हो वूजी सबी न आय ।

हर पद-यो ह्यु पाव में,

धर्म होसी हा व तो सरिका बाम्य ॥१३८॥

वज सिद्धा व बालिया,

धानों री दो मवि एक सी नाथ ।

गणा वेक्या व्रत आर नई

पाप मरुका हा व नाथ गिद्याय ॥१३९॥

(तिम) वेश्या दयालू थाप ने,

जीव बचाया हो दोनों रे हात ।

लोकाँ ने भड़कायवा,

अणहोती हो थाँ थापी बात ॥१४८॥

(रुदा) गणिका हलुकर्मी होवे,

धर्मीजन री हो वा संगत पाय ।

छोड़े कुकर्म आपणा,

दया प्रकटे हो वीरा दिलरे माँय ॥१४९॥

तदा गेणा ममता उतार ने,

वकरा रा हो देवे प्राण बचाय ।

आरजकर्म रा साय से,

हिंसक नीहो दीनी हिंसा छोडाय ॥१५०॥

तिण रे विवेक अति निरमलो,

जीवरक्षा हो तिणरे घट माँय ।

लोभ छोडयो सिणगार नो,

धन री तो हो दीनी ममता घटाय ॥१५१॥

अनुकम्पा-विचार

म्यामपणी तब बोलियो,

सेवाते हो मार कीसे राम ।

तेही सिद्धा बोलिया,

(पिण) जीवरक्षा में हो कीनो सत्य नेत्यसा ॥१४४॥

कजन विचारो तुम वयां

रो बेरवा रो हो बाँ लीनो माम ।

गेया मे व्यमिचार की

जीवरक्षा रो हो स्पर् कीरो काम ॥१४५॥

बेरवा रक्षा किम करे,

अनुकम्पा हो तेने किम होय ।

कूकर्म महापापिणी,

दयाद्वेपणी हा नरकगाभिणी ओय ॥१४६॥

शोचाचारी 'कागजो',

घनरक्त हो कहे 'थोर' ने कीय ।

पवित्रदा व्यमिचारिणी

ओ मामे हो मूरख जर सोय ॥१४७॥

विपरीत-मति थी जे करे,

तेनी करणी हो विपरीत ही जोय ।

तिणरा पक्ष री थापना,

जे करे हो ते मिथ्याती होय ॥१५६॥

मिथ्यातणी व्यभिचारणी,

तेनी करणी हो नही धर्म रे माँय ।

कर्मबन्ध फल जेहने,

तेनो प्रश्न हो पूछो किण न्याय ॥१५७॥

हाथी ना स्नान सारखी,

मिथ्यामति री हो करणी शुध नाँय ।

अल्प सो पाप उतार ने,

महापाप ने हो ते तो बाँधे प्राय ॥१५८॥

मिथ्यामति व्यभिचारणी,

तेनी करणी हो श्रद्धे धर्म रे माँय ।

ते उत्तर तुमने दिये,

मे तो श्रद्धाँ हो तेने धर्म मे नाय ॥१५९॥

अनुकम्पा-विचार

(ति) प्रथम वार्ड सभ आगयी,
 धर्मकर्ता हो वं गुण री लाय ।
 धर्म लाभ विष्ट ने हुबो
 गुण निपम्बो हो अनुकम्पा प्रमाय ॥१५२॥

भूमी बेरवा दुष्टणी
 निरादिम आवे हा व्यभिचार रे मॉय ।
 विष्ट रे अनुकम्पा किम हुबे
 अग्नि में हो किम कमल लाय ॥१५३॥

गणिका बक्य बचामिया
 व्यभिचार मे हो सेव्यो रक्षा रे काज ।
 पा परतक मूठी बात है,
 धोनि धोमठा हो नहीं आवे लाज ॥१५४॥

कबा हेतू मानों तुम पखो,
 तदा कटर हो तुम्हें समझी एम ।
 बेरवा हुबे व्यभिचारणी,
 मोटीमति री हो करणी छुट केम ॥१५५॥

होवे कथन हमारो साँभलो,

में (तो) नहीं करौं हो धर्म-पाप री थाप ।

मिथ्याहेतु मिथ्यामति कथे,

तेने उत्तर हो म्हे देवाँ साफ ॥१६४॥

(एक) नारी कुकर्म सेव ने,

सहस्र नाणो हो लाई घर माँय ।

दूजी सेवी व्यभिचार ने,

द्रव्य खरचे हो साधु सेवा रे माँय ॥१६५॥

धन आणो खोटा कृत करी,

तिण रे लाग्या हो दोनो विध कर्म ।

तो दूजी सेवा करी थाहिरी,

थारे लेखे हो हुवो पाप ने धर्म ॥१६६॥

पाप गिणे व्यभिचार में,

उणरी सेवा में हो ते न गिणे धर्म ।

पोते श्रद्धा री खवर पोते नहीं,

दया उठावा हो बाँधे आरी-कर्म ॥१६७॥

अकुरंगा-विचार

बेरया-बेरया मुन्न बसी,

लम्बा छोड़ी हो बेबे छ्यन्त कुद ।

जीबों री रक्षा कठाम्पा,

जोड़ी क्यनी री हा मोंडी अति ह्य ॥१६०॥

(कहे) 'पङ्क बेरया साम्ज कृत (काम) करी,

सहस्र नाचो हो से बलि घर मोंय ।

दूजी कलाम्ब करी आपणो

मरणा राक्या हो सहस्र जीब जोकाय ॥१६१॥

पन आपणो सोटा कर्त्तव्य करी

विष्य रे छाम्बा हो दोनों विष कर्म ।

तो दूजो हुक्या वेहने,

उणु लखे हां हुबो पाप न धर्म" ॥१६२॥

एबो लोटो न्याय जगाय न

आप मन हां कर लांणी याप ।

विहु विष पाप पैली कियो,

दूजी रे हो कजो धर्म ने पाप ॥१६३॥

(बलि) ब्रसथावर नहीं गारखा,

जाँरा प्राणों में हो कष्टो फरक अपार ।

तेथी हिंसा माहीं फरक छे,

स्थूल सूक्ष्म हो सूत्तर निरधार ॥१७२॥

तिम शक्य अशक्य रा भेद ने,

हिंसा रक्षा में हो समझो चतुर सुजाण ।

(केई) समुचय नाम बताय ने,

शक्य छोडने हो करे अशक्य(री)ताण ॥१७३॥

थावर रक्षा करी ना सके,

ब्रस जीवों री हो करे देह ने साय ।

रण में पाप रो भर्म घुसावियो,

रक्षा रो हो द्वेष घणो घट माय ॥१७४॥

बध जीव रक्षा करे,

जो ममता ने हटाय ।

रो नाम ले,

कुबुद्धि चलाय ॥१७५॥

इस कथा काव न छपजे,

बर्षा में हो अठके ठामोद्यम ।

तो पिण्ड मिर्ख्य ना करे,

सीवरक्षा में हो लेवे पापरा नाम ॥१६८॥

जीव, ब्रह्म अनादी शास्त्रो

प्राण-प्रजा हो पलटे बारंबार ।

त प्राणों की पात हिंसा करी,

रक्षा न हो क्या करी सुसकार ॥१६९॥

ते रक्षा करे समभाव भी

समदृष्टि हो संवर गुण पाय ।

मोक्षमार्ग रक्षा करी,

मोक्ष-अर्थी हो करे अति हर्षाय ॥१७०॥

पृथ्व्यादिषु जटुकाय ना,

प्राणरक्षा में हो करे पाप अनाथ ।

गों हिंसा-रक्षा जाण्यो नहीं,

जोनी कर रखा हो निश्मत्त मीताय ॥१७१॥

दान, शीयल, तपभावना,

मोक्षमार्ग हो चारो सुखकार ।

अभयदान भय मेटे कह्यो,

जो देवे हो पावे भवपार ॥१८०॥

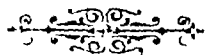
अनुकम्पा अर्थ प्रकाशिनी,

ढाल जोडी हो चूरु शहर मँजार ।

उगणीमे छियौंसो तणे,

श्रावण सप्तमी हो सुखदायी वार ॥१८१॥

सातवी ढाल सम्पूर्णम्



अनुकम्पा-विचार

समता उतारणों धर्म (हुबे) मोलरो,

इम बोले हो लेने पूछणो एम ।

वक्क समता परिमाह गूस्व रो

साधु (ने) दियो हो धर्म होबे केम ॥१७६॥

(कहे) समता उतारणों धर्म है,

असोपक हो मोल रो नहिं भाय ।

तो जीवरक्षा र कागयो

(परिमाह) धन समता हो सेटे मोल में न्योय ॥१७७॥

मगलती अठारवें रावके

परिमाह उपधि रो मिछ-मिछ म एक ।

समता भी परिमाह कयो

उपकारे हो उपधि मे लेख ॥१७८॥

उपकार समता एक है,

इम बोले हो कुगुन निर्गक ।

सूत्र पथन उत्पाप मे

मिथ्याव रा हो मारे माठा-टक ॥१७९॥

हाल—आठवीं



(तर्ज—अनुकम्पा सावज मत जाणो)

द्रव्यलाय मे बले जद प्राणी,

आरत-ध्यान पावे दुख भारी ।

विल-विलता रुद्रध्यान जो ध्यावे,

अनन्त संसार बधे दुखकारी ॥

चतुर घरम रो निर्णय कीजे ॥१॥

कोई दयावन्त दया दित धारी,

अग्नि में बलता ने जो बचावे ।

द्रव्य भाव दया तिणरे हुई,

विवरो सुणो तिणरो शुद्ध भावे ॥च०॥२॥

द्रव्ये तो उणरा प्राण री रक्षा,

भावे खोटा ध्यान घटाया ।

दोहा

न हयो ह्यात्मे जीव(वृद्धाय)मे, एकदया कही अिनराम
ज्योरो री रक्षा करे, ते पर-दया कहाय ॥१॥

न हयै तेने दया कहै रक्षा मे कहै पाप ।

एह बचन कुगुन ठ्या, री पर दया छयाप ॥२॥

स्य दया पर-दया बिनु कही, ठाखा भंग रे मौय ।

चोखे ठाखे देखलो मिथ्या तिमिर मिटाय ॥३॥

वेपकारी भर्मा घखा, मिथ्या हृदय बिरांप ।

मात्रों मे भरमात्रिया, काह दया री रेप ॥४॥

पर-दया ठापावा, पड़पेच रख्या अनेक ।

सूत्र-न्याय(सू) लाएन करै, सुणयो ज्ञान बिवेक ५

पड़त संसार करे तिण अवसर,
अभयदान देवे शुद्ध भावे ॥चतुर०॥७॥

दव बलता जीव शरणे आया,
हाथी अनुकम्पा दिल लायो ।

संसार पड़त अरु समकित पायो,
ज्ञातासूत्र में पाठ बतायो ॥चतुर०॥८॥

शून्यचित्त सूत्र वाँचे मिथ्याती,
द्रव्य, भाव रो नहीं निवेरो ।

दयाहीन कुपन्थ चलायो,
त्यौं कूगति सन्मुख दियो डेरो ॥च०॥९॥

स्वारथत्यागी परउपकारी,
दुखी दर्दी रो दर्द मिटावे ।

ते पिण माठा-ध्यान मिटावण,
तिण में पाप मिथ्यातीवतावे ॥च०॥१०॥

॥६॥ (कहे) “साधु गृहस्थ ने ओपध देने,
दुख आरत तिणरो न मिटावे ।

अनुकम्पा-विषय

यह सपकार इणभव परभव रो,

विवेक विकल यो भेद न पाया ॥च०॥३॥

द्रव्य आग स बलवा रुम्हा,

आव आग विणुनी टल जाने ।

आरत रुद्र ध्यान पन्था सुँ

शाम्भुभाष विणुरे मन अर्पि ॥च०॥४॥

समष्टी शुद्ध शान से अत्ये

लाप बले छोटी ध्यान ते ध्यावे ।

तपी अनुकम्पा लाव बचाने

समक्षित लक्ष्य इत्नी बताने ॥च०॥५॥

भावदया विणुर शुद्ध भावे,

द्रव्यदया भी भाव ते आव ।

ते भी अनुकम्पा लीव बधाया,

पश्य-संसार सूत्र बताने ॥चतु०॥६॥

केरएक जीव, जीवों ने बधाया,

अणुलाघो समक्षित गुण पाव ।

चौमासे दर्शन अर्थ न जाणो,

इणविध त्याग क्यो न करावो॥चतु०॥१५॥

राते बखाण सुणावण काजे,

आतरो पाड़ण त्याग करावो ।

वर्षते पाणी वह सुणवा ने आवे,

तिण सुणवा में धर्म बतावो॥चतु०॥१६॥

गेही रो आणो जाणो सावज,

त्रिविध-त्रिविध भलो नहीं जाणो ।

(तो) बखाणादिक ने पाप मे केणा,

आया विना किम सुणे बखाणो॥चतु०॥१७॥

जो बखाणादिक सुणवा में धर्म है,

आवा-जावा रो साधु न केवे ।

तो आरतध्याण मेटरण में धर्म है,

औषधादिक साधू नहिं देवे ॥चतुर०॥१८॥

वाहरण चढ़ बखाण में आवे,

औषधादि देई आरत मिटावे ।

बहुकम्पा-विचार

तेजी पाप में गृहस्थ ने केवों,

साधु न करे ते पाप में आवे" ॥च०॥११॥

(उत्तर) चौमासे उत्पत्ति लीवों री जगणी,

गामासुगम बिहतर न करायो ।

त्रिबिधे (त्रिबिधे) साधू त्यागज कीया,

सुत्र में साधु ने वतायो निरखो ॥च०॥१२॥

साधु न करे त पाप में गयो

तो चौमासे (में) साधु ने ब्याखो न जायो ।

गद्दी चौमासा में बन्दण जावे,

(तो) सिखमें एकम्ब-पाप बतायो ॥च०॥१३॥

बन्दण का ता कम्पा करावे,

चौमास सेवा रु माद बढ़ावे ।

पन्थी, पन्थ बढ़ावण कारण,

धर्म बही-बही न लक्षपावे ॥चतु०॥१४॥

जा साधु न करे ते पाप में आवे,

तो गृहस्थ न पाप में क्यों न वतायो ।

भेषधारी कहं म्हे हिंसा छोडावाँ,
 (तो) उपदेश देवा नेक्यों नहि जावे ॥२३॥
 ठोड़ (घर) वेठा उपदेश देवे तो,
 दस-वीस जीवाँ ने दोरा समजावे ।
 (जो) उद्यम करे चार महिना रे माहीं,
 तो लाखौं जीवाँ री हिंसा टलावे ॥२४॥
 सौ घरों अन्तर तपस्या करावण,
 आलस तज उपदेशण जावे ।
 सौ पग गया (लाखौं कीड़ा री) हिंसा छुटे छे,
 तो हिंसा छुड़ावण क्यो न सिधावे ॥२५॥
 शीचा लेतो जाणे सौ कोस ऊपर,
 (तो) भेषधारी भेष पेरावा जावे ।
 एक कोस पर (कीड़ा री) हिंसा छुटे छे,
 कोड़ा री हिंसा क्यो न छुड़ावे ॥२६॥
 जब तो कहे "वकरादि पँचेन्द्री,
 हिंसा री हिंसा छोडावाँ जावाँ ।

अनुकम्पा-विचार

दोनों का राज सरीखा आया,
 छुट भावों से वेदु कल पावे ॥५०॥१९॥
 पक्ष में भाव से धर्म बताने,
 धीमा में पाप से जाने बाणी ।
 मोला ने भ्रम में पाव बिगोया,
 तेपिण बूजे से कर-कर ताणी ॥५१॥२०॥
 (करे) "उपदेस देई : हे हिंसा पुकारों,
 आहार छोड़ी उपदेस न कावों ।
 कोरा आँखिरे हिंसा पूट तो
 आलस दोर में तुर्त ही कावों" ॥५२॥ १॥
 (उत्तर) धर्म नाम धरुण पत्रे,
 मोला आये दयागुण ताणी ।
 हिंसा छोड़वों सुख से मोल,
 पिण काम पढ़ना मोले फिरती बाणी ॥२१॥
 बिबिबा, माछा, लटा, गजरावों,
 गरी रे पा देह चोप्या जाव ।

हिंसक थी मरता जाणी ने,

उपदेश देई जीव छुड़ावे ॥चतुर०॥३१॥

हिंसादि अकृत्य करता देखी,

भेषधारी कहे भट समझावाँ ।

गृहस्थ पग हटे जीव आवे तो,

तिण ने तो कहे म्हे नाय बतावाँ ॥३२॥

श्रद्धा जौरी पग-पग अटके,

न्याय सुणो जानी चितलाई ।

दोनों पक्ष री सुण ने बातों,

सत्य ग्रहो तो है चतुराई ॥चतुर०॥३३॥

बकरा री हिंसा छुड़ावण काजे,

(कहे कसाई ने) “पापी ने उपदेश देवा ने जावाँ”

भोला भरमावण इणविध बोले,

चतुर पूछे तव ज्वात्र न पावाँ ॥च०॥३४॥

श्रावक पग तले चिड़ियो मरे छे,

हिंसा हुवे छे थारे सामे ।

अमुकस्या-विचार

कीका-मकोका तो हण घणार्ह,

(त्योरी) दिमा छाकावा कर्हो-कर्हो पाषो ॥

कीका-मकोकादि हिसक री हिसा,

छोकावा में म्हें धर्म तो माषो ।

(पिय) सगले ठिकाण आप मे हिसा,

छोकावा रा लघम किम ठाषो ॥१॥

तो इमादिज समम्ये रे भर्ह,

कीकादि रक्षा धर्म में आषो ।

मागादिक में मगल ठिकाण्ये,

बपावण रो लघम किम ठाषो ॥२॥

हिसा छुकावा सगले न आषो,

तिम ही जीव बपावा रो आणा ।

जीवरक्षा रो होय घरी मे,

मिप्यामति क्वोर्हो धीताखो ॥३॥

आपमा व्रत री रक्षा करे और,

परजीवो रा प्राण बचावे ।

काम पड्या से मट नट जावो ।

गृहस्थी रा पग हेटे जीव मरे जब,

हिंसा छोडावण तुम नहीं चावो ॥३९॥

तेल दुलण दृष्टान्त रे न्याय,

पगनल जीव यतावणो खोटो ।

ते दृष्टान्त श्री थारी श्रद्धा मे,

हिंसा छुडावण में होसी तोटो ॥४०॥

युक्ति पे युक्ति सुणो चित लाई,

जीव बचावणो धर्म रे माई ।

जो जीव बचावा में पाप बतावे,

वाने उत्तर (यो) दो समजाई ॥ ४१ ॥

ॐ गृहस्थ रे घर साधु गोचरी पहुँच्या,

ॐ जैसा कि वे कहते हैं—

गृहस्थ रे तेरु जाय मृण फट्याँ,

कीडियाँ रा दल माँहि रेला आवे ।

घोच में जीव आवे तेल सूँ पड़ता,

उपवेशा वेई न क्या न पुकारो,
भावक उपवेशा वत्कण पावे ॥चतु०॥३५॥

तब ता कह गेँ मौनज साधो,
मदमार क्या गेँ न पापज लाग ।

वे केता गेँ तो हिंसा पुकारो,

बाल ने बल गया क्यों सारो ॥चतु०॥३६॥

करी करी गेँ हिंसा पुकारो,

करी मदमार क्या पाप केरे ।

देवलजज क्यों फिरे अज्ञानी

बोल बल मिथ्यामत सेवे ॥चतु०॥३७॥

(कह) 'हिंसादि अहंस्व करता वंकी

उपवेशा वेई में हिंसा पुकारो ।

अहंस्व करता रा पाप मेटख में,

पुरणी करो में वेर न लावो ॥" चतु०॥३८॥

ॐ अघोरसंज्ञ क्यों पाव या धारी,

ॐ भी करते हैं पर करते नहीं उन्हें अघोरसंज्ञ
क्या जाता है ।—समाप्त ।

जो अग्नि उठे तो लाय लागे छे,

(तब) गृहस्थ ने अनरथ रो पाप थावे ॥४३॥

तिणने वर्ज ने पाप छुड़ावो,

अनरथ होता ने अटकावो ।

जो तिणने तुमे वर्जो नहीं तो,

हिंसा छुड़ावाँ यूँ मूठ सुणावो ॥४४॥

हिंसा छुड़ावाँ यूँ मुख से बोले,

तेल सूँ होती हिंसा न छुड़ावे ।

यह खोटी श्रद्धा उघाड़ी दीसे,

अन्तर अँधारो नजर न आवे ॥४५॥

(कहे) “पग से मरता जीव तुमे बतावो,

तेल से मरता तो थें न बतावो” ।

(उत्तर) खोटा बोलो मन रे मते थें,

म्हारे तेल पगाँ रो सरीखो दावो ॥४६॥

पग से मरता ने तेल से मरता,

मुनि जीवाँ री रचा में धर्म बतावे ।

गृहस्थ ने चतुस्थ करतो देखे ।

तल पदा न पीदे ने होरे,

कीकियों रा पर मोंदी जावे निरोखे ॥४९॥

(बीच में) जीव आत्र से तल से बहवा,

तल बहो-बहो अग्नि में जावे ।

तेक बहो-बहो अग्नि में जावे ॥

देवचारी भूखी रो निनेच कीके ॥ १४ ॥

जो अग्नि रुडे तो काव कजो के,

जसुवावर जीव मारवा जावे ।

गृहस्थ रा वग हुडे जीव बतावे,

तो तेक हुके ते वासुध क्यों न बतावे ॥१५॥

पग सूँ मरता जीव बतावे

तेक सूँ मरता जीव नहीं बतावे ।

बह काटी जाहा उपाही नीम

पग वासुधर भैवती नजर न जावे ॥१६॥

(जमुकण्डा राह—८)

(उत्तर) वाँ पिण में तो जीव बतारवाँ,

भूठी बातों क्यो थे उठावो ॥ चतु० ॥ ४९ ॥

थौरा हेतु थी थारी श्रद्धा में,

दूषण आवे विचारी देखो ।

सिध्या-ज्ञान मिटावण काजे,

थारा हेतु रो भाखू लेखो ॥ चतुर० ॥ ५० ॥

करता विहार मारग में थारा,

श्रावक सामा मिलवा आवे ।

मार्ग छोड़ी ने ऊजड़ जावे,

त्रसथावर री हिंसा थावे ॥ चतुर० ॥ ५१ ॥

श्रावक ने उपटपंथ जाता,

त्रसथावर (री) हिंसा करता देखे ।

(जो) हिंसा छुड़ावा में धर्म थे मानो,

तो श्रावक ने वर्जणो इण लेखे ॥ ५२ ॥

हिंसा छोड़ावणो मुख से बोले,

थोथा वादल जिम ते गाजे ।

महारी तो मझा कठोर न भटके, ।
 : , तो भखसूँवा सव पर ते कलंक बहावे ॥४७॥
 फटे कड़े "हिसक (नि) समझबों,"
 ठेल की हिसा करवा न बरजा । -
 बलि सुमाग हेतु रा कतर, - - - - - ।
 वडें ते सुण ने रीस म करजो ॥४८॥
 (कड़े) "मावक रा पग तस भग्वी में,
 जीव भर त्याने क्यों न बचाबोछे" ? ।

● प्रस्ता कि ये करने हैं:—

एक पगदंडे जीव बचावे
 त्याँ में बोधा सा जीवों ने बचता जाती ।
 मावकों में उमाद सीं मार्ग बाध्या
 बजा जीव बने असुमाधर प्राणी ॥ १४ ॥
 बोधी दूर बडाचों बोधी बने बुधे ।
 सो धमी दूर बडाचों बनो धर्म जाती ।
 बनी दूर रो नाम किर्वा बक बड
 ते बोधी भडा रो बदिनाजो ॥ १५ ॥ २५ ।
 (भबुकम्पा वास—६)

घणा पग छुड़ाया घणो धर्म जाणो ।
 घणा (पगाँ) रो नाम लिया बक उठे,
 तो खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥ ५७ ॥
 † अन्धा पुरुष रो हेतु देने,

घणी दूर रो नाम लियो बक उठे,
 ते खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥वेश०॥ २५॥
 (अनुकम्पा ढाल—८)

† जैसा कि वे कहते हैं —
 कोई अन्धा पुरुष गामान्तर जातौ,
 आँख बिना जीव क्रिणविधि जोवे ।
 कीढी माकादिक चीथतो जावे,
 तस थावर जीवो रा घमसाण होवे ॥वेश०॥ २६॥
 वेपधारी सहजे साथे हो जाता,
 अधा रा पग सूँ मरता जीवो ने देखे ।
 यह पग पग जीवो ने नहीं बतावे,
 तो खोटी श्रद्धा जाणज्यो इन लेखे ॥वेश०॥ २७॥
 (अनुकम्पा ढाल—८)

आवक वन (बजाइ) में सीब ने चीब,
 मौन साज बजता क्यों लाजे ॥चतुर०॥५३॥
 व्हो बक्य इणता ने समझावो,
 (तहाँ तो कसाई) समझ निधय नहि जायी ।
 आवक ने वन में हिंसा थी न बजो,
 जहाँ छूट हिंसा असबावर प्राणी ॥चतु ॥५४॥
 कसाई देखो माने न मान,
 आवक वो वाय चलुगौ ।
 जो ये बजो हिंसा नहीं होवे
 नहि बजो धौरी मस्य मानी ॥चतुर० ॥५५॥
 हिंसा बाबाबयी जो ये माना,
 धर्म रो धर्म युं मुक्त से बसाणो ।
 (ना) आवक पग री हिंसा छुड़ाया,
 धर्म हुवा रो क्यों नहि मानो ॥चतुर०॥५६॥
 ३ पोपा (हिंसा) बाबाया थोको परम हुवे,
 * ईसा कि ने कहे है। —
 १) वही दूर बगार्चो थोको धर्म हुवे
 २) वही दूर बगार्चो बन्दे धर्म बग्यो ।

❀ आटा री ईल्योँ रो नाम लेई ने,
 जीव वचावा में दोषण केवे ।
 तेइज हेतु थी त्यारी श्रद्धा में,
 हिंसा छुड़ाया में दूषण रेवे ॥चतुर०॥६२॥
 ईल्योँ दि जीवोँ सहित आटो छे,
 गृहस्थ ढोले छे मारग माँयो ।

❀ जैसा कि वे कहते हैं —
 इट्पाँ सुलसुलियोँ सहित आटो छे,
 गृहस्थ सूँ डुले मार्ग माँयो ।
 यह तपती रेत उन्हाले री तिण में,
 पढ़त प्रमाण होत जुदा जीव काया ॥वेश०॥२०॥
 गृहस्थ नहीं देखे आटो डुलतो,
 ते वेपधारियोँ री नजरों आवे ।
 यह पग हेठे जीव वतावे तो,
 आटो डुलता जीव क्यों न वचावे ॥वेश०॥३०॥

जीव बतला में पाप बतावे ।

ठा तेहिज हेतु थी हिंसा छुड़ाया में,

तेनी मर्या में रूपण भाव ॥ चतुर० ॥ ५८ ॥

(कोइ) अन्धा पुण्य गामांशर जाणो,

असि विम दिसा किम टाले ।

कीड़ी, गजाया मारवा आने,

त्रसबावर (जीव) पर पग बेह चाल ॥ ५९ ॥

बे पिय सइज साये ही जावो

अन्धा ने दिसा करता देखो ।

पग-पग दिसा ये न छुड़ावा,

(तेभी) लोटा बोलस्य रो तुम लखो ॥ ६० ॥

(स्वा अन्धा ने) जताय-जताय न दिसा छुड़ायी,

पापबन्ध थी करखा दूरा ।

इस कार्य किया थी पोष ओ लखो,

तो जीव बतला में दोष दे हूरा ॥ ६१ ॥

किणहिक ठौर हिंसा छुड़ावे,

किणहिक ठौर शंका मन आणे ।

मिथ्या उदय थी समझ पड़े नहीं,

अज्ञानी जन तो ऊँधी ताणे ॥चतुर०॥६६॥

गृहस्थ विविध प्रकार री वस्तु थी,

(त्रसथावर) जीवाँ री हिंसा किधी ने करसी ।

(जो) हिंसा देखी छोडावणी केवे,

तो सगलेई ठोड छोडावणि पड़सी ॥६७॥

पग-पग ज्वाव अटकता देखो,

तो पिण खोटी रूढ न छोड़े ।

मोह मिथ्यात मे डूब रह्या छे,

जीवरत्ता रा धर्म ने तोड़े ॥चतुर०॥६८॥

हिंसा छोडावणो जीव वचावणो,

दोनो ही काम धर्म में जाणो ।

अवसर ज्ञानी जन आदरता,

कर्म निर्जरा ठाण पिछाणो ॥

या श्रद्धा श्री जिनवर भाखी ॥चतुर०॥६९॥

तपती रोष जनसारी विषय में,
 पकत मरे हिंसा बहु घायो ॥चतुर०॥६३॥
 गृहस्थ रे ज्ञान न पाप लाग्य रो,
 ते करा बारो समझ में आयो ।
 वें हिंसा वेसी जोड़ावपी केवो,
 (तो) आस्यो दुरता हिंसा भी क्यों न मुकावो ।६४।
 (कहे)“गृहस्थ ही उपधी हूँ जीव मरे बे,
 सब ठोड़ बतावा ने क्यों नहिं जावा ‡”।
 तो चत्तर सिद्धो बारा हेतुरो
 हिंसा बुझावा न बें(क्यों) नहीं पावो ॥६५॥

‡ अर्थात् कि वे कहते हैं:—

श्वाश्रिक एकरथ रे अनक उपधि हूँ
 प्रसन्नानर जीव मुबार ने मरसी ।
 एक पग हँदे जीव बतावे
 त्यों ने समझी ही हीर बताववा चकसी ॥ ३१ ॥
 (अनुकम्पा वास—४)

(कहे) "समवसरण जन आता ने जाता,

केई ग पाग मे जीव मर जाया ।

जो जीव बचाया मे धर्म होवे तो,

भगवन्त कटेही न नामे बताया ॥ ७४ ॥

नन्दण मनिहार डेढको होय ने,

वीर वन्दण जाता मारग माँयो ।

तिणने चीथ माखो श्रेणिक ना बछेरे,

वीर साधु सामाँ भेल क्यों न बचायो" ॥ ७५ ॥

"तेथी जीव बताया में पाप बतावौं",

एवी कुगुरु कुतर्क उठावे ।

न्याय से उत्तर जानी देवे,

तब चुप होवे ज्वाव न आवे ॥ चतुर ० ॥ ७६ ॥

जो जीव बचावा साधु न मेल्या,

तिण थी जीव बचाया में पापो ।

तो राजगिरी सी नगरी रे माँये,

। (महा) हिंसादि कुकर्म होता संतापो ॥ ७७ ॥

अनुकम्पा-विचार

हिंसा सुखाभा में धमै बचावे,
जीव बचावा में पाप को केवे ।

ढँचा बोझों से पाप करीमे,
लोगा हनु बहुविधि दब ॥चतुर० ॥७०॥

(मुनि) सब ठामे हिंसा सुखाभा न जावे ।

सब ठामे जीव बचावा न पावे ।

अबसर की हिंसा सुखावे

अबसर जीव बचावा खावे ॥ चतुर० ॥७१॥

जीव बचावणो हिंसा सुखलप्पी,

होमों से पक्ष ही समझो लेला ।

एक में धर्म रूखा में पाते

इस भस्मे ते मिथ्यामति देखो ॥चतुर०॥७२॥

गृहस्थी रा पग हेट खीब आये तो,

साधु पताच तो पाप न जान्यो ।

मेषधारी तिरुमें पाप बतावे

परतल पोचो इन्द्रों पास्या ॥ ७३ ॥

श्रावक रो नाम तो अलगो मेली,
 साधों रा कर्तव्य मुख लावे ।
 द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रे अवसर,
 साधू कार्य किया गुण पावे ॥चतुर०॥८२॥
 सज्जा, ध्यान, तप विहार विचरणो,
 व्याख्यान, व्यावच धर्म रो कामो ।
 बल बुद्धि और क्षेत्र काल रे,
 विवेके करे साधु गुण धामो ॥चतुर०॥८३॥
 विन अवसर ये नांय करे तो,
 सज्जा ध्यान न पाप में आवे ।
 (तिम) विन अवसर जीव नाय छुड़ाया,
 (तेथी) जीव छुड़ावणो पाप न थावे ॥८४॥
 कदा केई एम परूपे,
 साधु-श्रावक (री) अनुकम्पा एको ।
 साधु श्रावक ने करणी,
 पड़े जब फिरता ही देखो ॥८५॥

अनुसन्ध-विचार

मगबन्ध ते कुकर्म छोड़ावा,

साधों ने मेर्या कटेई न बीसे ।

तो भारे लेखे उपदेश देई मे,

कुकर्म छोड़ावा में पाप विरोधे ॥चतु०॥७८॥

ओ कुकर्म छोड़ावा धर्म रे मोंई,

(पिय) उपदेश साधु अबसर नी दवे ।

तो जीव छोड़ावा धर्म रे मोंई,

अबसर स्थान विचारी लेवे ॥चतु०॥७९॥

कोई गृहस्थ उपदेश देई मे,

साध ठामे जाई (महा) हिंसा पुकारे ।

कोई पंचेन्द्रिय जीव बचावे,

वे दोसो ई धर्म समो पक्ष पावे ॥चतु०॥८०॥

हिंसा छोड़ावा ता धर्म बतावे,

जीव बचाव(पाप ओ कवे ।

ऊंधी भया वा पग-पग अटके,

वाण करी-करी दुर्गति लेवे ॥चतु०॥८१॥

जद कहे म्हारी हिंसा टलाई,

(तेथी) धर्म रो काम कियो सुखदाई ।

(तो) श्रावक श्रावक ने (मरता) जीव बतावे,

(तो) यो पिण धर्म मानो क्यों न भाई॥९०॥

साधू थी मरता जीव वचाया,

श्रावक थी मरता तिम ही वचाया ।

एक में धर्म ने दुजा में पापो,

ई भगड़ा थारी श्रद्धा में मचिया ।च०॥९१॥

वारा प्रकार रा संभोग भाख्या,

सूत्र समायंग माई देखो ।

जीव बताया संभोग लागे,

इमा नाही मूत्तर में लेखा ॥चतु०॥९२॥

श्रावक, श्रावक ने जीव बताया,

पाप लागे यो मत काढथो कूरो ।

तिण लेखे जीवों रा भेद सिखाया,

थौरी श्रद्धा मे (होसी) पाप रो पूरो॥९३॥

अनुकम्पा-विचार

साधु, साधु भी मरता जीव बताये, ।
 पाप दल अनुकम्पा गाये ।
 भावक भावक भी मरता जीव बताये,
 भट्टफट तेने पाप बताये । पुरुर० ॥८६॥
 भावक भावक न (मरता) जीव बताये,
 (तो) किसी पाप लागे किसी व्रत मागे ।
 विष्णु रो तो उत्तर मूल न बताये
 बोधा गाछ बसावा लागे । पुरुर० ॥८७॥
 सिद्धान्त (रा) बल बिन्य बोले आह्वानी
 संभोग (रो) नाम अनुकम्पा में कल्यै ।
 गाली रा गोला गुल्ल ग पलाये,
 त म्याय मुक्ता भवियल पित पाव ॥८८॥
 साधु रे संभोग भावक न नाहीं
 (विषी) जीव बतावा में पाप बताया ।
 ती) भावक साधु न जीव बताये
 विष्णु में ता धर्म तुम क्या गावो ॥८९॥

गृहस्थ रा पग हेठे उन्दिर वताया,

परतख पाप गृहस्थ रो टलियो ।

उन्दिर रे आरत रुद्धर रो,

महाक्लेश टलवा रो फल मिलियो ॥९८॥

जो विन संभोगी रो पाप टालण में,

पाप लागे यूँ थें कदा भाखो ।

(तो) उपदेशे गृहस्थ रा पाप टालण में,

थारी श्रद्धा में पाप ने राखो ॥चतु०॥९९॥

इण श्रद्धा रो निर्णय न काढ़े अज्ञानी,

दया मेटण लियो संभोग शरणो ।

पाप छुड़ाणो संभोग मे नाहीं,

शङ्का हो तो करो भवि निरणो ॥च०॥१००॥

नहीं मारण ने जीव वताया,

संभोग लागे ऐसो बतावे ।

तो पाप छुड़ावण परतख बतावो,

भागलपणो थारी श्रद्धा में आवे च०॥१०१॥

बहुधा विचार

(कहे) "जीनों रु भेद तो ज्ञान रे छाविर,
(बली) क्या रे छाविर मूँ पिय बतार्यो।

भूत भविष्य में जीव बताराया,

धर्म रो काम मूँ कहि समझार्यो॥१५॥

वर्तमान (काल) पग हेटे धाया बताराया,

पाप हुबे म्हारी मया रे मौर्यो ।"

तो भूल्या रे भूल्या रें भूल स भूल्या,

धर्म तो करयो तिहुँकाल सार्यो॥१६॥

पापराग अरु धर्म रो अपग

तिहुँकाले किया हुबे सुखार्यो ।

भूत-भविष्य में धर्म हुबे तो

वर्तमाने पाप कवापि न बार्हो॥१७॥

(जो) वर्तमान (में) जीव बताराया पापो,

तो भूत भविष्य में (बारे) पाप सँतापो ।

(जो) परोक्ष धाया (परोक्ष में) मानी दया करसो,

प्रत्यक्ष (बताया) में मिटे प्रत्यक्ष पापो॥१८॥

(कहे) “जीवों रा भेद तो ज्ञान रे स्थाविर,
 (बली) क्या रे स्थाविर भूँ पिण्य बतावों ।
 मूत भविष्य में जीव बताया,
 धर्म रो काम भूँ कहि समझवों ॥१४॥
 वर्तमान (काल) पग हेरे जाया बताया,
 पाप हुवे म्हारी भट्टा रे मॉई ।”
 तो मूल्या रे मूल्या में मूल से मूल्या,
 धर्म तो करणो तिहुँकस सदाई ॥१५॥
 पापत्याग अरु धर्म रो उषम,
 तिहुँकाले किया हुवे सुखदाई ।
 भूत-भविष्य में धर्म हुवे तो,
 वर्तमाने पाप कदापि न बाई ॥१६॥
 (को) वर्तमान (में) जीव बताया पापो,
 तो मूत भविष्य में (धारे) पाप सँतापो ।
 (को) परोक्ष बताया (परोक्ष में) भाबी क्या करमी,
 प्रत्यक्ष (बताया) में मिटे प्रत्यक्ष पापो ॥१७॥

गृहस्थ रा पग हेठे उन्दिर बताया,

परतग्य पाप गृहस्थ रो टलियो ।

उन्दिर रे आरत रुद्धर रो,

महाछेश टलवा रो फल मिलियो ॥९८॥

जो बिन संभोगी रो पाप टालण में,

पाप लागे यूँ थें कदा भाखो ।

(तो) उपदेशे गृहस्थ रा पाप टालण मे,

थारी श्रद्धा में पाप ने राखो ॥चतु०॥९९॥

इण श्रद्धा रो निर्णय न काढ़े अछानी,

दया मेदण लियो संभोग शरणो ।

पाप छुड़ाणो संभोग मे नाहीं,

शङ्का हो तो करो भवि निरणो ॥च०॥१००॥

नहीं मारण ने जीव बताया,

संभोग लागे ऐसो बतावे ।

तो पाप छुड़ावण परतख बतावो,

भागलपणो थारी श्रद्धा मे आवे च०॥१०१॥

लाय लागी गृहस्थी जब देख, । ।

(नो) तुर्त पुम्भवे रछा मन घारी ।

गण गणा गो काम गृहस्थ पर छ,

तिष्ठ में एकान्त पाप छे सोंगघारी ॥१०२॥

(कहे) 'लाय में पसे आरे करज पुके छे,

(पौष्पा) कर्म पुटण री निर्जरा भारी ।

विष पद बयौने ओ कोइ काहे, । । । ।

वह होने पाप तखो अपिहररी" ॥१३॥

इम बलता रे कर्म कटता बतावे,

कमण्डला ने पाप बतावे ।

त्यौरी तो तब परवीची आवे

ओ लाय से निखर बाहर न आवे ॥१०४॥

(कहे) 'बलता परिणाम सेंट्य नहीं रेवे (तो)

अकाम मरण बी दुर्गति आवे ।

(तेबी) विनरकस्वी ने बाहर निकलणवे, । ।

(महारो) उपसर्ग मिथ्या मन निर्मल आवे" ॥१०५॥

रे तुम्हें कहता बलसा जीयों रा,

कर्म छुटे निर्जग बहु थावे ।

निज बलवा री बात आई जद,

बाल मरण री तुम याद आवे ॥च०॥१०६॥

(जो) साधु नामधारी पिण बलता,

परिणाम विगड़धा दुर्गति जावे ।

(तो) गृहस्थी बलतो बिलबिल बोले,

ते लाय बल्या कर्म केम चुकावे ।च०॥१०७॥

ते तो महाआरत रे वस थी,

लाय बल्या संसार बधावे ।

ते अनन्त संसार रा पाप मुकावा,

दयावन्त त्याँने बाहिर लावे ॥च०॥१०८॥

ज्याँ-ज्याँ गृहस्थ रा गुण रो वर्णन,

त्याँ-त्याँ अल्पारम्भी भाख्या ।

बली हलुकर्मीपणो गुणाँ मे,

तुमे कहो धारा ग्रन्थ में दाख्या ।च०॥१०९॥

अनुकम्पा-विचार

अस्वारम्भी गुण भावक केरो,
ज्याह सुगन्धार्भेग में देखो ।

महारम्भी भावक नहीं होवे -

(तेषी) अस्वारम्भी भावक रो लेखो ॥ ११० ॥

लाय लगावे ते महा अणुगुण में,
सूत्र मॉहीं जिन इण्णविष भावको ।

(अस्यम्भ) क्षानावर्णी आदि कर्म रो कर्त्ता,
तेषी महाकर्म प्रमु पावको ॥ १११ ॥

महा क्रियाबन्ध तेने जाणो,
महा आश्रय कर्मबन्ध मो करवा ।

परजीव ने महा बेवमवाया,
पदवाहुगु यनो ते धरवा ॥ ११२ ॥

लाय पुग्घव तना गुण तो
भगवती मॉहीं इण्णविष बोल ।

अस्पकर्म क्षानावर्ण्यादि
त भी इल्लकर्म इण तात् ॥ ११३ ॥

अल्पक्रिया अल्प आश्रवी ते छे,

तेथी माठा-कर्म न बाँधे ।

जीवाँ ने बहु वेदना नहिं देवे,

(तेथी) अल्प वेदना गुण ते साधे ॥११४॥

सूत्र रो न्याय विचारी जोवो,

अग्नि लगावे महारंभी (महा) पापी ।

तिणने बुझावे ते अल्पारम्भी,

हलुकर्मी यूँ वीरजी थापी ॥च०॥११५॥

(सहजे) लाय बुझावे वो अल्पारम्भी,

तो बलता नर बचिया (महा)गुण कहिये ।

अभयदान रो पिण ते दाता,

शुद्ध परिणामी ते धर्म में लहिये ॥११६॥

(कहे) “लाय बुझावे ते अल्पारम्भी,

तो पिण पापी-धर्मी तो नाहीं ।

थोड़ा आरम्भ ने गुण में न श्रद्धाँ,

आरंभ सगला पाप रे माहीं” ॥च०॥११७॥

अस्वारम्भी गुरु आवक केरो,

ज्वाइ सुगदाभैंग में दत्ता ।

गद्दारम्भी आवक नदी होवे, -

(तेधी) अस्वारम्भी आवक रो लेखो ॥ ११० ॥

लाय सगावे त महा अवगुण्य में,

सूत्र मॉदीं गिन इत्यविष भाखबो ।

(अत्यन्त) ज्ञानावर्णी आदि कर्म रो कर्ष्य

तेधी महाकर्मों प्रभु बाखबो ॥ १११ ॥

महा क्रियावन्त तने जाण्यो

महा आत्मन कर्मवन्त नी करता ।

परजीव ने महा बेबनदाता,

पदबाहुगुंख तो ते परता ॥ ५० ॥ ११२ ॥

साब सुमध्यने तेमा गुरु तो,

मगावती मॉदीं इत्यविष बोखे ।

अस्पकर्म ज्ञानावर्णीदि,

ते नी इष्टकर्मों इत्य तोले ॥ ५० ॥ ११३ ॥

अग्नि थी मरता जीव वच्या रा,

द्वेष थी तुम इहाँ अवला बोलो ।

“अल्पारंभ तो गुण में नाहीं”,

(यो) सत्य छोड़्यो तुम हिरदा में तोलो ॥१२०॥

अल्पारंभ श्रावक (रा) गुण बोले,

निरारंभी साधु (रा) गुण जाणो ।

तेथी साधु-श्रावक रो धर्म है जुदो,

दो विध धर्म(इम) सूत्र बखाणो ॥च०॥१२१॥

(कहे) “अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,

साधु बुझावा ने क्यो नहिं जावे ।”

मन्दमती एवी तर्क ठावे,

ज्ञानी उत्तर इण विध देवे ॥चतुर०॥१२२॥

अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,

निरारंभ गुण साधु रो जाणो ।

अग्नि आरंभ रा त्याग न तोडे,

मिथ्या तर्क थी न करो ताणो ॥ १२३ ॥

(पुनरुक्त) हम बोले ता आखो अज्ञानी,
 अस्व-महारम्भ (रो) भेद न पाया ।
 अस्वारंभी तो स्वर्ग में जावे,
 (लेखी) अस्वारंभी ने गुण में बसाया ॥११८॥
 आरु धर्म-विभ्रंसन मार्यी,
 अस्वार मी ने स्वर्ग छे बसायो ।
 अस्वारंभे महारम्भ नाहीं
 सो पिय गुण है वटे हीन गायो ॥अ०॥११९॥

॥ कैसा कि ने कहते हैं —

अब इहाँ ती मात्रात्मिक बना गुण कहा । लहके
 लोच मान माया कोम बलना, अस्व इच्छा अस्व
 आरम्भ अस्व समारम्भ, बुद्धि गुण करी बैठा बुद्धि छे ॥
 (अम-विष्णुसूत्र-४ ३८)

† कैसा कि ने कहते हैं —

परम अस्व आरम्भ, अस्व समारम्भ, अस्व इच्छा
 कहो । निबारे हम आविसे जै बची इच्छा नहीं
 ए गुण छे ॥

(अम-विष्णुसूत्र-४ ३८)

अग्नि थी मरता जीव बच्य़ा रा,

द्वेष थी तुम इहाँ अवला बोलो ।

“अल्पारंभ तो गुण में नहीं”,

(यो) सत्य छोड़यो तुम हिरदा में तोलो ॥१२०॥

अल्पारंभ श्रावक (रा) गुण बोले,

निरारंभी साधु (रा) गुण जाणो ।

तेथी साधु-श्रावक रो धर्म है जुदो,

दो विध धर्म(इम) सूत्र बखाणो ॥च०॥१२१॥

(कहे) “अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,

साधु बुझावा ने क्यों नहिं जावे ।”

मन्दमती एवी तर्क उठावे,

ज्ञानी उत्तर इण विध देवे ॥चतुर०॥१२२॥

अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,

निरारंभ गुण साधु रो जाणो ।

अग्नि आरंभ रा त्याग न तोडे,

मिथ्या तर्क थी न करो ताणो ॥१२३॥

(बन्धु) हम धाल लो माणो अज्ञानी,
 अस्प-महारम (रो) भेद न पाया ।
 अस्पारमी लो स्वर्ग में जावे,
 (तेधी) अस्पारमी ने मुख्य में बताया ॥११८॥
 मारा भ्रम-विध्वंसन मारी,
 अस्पारमी ने स्वर्ग ॐ बताया ।
 अस्पारमे महारम मारी,
 पो पिण्ड मुख्य है बडे इति गायो ॥च०॥११९॥

ॐ मैसा कि वे कहते हैं —

मह इर्दो लो भद्रकर्मिक बन्धु पुन कथा । सहने
 मोक्ष माव मावा स्वेम पतल, अस्प इच्छा अस्प
 नारम अस्प समारम पृथवा गुना करी देवता हुवे ॐ ॥
 (भ्रम-विध्वंसन-मृ ४८)

† मैसा कि वे कहते हैं —

परम अस्प आत्म, अस्प समारम अस्प इच्छा
 कथी । निवार हम आत्मि वे कथी इच्छा मरी,
 प पुन ॐ ॥

(भ्रम-विध्वंसन-मृ ४८)

गृहस्थी, गृहस्थी री थापण नहिं देवे,

दूजो तीजो व्रत तिण रो भागे ।

थापण देदे साधु न केवे,

पिण गृहस्थ दिया व्रत रेवे सागे ॥च०॥ १२८॥

इम अनेक वोले साधु रे दूषण,

ते गृहस्थी रे व्रत रचा रा ठामो ।

(तेथी) गृहस्थ ने साधु रो आचार जुदो,

एक कहे ते मिथ्यात रा धामो ॥ १२९ ॥

सुरे (वखाण) धर्म आई पढते पाणी,

एकान्त-पाप तो तिणने न केवे ।

लाय से काढ मनुष्य वचाया,

एकान्त-पापी रो पद देवे ॥चतु०॥ १३०॥

(इम) जलटी कथनी कथी-कथी ने,

भोला ने कुपन्थ चढ़ाया ।

परशण पूछ्या वाव न आवे,

शर्म छोदी ने भेष लजाया ॥चतु०॥ १३१॥

अविचार टल ने ब्रत पले ज,

ते काम-भावक रा धर्म माहीं ।

साधु करे नहीं त्यो कामो ने,

ते काम साधु रे कश्य में नहीं ॥च०॥१२४॥

“जो साधु न करे ते गृहस्थ रे पाप ”

यूँ मोसा ने मरमाया काठा ।

जो बालुर होय ने व्याप पूछे जब,

न टिके सिण्यादि जावे नाठा ॥च० ॥१२५॥

(जो) नर, पशु भावक मूला रखे,

तो हिंसा लागे पैसो ब्रत मागे ।

अन्न दिया करुणा नहिं जावे,

अविचार टलवा रो धर्म है लागे ॥१२६॥

साधु रा मातृपितादि गृहस्थी,

(जाने) साधु मिमावे तो वृषख लागे ।

गृहस्थी (अपन्न) मनुष्यों ने भूखा रखे तो,

वृषख लागे पैसो ब्रत मागे ॥चतुर०॥१२७॥

गृहस्थी, गृहस्थी री थापण नहिं देवे,

दूजो तीजो व्रत तिण रो भागे ।

थापण देदे साधु न केवे,

पिण गृहस्थ द्रिया व्रत रेवे सागे ॥च०॥ १२८॥

इम अनेक बोल साधु रे दूषण,

ते गृहस्थी रे व्रत रक्षा रा ठामो ।

(तेथी) गृहस्थ ने साधु रो आचार जुदो,

एक कहे ते मिथ्यात रा धामो ॥ १२९ ॥

सुरे (वखाण) धर्म आई पड़ते पाणी,

एकान्त पाप तो तिणने न केवे ।

लाय से काढ़ मनुष्य बचाया,

एकन्त-पापी रो पद देवे ॥चतु०॥ १३०॥

(इम) उलटी कथनी कथी-कथी ने,

भोला ने कुपन्थ चढ़ाया ।

परशण पूछ्या उवाच न आवे,

शर्म छोड़ी ने भेष लजाया ॥चत०॥ १३१॥

अग्नि भी बलता समुप्य बचाया,
अग्नि ही हिंसा विष में बाधे ।

जो इष्टविष घर्म समुप्य बचाया,
हिंसा पर छोडा न्याय बढावे ॥च०॥१३२॥

(कवे) "घोंच सौ निरप-निम्प जीवों न मारे,
कर कसार्हे अनारज कर्मों ।

जा मिय-धर्म होवे अग्नि शुम्भर्यों,
तो इष्टने ही मार्यों हुवे मिम धर्मों ॥१३३॥

जो लाय शुम्भरा जीव बचे तो,
कसार्हे (ने) मारया बचे घणा प्राणी ।

लाय शुम्भरा कसार्हे ने मारया,
होवों रा सेन्बो सरीखो जाणी" ॥च०॥१३४॥

(उत्तर) छोडा न्याय इस देवे अज्ञानी,
परवन्त वाले अनारज वाणी ।

अग्नि शुम्भर्यों समग्र ने मारणों,
सगिआ बढ म्हाअधम-प्राणी ॥च०॥१३५॥

मनुष्य मार बकरा ने बचावे,

अग्नि थी बलता मनुष्य निकाले ।

दोयों रो एक ही लेखो बतावे,

वे अन्याय रे मारग चाले ॥चतुर०॥१३६॥

कुगुरु रा मत रा श्रावक श्राविका,

अग्नि तो नित ही लगावे बुभावे ।

(ते) मनुष्य रा मारण जेसा महापापी,

थारी श्रद्धा रे लेखे थावे ॥चतुर०॥१३७॥

मोटी में मोटी मनुष्य री हिंसा,

अग्नि री हिंसा सूक्ष्म भाखी ।

लाय बुभावे ते अल्पारंभी,

भगवती सूत्र छे तिण रो साखी ॥१३८॥

बकरा बचावण मनुष्य ने मारे,

अग्नि थी बलता मनुष्य बचावे ।

दोयों ने सरीखा कुगुरु केवे,

ते महा मिथ्याति चोड़े दावे ॥च० ॥१३९॥

बहुरा बहवस्तु मनुष्य न मार,
ते ते पश्यन्ते ते कुर्वन्ते ।

अग्निं यी बलता मनुष्य बध्नाते,
अह्यारंभी न दया धर्मी ॥अतुर०॥१४०॥

विन आरंभ नर मत्ता बध्नाते,
निष्ठ मे आ पद्यन्त-याप बध्नाते ।

त अग्निं रा आरंभ रा नाम सइ न,
प्येष्ट माना ने मरमावे ॥अतुर०॥१४१॥

आवदया रा द्वेपी वेपा
अगदूनाई थोज सगावे ।

पुष्टिवन्त न्याय सुतर रा दधे
पा-पा कुगुर न अटकावे ॥अतुर०॥१४२॥

अपुष्टिम दध्यामी सम्मन,
आवग्य दादशी मुग्गहाइ ।

दान रमान कुम्भनि मन रगदण,
पूरु रादर मे दवे बनाइ ॥अतुर०॥१४३॥
इति आदरी राज्ञः समाप्तम्

दोहा

जीवहिंसा छे अति बुरी, तिण मे दोष अनेक ।
जीवरक्षा में गुण घणा, सुणजो आणिविवेक ॥ १

ढाल-नवमी



(तर्ज—यो भव, रतनचिन्तामणि सरिखो)

रक्षा देवी सब (ने) सुखदाई,

या मुक्तिपुरी नी साई जी ।

साठे नामे दया कही जिन,

दशमाँ अग रे माई जी ॥

रक्षा धरम श्री जिनजी री वाणी ॥ १ ॥

असथावर रे खेम री कर्ता,

अहिंसा दु खहर्ता जी ।

द्वीप तणी परे त्राण शरण या,

गंगाधर गंग लक्ष्मणाजी ॥ रक्षा ॥ २ ॥ ॥

‘निर्वाण’ ‘निर्वृत्ति’ नाम से बखरो,
‘समाधि’ ‘शक्ति’ स्वरूपो जी ।

‘जीवि’ जग प्रमिष्ठ (री) करवा
‘अन्ति’ अनुत्त रूपोत्री ।। भा० ॥ ३॥

‘रति’ आनन्द रे हेतुपणा थी,
‘विरति’ पाप निबरती जी ।

मुवाद्वा भवदान थी उपनी,
रस करे से ‘रुमि’ जी ॥ रक्षा० ॥ ४ ॥

ददी से रक्षा थी ‘दया’ करीज,
‘मुक्ति’ अन्त ‘जाति’ (हस्ती या घमा) उदागे जी
‘समचित्त्वनी’ आराधना सौंपी,
भयभीता दिखत में पायेगी ।। रक्षा० ॥ ५॥

सर्व धर्म अनुष्ठान बढ़ावे,

‘महन्ती’^{१५} इणरो नामो जी ।

बीजा व्रत इण रक्षा रे काजे,

जिन भाखे अभिरामो जी ॥रक्षा०॥६॥

जिन धर्म पावे इण परतापे,

तेथी ‘बोधि’^{१६} कहिये जी ।

‘बुद्धि’^{१७} ‘धृति’^{१८} ‘समृद्धि’^{१९} ‘ऋद्धि’^{२०} ‘वृद्धि’^{२१},

‘स्थिति’^{२२} शाश्वती एथी लहिये जी ॥र०॥७॥

‘पुष्टि’^{२३} पुण्य रो उपचय इण थी,

समृद्धि लावे ‘नन्दा’^{२४} जी ।

जीवाँ रे कल्याण री कर्ता,

‘भद्रा’^{२५} भणे मुनिन्दा जी ॥रक्षा०॥ ८ ॥

‘विशुद्धि’^{२६} निर्मलता दाता,

लब्धि री दाता ‘लद्धि’^{२७} जी ।

'निर्वाण' 'निर्बुधि' नाम छे इखरो,

'समाधि' 'शक्ति' स्वरूपो जी ।

'क्षिति' जग प्रमिय (री) ब्रह्मा,

'कान्ति' अद्भुत रूपोजी ॥ अथा० ॥ ३ ॥

'रति' आनन्द रे देसुपणा भी,

'विरति' पाप निवरती जी ।

'सुतादा' भुक्तान भी उपनी,

रस करे से 'रुमि' जी ॥ अथा० ॥ ४ ॥

देदी री रक्षा भी 'वयो' बदीज,

'मुक्ति' अरु 'शक्ति' (रम्बी या जमा) उदारो जी

'समष्टि' आरपना सौपी,

मयसीवा हिरदा में धारोजी ॥ अथा० ॥

अन्तर आँख हिया री फूटी,

ते सूत्र नामो नहीं देखे जी ॥ रक्षा० ॥१३॥

‘सिद्धिआवास’^{३८} अरु ‘अनाश्वा’^{३९},

‘केवली कैरो स्थानी’^{३६} जी ।

‘शिव’^{३७} ‘समिति’^{३८} सम्यक पर वृत्ति,

‘शील’ मन समाधानो जी ॥ रक्षा० ॥१४॥

हिंसा उपरति^{४०} ‘संयम’ कहिये,

‘शीलपरीधर’^{४१} जाणो जी ।

‘संवर’^{४२} ‘गुप्ति’^{४३} ‘व्यवसाय’^{४४} नामे,

निश्चय स्वस्व श्री जाणो जी ॥ रक्षा० ॥१५॥

‘उच्छय’^{४५} भाव उन्नतता समझो,

‘यज्ञ’^{४६} भाव पूजा देवाँ री जी ।

गुण आश्रय री स्थानक निर्मल,

‘आयत्तन’^{४७} नाम छे भारी जी ॥ रक्षा० ॥१६॥

ਸਭ ਸਭ ਮੈਂ ਸਮਝਾਨਾ ਭਯਰੀ,

‘ਵਿਸ਼ਿਟਟਿ’ ਸਿਖਰੀ ਭੀ ॥੨੦॥੧॥

‘ਕੰਧਾਧਾ’ ਕੰਧਾਧਾ ਰੀ ਰਾਜਾ,

‘ਸੰਗਲਿਕ’ ਸਿਖਰ ਸਿਖਰੇ ਭੀ ।

ਭਰ੍ਹ ਕਰੇ ਭੇਖੀ ਭਰ੍ਹ ‘ਸਮੋਧਾ’

‘ਵਿਸ਼੍ਵਾਸ’ ਭਯਰੀ ਭਾਵੇ ਭੀ ॥੨੦॥੨॥

ਭੀਭ ਭਯਰੀ ਭੀਭੀ ਰੀ ਰਾਜਾ

‘ਰਾਜਾ’ ਭਯਰੀ ਰੀ ਸਾਮੋ ਭੀ ।

ਭਾਨੀ ਭੇਖੇ ਸਮਝੇ ਭਾਨ ਮੈਂ,

ਰਾਜਾ ਭਰ੍ਹੇ ਰਾ ਕੰਧਾ ਭੀ ॥੨੦॥੩॥

ਸਾਧਿਕਮਾ ਲੋਗਾਂ ਨੇ ਭਰ੍ਹ ਕਰਯ ਮੈਂ,

(ਭੀਭ) ਰਾਜਾ ਮੈਂ ਪਾਪ ਭਯਰੇ ਭੀ ।

ਭਯਰੇ ਭਯਰੇ ਰੀ ਸਮਝੇ ਭਾਧੇ

ਰੇ ਰੀਧੇ ਸੰਘਾਰ ਭਯਰੇ ਭੀ ॥੨੦॥੪॥

ਭੀਭਰਾ ਸੁਧਰ ਰੀ ਭਾਧੀ,

ਭੇ ਪਾਪ ਕਧੋ ਕਧਿਯ ਰੇਖੇ ਭੀ ।

अन्तर अखि हिया री फूटी,

ते सूत्र सामो नहीं देखे जी ॥ रक्षा० ॥१३॥

‘सिद्धिआवास’ अरु ‘अनाश्वा’,

‘केवली केरो स्थानी’ जी ।

‘शिव’ ‘समिति’ सम्यक पर वृत्ति,

‘शील’ मन समाधानो जी ॥ रक्षा० ॥१४॥

हिंसा उपरति ‘संयम’ कहिये,

‘शीलपरीधर’ जाणो जी ।

‘सर्व’ ‘गुप्ति’ ‘व्यवसाय’ नामे,

निश्चय स्वस्व श्रो जाणो जी ॥ रक्षा० ॥१५॥

‘उच्छ्रय’ भाव उन्नतता समझो,

‘यज्ञ’ भाव पूजा देवों री जी ।

गुण आश्रय री स्थानक निर्मल,

‘आयत्तन’ नाम छे भारी जी ॥ रक्षा० ॥१६॥

सब मत में प्रधानता इसरी,

‘विशिष्टादृष्टि’ प्रसिद्धी जी ॥रक्षा०॥९॥

‘कस्यास्या’ कस्यास्य ही वस्ता,

‘मंगलिक’ विष्णु मित्रावे जी ।

दर्प करे तेधी यह ‘प्रमोदा’

‘विमूर्ति’ इच्छा की बावे जी ॥रक्षा०॥१०॥

जीव बचावों जीवों ही रक्षा,

‘रक्षा’ इस-ही नामा जी ।

दानी होवे समझे दान में,

रक्षा धर्म ही चामो जी ॥रक्षा०॥११॥

भारीकमा लोगों ने भ्रष्ट करछ मे,

(जीव) रक्षा में पाप बसावे जी ।

त्यों मे दुःख में प्रत्यक्ष आसो,

ते दीर्घ संसार बधाव जी ॥रक्षा०॥१२॥

जीवरक्षा सूचर ही बाणी,

तो पाप करो किछ सेने जी ।

५३

‘अमाघात’ ते अमारी कहिये,

(इण रो) श्रेणिक पड़ह पिढायो जी ।

दयाहीण तो पाप वतावे,

सूत्र रो पाठ उठायो जी ॥रक्षा०॥२१॥

‘चोखा’ ‘पवित्रा’ अति ही पावन,

दोनों रो अर्थ एको जी ।

‘भावशुचि’ सर्व भूत दया थो,

पवित्र ‘पूता’ देखो जी ॥ रक्षा० ॥२२॥

अथवा पूजा अर्थ अणी रो,

भाव से देव पूजिजे जी ।

द्रव्य सावज पूजा हिंसा में,

ते इहाँ नाय गणीजे जी ॥रक्षा०॥२३॥

‘विमल’ ‘प्रभासा’ अरु ‘निर्मलतर’,

साठ नाम प्रभु भाख्या जी ।

‘धर्म’ अभयदान की जाणो,
जीवन्मुक्ती के लपायो जी ।

तेही पतना इस ने कहिये,
पर्याय नाम कहायो जी ॥२४०॥१७॥

जीव लक्ष्म्या में पाप बछावे,
ते कुपन्धे पड़िया जी ।

परतप पाछ देखे नहीं भोला,
हिरण मिथ्यात से लड़िया जी ॥२४०॥१८॥

प्रसाद ‘अमर’ इसी ने कहिये,
भारत धीर बैपावे जी ।

‘आचार्य’ से नाम इसी से
सूत्र में गणवर गावे जी ॥२४०॥१९॥

‘विद्या’ पत्ने अन्ध ने देखे,
दया भगौली जाण्यो जी ।

मयभीष प्राणी न अमर को देखे
त ‘अमर’ नाम परमाणी जी ॥२४०॥२०॥

^{५३}
 'अमाघात' ते अमारी कहिये,
 (इण रो) श्रेणिक पड़ह पिटायो जी ।
 दयाहीण तो पाप वतावे,
 सूत्र रो पाठ उठायो जी ॥रक्षा०॥२१॥
^{५४} ^{५५}
 'चोखा' 'पवित्रा' अति ही पावन,
 दोनाँ रो अर्थ एको जी ।
^{५६}
 'भावशुचि' सर्व भूत दया थी,
^{५७}
 पवित्र 'पूता' देखो जी ॥ रक्षा० ॥२२॥
 अथवा पूजा अर्थ अणी रो,
 भाव से देव पूजिजे जी ।
 द्रव्य सावज पूजा हिंसा में,
 ते इहाँ नाय गणीजे जी ॥रक्षा०॥२३॥
^{५८} ^{५९} ^{६०}
 'विमल' 'प्रभासा' अरु 'निर्मलतर',
 साठ नाम प्रभु भाख्या जी ।

‘यजन’ अमयदान की जाणो,
जीवरक्षा रो कपायो जी ।

तेषी यतना इय्य ने कद्रिये

पर्याय नाम कद्रायो जी ॥रक्षा०॥१५॥

जीव वचःया में पाप बतावे,
ते कुपन्ने पद्रिया जी ।

परतस्त पाठ देखे नहीं भोला,

दिरदा मिथ्यात से सक्रिया जी ॥र०॥१८॥

प्रमाद अभावे इय्यी ने कद्रिये,

आरते धीर धैर्यवे जी ।

‘आस्थासन’ छ नाम इय्यी रो,

सूत्र में गणपर गावे जी ॥रक्षा०॥१९॥

‘विद्याम’ पावे अम्य ने देवे,
इया भगोती जाणो जी ।

अमयभीत प्राणी न अमय ओ देव,

त ‘अमय’ नाम परमायो जी ॥र०॥२०॥

सातावेदनी कर्म ते वोधे,

पुण्यश्री ते वरसी जी ॥ रक्षा० ॥ २८ ॥

भय पाया ने शरणो^१ दंवं,

दया जीव विश्रामो जी ।

पंखीगगन^२ तिसिया^३ ने पाणी,

भूखो^४ भोजन रे ठामो जी ॥ रक्षा० ॥ २९ ॥

जहाज समुद्र तिरण उपकारी,

चोपद^५ आश्रम थानो जी ।

रोगी^६ औषध बल सुख पावे,

अटवी^७ साथ (सु) प्रमाणो जी ॥ रक्षा० ॥ ३० ॥

(इण) आठों थी अधकी अहिंसा,

सूत्तरपाठ पिछाणो जी ।

थोडो-थोडो गुण आठ में दाख्यो,

सम्पूर्ण रक्षा में जाणो जी ॥ रक्षा० ॥ ३१ ॥

प्रकृति और निवृत्ति रा योग,
 मित्र-मित्र नाम ये दुःखी जी ॥२०॥२४॥
 नहीं देखनो निवृत्ति छाया,
 परब्रह्मी शुद्ध गङ्गा जी ।
 प्रकृति निवृत्ति दोनों जोलनाया,
 सौ (साठ) नामों की शीनी शिखा जी ॥२५॥
 त्रिविध-त्रिविध ज्ञान म देखनी,
 देखन तो धर्म बतावे जी ।
 त्रिविध-त्रिविध जीवन्मुक्त करण में
 पाप कष्ट धर्म क्षमावे जी ॥२६॥ ६॥
 नहीं देखनो म रक्षा करणी,
 त प्रभु आकाश भाग्यी जी ।
 पाणी पात समा में पतन
 (सोमे)वार कछा म्यायवासी जी ॥२७॥२७॥
 प्राणी भूत, जीव, सत्व ही,
 अनुकम्पा काह करसी जी ।

(कहे) “रक्षा करताँ प्राणी मर जावे,
 (तेथी) रक्षा में पाप बतावाँ जी ।
 जो धर्मकारज में हिंसा होवे,
 ते धर्म ने पाप में गावाँ जी” ॥
 चतुर सत्य रो निर्णय कीजे ॥३६॥
 जिण रक्षा में जीव मरे नहीं,
 केवल जीवाँ रो रक्षा जी ।
 तिण में भी थें पाप बतावो,
 तो छोटी थौरी शिक्षा जी ॥चतु०॥३७॥
 श्रावक वन्दणा ने नित आवे,
 जीव घणा नित मारे जी ।
 ते वन्दणा ने पाप में केणो,
 तुम श्रद्धा निरधारे जी ॥चतुर०॥ ३८ ॥
 (कहे) “आवण-जावण में जीव मरे छे
 ते तो आरंभ माँई जी ।
 वन्दणा ने म्हें धर्म में मानाँ,
 भाव अच्छा सुखदाई जी” ॥च०॥३९॥

अर तो रक्षा आठों में होय,
 ते एक बेरा क्या आया जी ।
 सब अर रक्षा सब क्या में,
 (तेजी) छरछट इगन पिछायो जी ॥२०॥२२॥
 सबसीब लेमकरी करी इगने
 मूलपाठ रे मारी जी ।
 रक्षा लेम रो अर्ये ही परगट,
 तेजी रक्षा-यम सुखदरि जी ॥२१॥२३॥
 जीबरक्षा रा हेली बेपी,
 रक्षा में पाप बतावे जी ।
 क्या-क्या तो मुक्त स बोले,
 रेही-रक्षा क्या छटाव जी ॥२२॥२४॥
 माइस-माइण कयो भरिईवा,
 (तेजी) मठमार कया मरि पापो जी ।
 पन्तर मयन दिया रा कूटा
 (करे) मठमार में पाप री बाबो जी ॥२३॥२५॥

(कहे) “रक्षा करतौ प्राणी मर जावे,
(तेथी) रक्षा में पाप बतावौ जी ।

जो धर्मकारज में हिंसा होवे,
ते धर्म ने पाप मे गावौ जी” ॥

चतुर सत्य रो निर्णय कीजे ॥३६॥

जिण रक्षा मे जीव मरे नहीं,
केवल जीवौ री रक्षा जी ।

तिण में भी र्ये पाप बतावो,
तो छोटी थौरी शिक्षा जी ॥चतु०॥३७॥

श्रावक वन्दण ने नित आवे,
जीव घणा नित मारे जी ।

ते वन्दणा ने पाप में केणो,
तुम श्रद्धा निरधारे जी ॥चतुर०॥ ३८ ॥

(कहे) “आवण-जावण में जीव मरे छे
ते तो आरंभ मौई जी ।

वन्दणा ने म्हे धर्म में मानौ,
भाव अच्छा सुखदाई जी” ॥च०॥३९॥

(उत्तर) तो इमहि मुँस समझौं बहुरंग,
 रक्षाहि धर्म रे माँई जी ।
 इसख-बलण धी जीब मरे ता,
 अरुंसे समझरे माँई जी ॥चतुर०॥४०॥
 आरम ने अगवाणी करने,
 रक्षा में पाप न माखा जी
 परिणाम आधा है धर्म र माँई,
 ये बड़ा सूफी राखो जी ॥चतुर०॥४१॥
 बाबर-ब्रह्म हिंसा सूत्र में,
 अल्प-महारम बोले की ।
 बाबर सूत्र-हिंसा कहिये,
 ब्रह्म ही मोटी खास जी ॥चतुर०॥४२॥
 ब्रह्म में स-अपराधी ही छोटी,
 निर-अपराधी ही मोटी जी ।
 बाटी रा योग जी माँगी छुट हो,
 सूनी व किम हुवे खोली जी ॥च०॥४३॥

(इम) छोटी ग जोग थी मोटी हिंसा,
छोड़े छोड़ावे भल जाणो जी ।

निजनी, परनी, हरकोई नी,
(तेने) झानी तो शुद्ध बखाणो जी ॥च०॥४४॥

इम मोटी-हिंसा छोड़े छोड़ावे,
ते (तो) धर्म रो मारग जाणो जी,

तिण माँही जे पाप बतावे,
ते पूरा मन्द अयाणो जी ॥चतु०॥४५॥

(इम) पंचेन्द्रिय मारे साँस रे अर्थे,
तेनी हिंसा छोड़ावे अनेको जी ।

(तेने) अचित दिया में पाप परूपे,
ते हूवे छे विना विवेको जी ॥च०॥४६॥

जीव बचाया में पाप कहे छे,
क्युक्ति लगावे खोटी जी ।

ते रक्षा रा द्वेपी अनार्य यूँ बोले,
राखण आपनी रोटी जी ॥चतुर०॥४७॥

(कोई) मनुकम्पा-दान में पाप परूपे,
 त्यौरी जीम पड़े तरवारो जी ।

फेरण सोंग साधों रो यम्मे,
 धिक् त्यौरी जमवारो जी ॥ चतुर० ॥ ४८ ॥

माधु रा बिदव धरम्मे लोचर्छे में,
 वाजे भगवन्त-भण्य जी ।

जीवरक्षा में पाप बचावे,
 (त्यौरी) चीन जठ मागे लगवा जी ॥ च० ॥ ४९ ॥

जीव बचाया में पाप परूपे
 ते जीव-दया से त्यागे जी ।

धीन-काल री रक्षा ने निम्नी,
 (विणसूँ) पहिलो म्हाप्रव मागे जी ॥ ५० ॥

रक्षा में पाप वो भिनजी क्यो नहीँ
 (रक्षा में) पाप क्यो मूठ लागे जी ।

इसका मूठ निरन्तर बोसे
 त्यौरी दूजो म्हाप्रव मागे ॥ ५१ ॥

जीव बचाया पाप जो केवे,
 वाँ जीवाँ री चोरी लागे जी ।
 बले आज्ञा लोपी श्री अरिहंत नी,
 तीजो महाव्रत भागे जी ॥चतुर०॥५२॥
 जीव बचावा में पाप बतावे,
 जाँरी श्रद्धा घणी छे गन्धी जी ।
 ते मोह मिथ्यात में जड़िया अज्ञानी,
 त्याँने श्रद्धा न सूमे सूँधीजी ॥च०॥५३॥
 (त्याँने) पूछवा कहे म्हे दयाधर्मी छाँ,
 दया तो देही री रक्षा जी ।
 तिण रक्षा में पाप बतावो,
 र्ये दया री न पाया शिक्षा जी ॥च०॥५४॥
 जीव-रक्षा ने दया नहीं माने,
 ते निश्चय दया रा घाती जी ।
 त्याँ दयाहीन ने साधू श्रद्धे,
 ते पिण निश्चय मिथ्याती जी ॥च०॥५५॥

(घोई) अनुकम्पा-दान में पाप परूपे,
 त्योंही क्षीम वई तरवारो जी ।

पेहरख सोंग सार्धों रो रख,
 पिछ् त्योंही कमवारो जी ॥चतुर०॥४८॥

साधु रो बिरह धरख सोझें में,
 वाजे भगवन्त-भक्त्य जी ।

जीवरक्षा में पाप बचाने,
 (त्योंही) तीन प्रव भागो सगता जी ॥च०॥४९॥

जीव बचाया में पाप परूपे,
 त जीव-दया ने त्यागो जी ।

तीन-जल री रक्षा ने निन्दी,
 (विपक्ष) पहिलो मद्भाग्य भागो जी ॥५॥

रक्षा में पाप तो बिनयी क्यो मर्ही,
 (रक्षा में) पाप क्यो मूठ लागो जी ।

इसका मूठ निरन्तर बोसे,
 त्योंही दूजो मद्भाग्य भागो जी ॥च०॥५१॥

હિમક (રી) કરુણા મે ધર્મ વ્રતાયે,

મરણવાલા રી મે પાપો જી ।

યા સ્વોટી શ્રદ્ધા પરત્તસ્વ ઘોસે,

” જે થાપે તે પામે સુન્તાપો જી ॥ચ૦॥૬૦॥

(કહે) “છકાયા રો શસ્ત્ર જીવ અવ્રતી,

(ત્યારો) જીવેણો-મરણો ન 'ચાવે જી ।”

તો પાણી થી ઝન્દિર માણા કાઢો,

(તેથી) થારો શ્રદ્ધા સ્વોટી થાવે જી ॥૬૧॥

(કહે) “મ્હે તો જીવણો મરણો ન ચાવો,

પાપ ટાલણો ચાવો જી ।”

(ઉત્તર) તો જીવરક્ષા પિણ પાપ ટાલણ મે,

સ્વ-પર નો પાપ વચાવો જી ॥ચ૦॥૬૨॥

મારણ ને મરણવાલા રો,

પાપ છોડાવા વચાવો જી ।

મરણવાલા રી દયા કિયા સૂ,

ઘોતક-રા પાપ છુડાવો જી ॥ચ૦॥૬૩॥

(कहे) "साधु न जीब बचावणो नार्ही,

(जीब) रक्षा न मछी न जाण्य जी ।

(कतार) ते दशाधर्म रा अजाण भ्रष्टानी,

इसही बरबा आये जी ॥चतुर०॥५६॥

(कहे) "साधु ता जीबो न बचाने बचावे,

ते तो पच रक्षा निव-कर्मो जी ।"

चौरे लज्ज भी जीब-दमा रो,

अपराधो मर्हि बर्मो जी ॥चतुर०॥५७॥

जीव मार त कर्म पचे ह्ये,

(विष्णु म) उपद्रव कम दुइआमो जी ।

जर कहे कम-बन्ध टलावो,

तो मरतना क्यों न दमावो जी ॥च०॥५८॥

टिमरु न) पाप कम करता भी बचावे,

निष्ठ में तो (धे) करुणा बतावो जी ।

नो) मगगुवालो पिछ पाप भी बचियो

तनी करुणा में पाप क्यों गावो जी ॥च०॥५९॥

हिसक (री) करुणा मे धर्म बतावे,

मरणेवाला री में पापों जी ।

या खोटी श्रद्धा परतख दीसे,

जे थापे ते पापे सन्तापो जी ॥च०॥६०॥

(कहे) “छकाया रा शस्त्र जीव अव्रती,

(त्यारो) जीवणो मरणो न चावे जी ।”

तो पाणी थी उन्दिर भाखा काढो,

(तेथी) थारी श्रद्धा खोटी थावे जी ॥६१॥

(कहे) “म्हे तो जीवणो मरणो न चावों,

पाप टालणो चावों जी ।”

(उत्तर) तो जीवरक्षा पिण पाप टालण में,

स्व-पर नो पाप बचावों जी ॥च०॥६२॥

मारण ने मरणेवाला री,

पाप छोड़ावा बचावों जी ।

मरणेवाला री दया किया सूँ,

घातके रा पाप छुड़ावों जी ॥च०॥६३॥

अमुकम्पा-विचार

जीव गरीब असाव, दुःखी री,
अमुकम्पा जिनजी बतार्ह जी ।

त्योने बचावा में पाप बताने,
या मर्या दुःखदार्ह जी ॥चतुर०॥६४॥

जीवों री हिंसा असंजम जीतव,
त तो मुनि मर्हि चाहे जी ।

जीवों री रक्षा संजम जीतव,
ते (तो) चाहे गुण पावे जी ॥च०॥६५॥

जीवों री हिंसा असंजम जीतव,
(विष्णु) त्याग सूत्र में थापा जी ।

जीवरक्षा रा त्याग न चाह्या,
(प्रभु) जीवरक्षा रा शुख गायाजी ॥च०॥६६॥

जीवों री रक्षा में पाप होता तो,
रक्षा रा त्याग करता जी ।

(विष्णु) रक्षा में तो बहु धर्म बतायो
जीवरक्षा जिन पता जी ॥चतुर०॥६७॥

त्रिविधे-त्रिविधे मुनि त्राता कहिये,

त्राता रक्षक जाणो जी ।

(तेथी) छकाया रा पीयर साधु,

रक्षा रो गुण पिछाणो जी ॥च०॥६८॥

मरता जीव ने कोई बचावे,

जामें पाप बतावे जी ।

ते पाप बताया समकित नासे,

जौरा मूल-उत्तर व्रत जावेजी ॥च०॥६९॥

(जोकहे) “त्रिविधे-त्रिविधे जीव-रक्षान करणी,”

(उत्तर) तो हिंसक री हिंसा छोड़ाया जी ।

मरता जीवाँ री रक्षा होसी,

थारी श्रद्धा सुँ पाप कमायाजी ॥च०॥७०॥

‘बीच में पड़ पाप नाय छोड़ावणो,”

इसढ़ो र्थें धर्म बतावो जी ।

तो हिंसक पाप करे तिण बीच में,

उपदेश देगा क्यौँ जावो जी ॥च०॥७१॥

अनुकम्पा-विचार

बे कारण जीव-हिंसा करे कोई,

अहित अक्षय त पार्से जी ।

जीवरक्षा भी समकित पावे

अहिते प्रिकीर्त्त न पावे जी ॥च०॥७०॥

जीवहिंसा प्रभु लोटी-बतार्ई,

(आठ) कमा री गठे बँपावे जी ।

जीवरक्षा प्रभु आशी माखी

कर्म-बन्ध लपावे खी ॥चतुर०॥७३॥

हिंसा माहीं धर्म भये ता

बोध-बीज रो मासा जी ।

जीवरक्षा में पाप बताव

मिव्यात में हव वासा जी ॥च०॥७४॥

प्राणी जीव न दुःख ओ दब

न दुःख पामे मसारे खी ।

अनुकम्पा कर दुःख छुड़ावे,

मुक्त पावा रो (सूत्र) बिस्तार जी ॥च०॥७५॥

केई साधू नाम धराय करे छे,
 जीवरक्षा मे पाप री थापो जी ।
 (कहे) “प्राण, भूत, जीव ने सत्त्व,
 रक्षा मे एकंत-पापो जी” ॥चतुर०॥७६॥
 (एवी) ऊँधी परूपणा करे अज्ञानी,
 (त्याँने) जानी बोल्या धर प्रेमो जी ।
 थाँ भूँडो ठीठो भूँडो साँभलियो,
 भूँडो जाण्यो एमो जी ॥चतुर०॥७७॥
 जीव वचाया पाप परूपे,
 या मूरख नर री वाणी जी ।
 ने भारीकर्म जीव सिध्याती,
 (त्याँ) शुद्धबुद्धि नाहिं पिछाणीजी ।च०॥७८॥
 त्याँ निरदयी ने आरज पूछथो,
 थाँने वचाया धर्म के पापो जी ।
 तब कहे “म्हाँने वचाया धरम छे,”
 साँच बोल ने किधी(शुद्ध) थापोजी ।च०॥७९॥

अनुकम्पा विचार

मे कारण जीव-हिंसा करे कोई,

अहित अवशेष ते पावे जी ।

जीवरक्षा भी समझिष्ठ पावे

अहित त्रिकाल न पावे जी ॥च०॥७०॥

जीवहिंसा मनु लोटी बढाई,

(काठ) कमा री गोट बँबावे जी ।

जीवरक्षा मनु माखी मोखी

कर्म-बन्ध कपावे जी ॥चतुर०॥७१॥

हिंसा मार्गी धर्म भट्टे ता

बोध-बीज रो मासा जी ।

जीवरक्षा में पाप बताव

मिथ्यात में शत्रु वामा जी ॥च०॥७४॥

प्राणी जीव ने दुःख आ दुःख,

त दुःख पाम भँसारो जी ।

अनुकम्पा कर दुःख दुःख,

मुन्य पावा गो (सूत्र) विम्वार जी ॥च०॥७५॥

(कहे) “धर्म रे काज आरम्भ करे तो,
समकित-रत्न गमावे जी ।”

(उत्तर) तो साधुवन्दण ने आरंभ करता,
हृष्या-हृष्या क्यों जावे जी ॥च०॥८४॥

साधु रो वन्दण धर्म रो कारज,
ते आरम्भ धर्म रे काजे जी ।

वन्दणकाज आरम्भ करे त्योंने,
‘मिथ्याती’ कहता क्यों लाजे जी ॥च०॥८५॥

(कहे) “वन्दन (दर्शन) काजे आरंभ कीधो,
ते आरंभ खोटो जाणो जी ।

आरंभ करने दर्शन कीदा,
ते दर्शन धर्म पिछाणो जी ॥चतु०॥८६॥

जो आरंभ ने धर्म में जाने,
तिण री श्रद्धा खोटी जी ।

आरंभ ने आरम्भ पिछाणे,
दर्शन शुद्ध कसोटी जी” ॥चतु०॥८७॥

मनुष्य-मित्रः।

(छाली क्यो) धौने बचाया में परम जो मखो,
तो सर्वजीवों से हम जाणो जी ।

भीरों ने बचाया पाप पखयो
वे छोटी क्यो क्यो छालो जी ॥च०॥८०॥

रक्षा में पाप बचाये त्योंने
कीया परे सँ म्भारा जी ।
मंग इपला रा मूलपाठ में,
गणेशरखी मित्रारा जी ॥चतुर०॥८१॥

पर ने बचाया पाप पखये
तिन ने बचाया में धर्मों जी ।
वा क्यो भिखतों से डँधौ,
नहिं जाये पुरो मर्मों जी ॥चतुर०॥८२॥

अब अनर्थ धर्म रे काये,
दिखा ने दिखा जाणे जी ।
त्योंने छुब समदहि कहिये,
मित्र-भागम बों बचाये जी ॥च०॥८३॥

(कहे) “धर्म रे काज आरम्भ करे तो,
समकित-रत्न गमावे जी ।”

(उत्तर) तो साधुवन्दण ने आरंभ करता,
हृष्या-हृष्या क्यों जावे जी ॥च०॥८४॥

साधु रो वन्दण धर्म रो कारज,
ते आरम्भ धर्म रे काजे जी ।

वन्दणकाज आरम्भ करे त्याँने,
‘मिथ्याती’ कहता क्यों लाजे जी ॥च०॥८५॥

(कहे) “वन्दन (दर्शन) काजे आरंभ कीधो,
ते आरंभ खोटो जाणो जी ।

आरंभ करने दर्शन कीदा,
ते दर्शन धर्म पिछाणो जी ॥चतु०॥८६॥

जो आरभ ते धर्म में जाने,
तिण रो श्रद्धा खोटी जी ।

आरंभ ने आरंभ पिछाणे,
दर्शन शुद्ध कसोटी जी” ॥चतु०॥८७॥

अधुना-विचार

बोला मैं मन्त्रा गुं लाम पर न,

भाला मैं यों परमात्मा जी ।

भावक वत्सलता न छटाया,

बे इसकी गाथा क्यों गावो जी ॥ ८८ ॥

(कहे) “छकाय जीवों रो परमात्मा करन,

भावक न जीमावे जी ।

अधुना मन्त्रपुष्टि कर दियो भगवन्त,

तियमे धर्म किसी विष बावे जी” ॥ ८९ ॥

(उत्तर) जो छकाय जीवों रो परमात्मा करन,

साधु न बन्धन बावे जी ।

उत्तर मन्त्रपुष्टि बें माला ?

धारे धर्म किसी विष बाव जी ॥ ९० ॥

(कहे) “आरम्भ करज मन्त्रपुष्टि में,

बन्धन भाव हा बाधा जी” ।

(ग) भावक वत्सलता भी जिमावे,

तियगे उत्तर दियो मौजा जी ॥ ९१ ॥

(कहे) “साधमी वत्सलता जाणौ,
 श्रावक ने जिमावे जी ।

तिण में एकान्त पाप वतावाँ,
 धर्मे श्रद्धे तो समकित जावे जी” ॥९२॥

(उतर) या श्रद्धा थोरी प्रत्यक्ष खोटी,
 वन्दन रा थें भूखा जी ।

तिण हेते आरम्भ करे जद,
 भाव वतावो चोखा जी ॥चतुर०॥९३॥

साधमी-वत्सलता मोटी,
 समकित रो आचारो जी ।

तिण में एकान्त-पाप वतावो,
 मिथ्या थारो व्यवहारो जी ॥चतु०॥९४॥

वन्दन आरम्भ (श्रावक) वत्सल आरंभ,
 दोनों सरिखा जाणो जी ।

वन्दन भाव निर्मल भाखो,
 थें वत्सल खोटा मानो जी ॥चतु०॥९५॥

अनुष्ठा-विचार

शानी तो दोनों ही खरिवा जाय,

धोमे ज्वाब न आवे जी ।

एक न धापे मे एक ठपावे,

त मूरख मे मरमावे जी ॥पतुर०॥९६॥

काइ ता जीर्णो मे मरता बचावे,

कोई करे सत्ता साधमी जी ।

सिण मे एकान्त पाप बतावे

ते एकान्त मिथ्याकर्मो जी ॥चतु०॥९७॥

कोई जीर्णो ए हु-क मेरपा मे,

एकान्त-पाप बतावे जी ।

होने पाण मिसे भिन घर्म रो,

(तब) किण बिध मारग सावे जी ॥च०॥९८॥

लोइ नो गोसो अग्नि ठपायो,

ते अग्निवर्य कर ठातो जी ।

(ते) पकड़ सैंडामो जाणो तिख पासे

(कडे) बलवो गोसो मेस्रो हाथो जी ॥९९॥

(जब) दयाहीण हाथ पाछो खेंच्यो,
 तब जाण पुरुष कहे त्याँने जी ।
 ये हाथ पाछो खींचो किन कारण,
 थारी श्रद्धा मत राखो छाने जी ॥च०॥१००॥
 जद कहे गोलो म्हे हाथ में त्याँ तो,
 (म्हारी) हाथ बले दुःख पावौं जी ।
 (तो थारा) हाथ बालता ने जो म्हे वरजाँ,
 तो धर्मो के पापी कहावौं जी ॥ १०१ ॥
 (कहे) “(म्हारा) हाथ बालता ने जो कोई वरजे,
 तिणने तो होसी धर्मो जी ।”
 (तो) दूजा रा हाथ बालता (ने) वरजे,
 तेमें क्यों कहो अधर्मो जी ॥च०॥१०२॥
 हम सर्व जीव ये सरीखा जाणो,
 ये सोच देखो मन माँई जी ।
 दुःख भेटण में पाप बतावा रो,
 कुबुद्धि तजो दुःखदाई जी ॥च०॥१०३॥

अनुकम्प-विचार

भारा हाथ जलावा न बर्जे,

तेमें तो धर्म बतावा जी ।

औरों रा राखे तो पाप बचाओ,

(बे)पसी क्यों कुम्हटि ठावो जी ॥च०॥१०४॥

अ जीब बचावा में पाप कहूँ खे

तले ते कास भनखो जी ।

विपरीत भट्ठा रा फल है खाटा

माख गधा भगवन्तो जी ॥च०॥१०५॥

माथों रे कमरे बचाव इणी में,

जाना करे खे खावो जी ।

डोले लीचे खावे, समझे,

ते खापु करे इलायारो जी ॥च०॥१०६॥

अनन्त जीबों री पात दूर दिशों,

इस से करे निबाखो जी ।

पूछवा भी कम्पनीक बतावे,

विद्वानों रो जोबो नमाखो जी ॥च०॥१०७॥

(कहे) “धर्म रे कारण हिंसा कीधा,
बोध धीज रो नासो जी ।”

तो साधु काजे हिंसा करी ते,
तिण घरमें क्यों करो वासो जी च०॥१०८॥

‘पुरुषान्तकड़’ रो नाम लेई ने,
सेजान्तर धर्म बतावो जी ।

धर्म रे काजे हिंसा हुई यहाँ,
तेने मिथ्यात क्यों न बतावो जी॥च०॥१०९॥

(कहे) “दर्शन धर्म अरु हिंसा पाप में,
दोनों मानौ न्यारा जी ।”

(उत्तर) तो साधु भी वत्सलता धर्म में,
हिंसा पाप मे वारा जी ॥चतुर०॥११०॥

उगाड़े मुख बोली (औंने) आहार आमत्रे,
(बलि) मुख खुले बोल बेरावे जी ।

जीव असख्य हरया तुम काजे,
(इणमें) धर्म पाप सूँ थावे जी॥च०॥१११॥

अमुकम्पा-बिचार

(कहे) “बाल बेवा रो तो धर्म है मोटो,

असलगत रो पाप में मानों जी ।”

(कहे) तो बसलता रो तो धर्म है मोटो,

आरंभ पाप बलाओं जी ॥ अ० ॥ ११२ ॥

एवा अनेक निज कामों में,

पाप ने धर्म बसावे जी ।

अमुकम्पा अपकारे (ओ कहे) आरंभ,

तो अमुकम्पा पाप में गल्ले जी ॥ अ० ॥ ११३ ॥

एकेन्द्रिय मरे पंचेन्द्री एवा,

(दिण में) पकल्ल-पाप सिखावे जी ।

एकेन्द्री भाये ने खाधों (पंचेन्द्रिय) न बेचे,

दिण ने तो धर्म बसावे जी ॥ अ० ॥ ११४ ॥

अ-अपा इछा को साये जावे,

(दिण में) रस्ता टी संवा बसावे जी ।

त्याग कराय साथ ले जाव,

धर्म रो सोम रिखावे जी ॥ अ० ॥ ११५ ॥

निज स्वारथिया आहार रा अर्थी,
भोलों ने भरमावे जी ।

गाड़ी-घोड़ा लश्कर रे साथे,
उमाया-उमाया जावे जी ॥चतु०॥११६॥

स्वारथे हिंसा याद न आवे,
पर-उपकार में (भटपट) गावे जी ।

अठारे पाप रो नाम लेई ने,
मूरख ने भरमावे जी ॥चतुर०॥११७॥

(कहे) “आरंभ लागा उपकार हुवे तो,
भूठ चोरी थी पिण होसो जी ।”

(उत्तर) (इम) अठारेही पापों रो नाम बतावे,
ते पर-उपकार रा रोषी जी ॥च०॥११८॥

चोरी करी थारा दर्शन खातिर,
(कोई) कुड़ी-साख भरी धन लावे जी ।

तिन धन थी थारा दर्शन कीधा,
(करी) लारी भावना भावे जी ॥च०॥११९॥

अमुक्यभिचार

आरम्भ कर आयो दर्शन कोअ

विष्णु न धर्म बतावो जी ।

ता जोरी-जारी रा धम भी बंधो,

विष्णु में विष्णु धर्म दिखावो जी ॥ १०० ॥

(कहे) 'जारी जारी, खोरी गवाही,

दर्शनआदि न सेवे जी ।

आरम्भ बिना ता आइ न सके

(लिखी), आरम्भ कर दरा सब जी ॥ १०१ ॥

(बल्लभ) (तां) उपकार में तुम्हें इमहिअ जगु

उपकारी जोरी न मचे जी ।

कुहीमाग्य उपमिषार पाप न

उपकारी तज दस जी ॥ चतुर० ॥ १ ॥

इमहिअ अतिरक्षा न जाणा,

जारी आदि नहि मचे जी ।

अम्भारम्भ बिना (महा) रक्षा न हा ता

आरम्भ न आरम्भ केव जी ॥ १०२ ॥

आरम्भ उपकार जुआ-जुआ छे,

इमहिज रक्षा जाणो जी ।

उपकार रक्षा धर्म रो अंग,

आरम्भ अलग पिछाणो जी ॥१२४॥

जिन-भारग री नीव है रक्षा,

खोजी हुवे ते पावे जी ।

जीव वचाया धर्म है निर्मल,

दधि मथिया घी आवे जी ॥च०॥१२५॥

जीवरक्षा में पाप बतावे,

ते जल में लाय लगावे जी ।

अमृत थी मरणो कोई केवे,

ते मिथ्यावादी कहावे जी ॥च०॥१२६॥

जीवरक्षा श्री जिनजी री वाणी,

दशमें अंग बखाणी जी ।

जो करसी भवसागर तिरसी,

सनवद्धित सुगदानी जी ॥चतु०॥१२७॥

छाखीसे ज़पाखी संमत में,
 सुवि भावव एकादशमी की ।
 डाल कोकी रक्षा दीपावली,
 धिमिर भित्तवख ररमी जी ॥च०॥१२८॥
 मास्तचन्द कोठारी रे कमरे,
 बूरु कियो बोमासो की ।
 कोठर-पों सुख नखा धारी
 पामी झाल-बकसो की ॥चतुर०॥१२९॥

इति बबमी डाक सन्तकम्



❧ शान्ति

❧ शान्ति

❧ शान्ति

